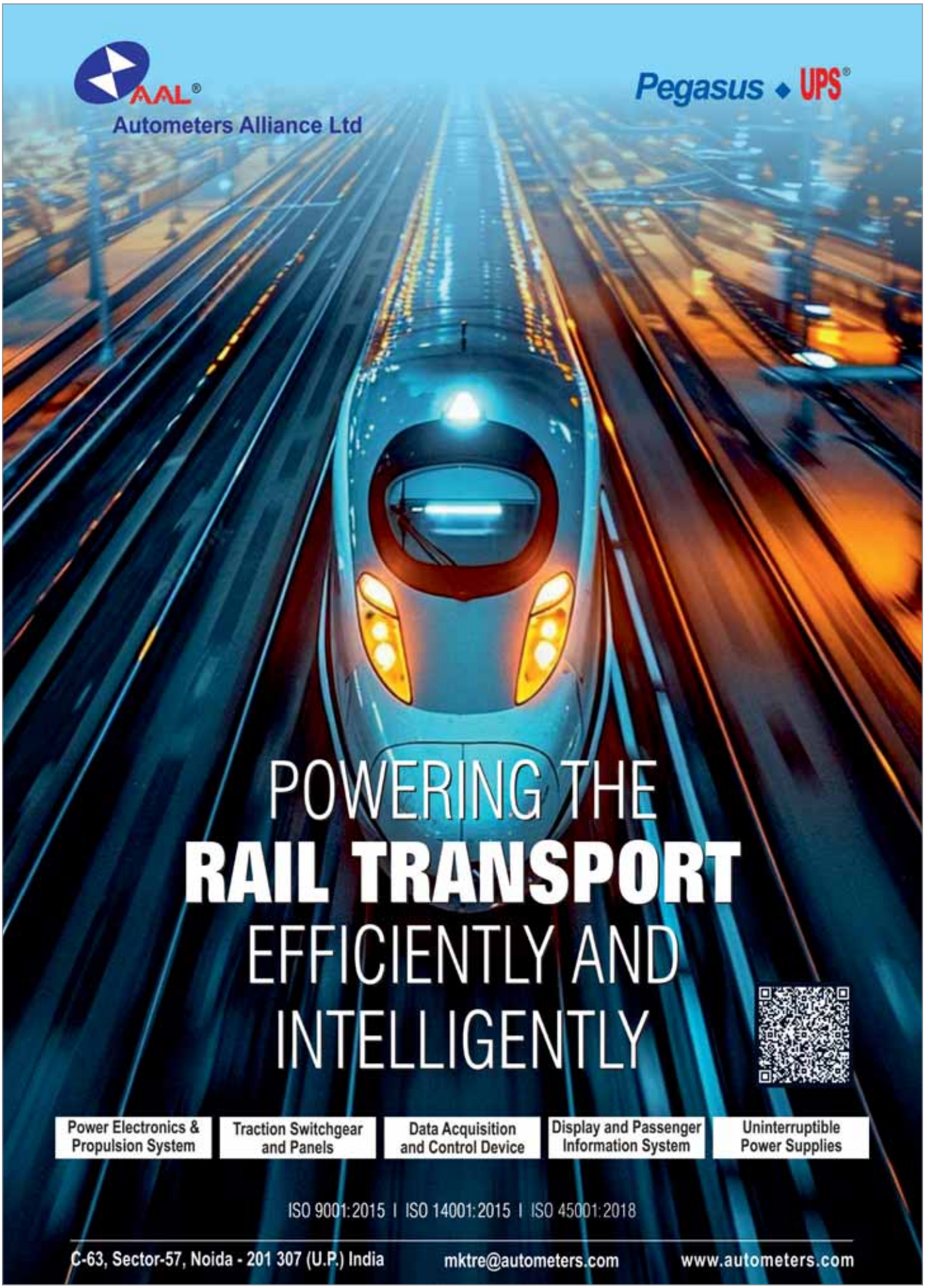
भारतीय रेल

जनवरी 2025

मूल्य ₹ 20




AAL®
Autometers Alliance Ltd
Pegasus ◆ UPS®
POWERING THE
RAIL TRANSPORT
EFFICIENTLY AND
INTELLIGENTLY
Power Electronics & Propulsion System
Traction Switchgear and Panels
Data Acquisition and Control Device
Display and Passenger Information System
Uninterruptible Power Supplies
ISO 9001:2015 I ISO 14001:2015 I ISO 45001:2018
C-63, Sector-57, Noida - 201 307 (U.P.) India
mktre@autometers.com
www.autometers.com

भारतीय रेल

रेल मंत्रालय की एकमात्र हिंदी मासिक पत्रिका

आरंभ: अगस्त-1960 | वर्ष: 65 | अंक: 06 | राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित पत्रिका | जनवरी-2025 | मूल्य: ₹20

संपादक मंडल

सतीश कुमार
अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, रेलवे बोर्ड

रूपा श्रीनिवासन
सदस्य (वित्त), रेलवे बोर्ड

अरुणा नायर
सचिव, रेलवे बोर्ड

दिलीप कुमार
कार्यकारी निदेशक, सूचना एवं प्रचार

शिवाजी मारुती सुतार
निदेशक, सूचना एवं प्रचार

संपादक
योगेश अवस्थी

संपादकीय कार्यालय
संपादक, भारतीय रेल,
कमरा नं. 411, रेल भवन,
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001
editorbhartiyarailrb@gmail.com
editorbhartiyarail@gmail.com

विज्ञापन व सदस्यता हेतु संपर्क
ललित कुमार धनकड़
व्यापार प्रबंधक
कमरा नं. 310, रेल भवन
रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001
टेलीफोन: 011-47845378, 47845089
bmpr310rb@gmail.com

आवरण
महाकुंभ 2025

फॉलो करें
Twitter :
@bhartiyarailrb

वार्षिक सदस्यता शुल्क
(ऑफलाइन)
सर्वसाधारण -₹250
रेलकर्मियों के लिए -₹200
विदेश में
सी-मेल द्वारा -₹1,250
एयर-मेल द्वारा -₹2,500
एक प्रति-₹20 वार्षिक विशेषांक-₹70

इस पत्रिका में छपी हर सामग्री का सम्बन्ध, जब तक विशेषत: स्पष्ट न लिखा जाए, किसी सरकारी सूत्र से न समझा जाए।

© भारतीय रेल

5 माननीय राष्ट्रपति ने ओडिशा में 3 नई रेल लाइनों की आधारशिला रखी

पृष्ठ सं.-6
महाकुंभ 2025
महाकुंभ में आनेवाले तीर्थयात्रियों के स्वागत के लिए तैयार भारतीय रेल



15 प्रधानमंत्री ने राजस्थान को दी चार महत्त्वपूर्ण रेल परियोजनाओं की सौगात

16 पंजाब के राज्यपाल ने किया रेल डिब्बा कारखाना, कपूरथला का दौरा

17 नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर रेल मंत्री ने किया आईटीएमएस और आरसीआरआईवी का अवलोकन

18 रेल मंत्री ने किया कटक रेलवे स्टेशन के दूसरे प्रवेश द्वार का उद्घाटन

19 रेल राज्य मंत्री द्वारा कर्नाटक में रेल के विकास सम्बन्धी नई रेल सेवाओं का शुभारंभ और स्टेशनों का निरीक्षण

20 रेल राज्य मंत्री द्वारा बढ़नी रेलवे स्टेशन पर नवनिर्मित कोचिंग डिपो का लोकार्पण

20 केंद्रीय राज्य मंत्री ने मोहम्मदगंज रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया

20 जीआरपी प्रमुखों की 5वीं अखिल भारतीय कॉन्फ्रेंस संपन्न

21 संसद में भारतीय रेल

27 भारतीय रेल 2024 की उपलब्धियाँ

50 क्षेत्रीय रेलों एवं उत्पादन इकाइयों के समाचार

54 खेलों में भारतीय रेल

55 प्रगति रिपोर्ट

56 सुरक्षित पटरियां और स्मार्ट ट्रेनें : भविष्य में और भी सुरक्षित यात्राएं
अनिल कुमार खंडेलवाल

पृष्ठ सं.-41
69वें अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार समारोह का भव्य आयोजन



संजय सिंह

58 भारतीय रेल के बेमिसाल 10 साल

संपादकीय



नव वर्ष 2025 की आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ

पिछले कई वर्षों की तरह वर्ष 2024 भी भारतीय रेल के लिए एक मील का पत्थर साबित हुआ। इस वर्ष भारतीय रेल ने न केवल यात्रियों को सुगम और सुरक्षित यात्रा का अनुभव प्रदान किया, बल्कि तकनीकी और संरचनात्मक विकास में भी उल्लेखनीय प्रगति की। पीक सीजन के दौरान 21,513 ट्रेनों के संचालन, 136 वंदे भारत ट्रेनों की शुरुआत, और एक हजार से अधिक अतिरिक्त सामान्य कोच जोड़ने से यात्रियों की यात्रा और भी सुगम हुई। रेलवे की सुरक्षा प्रणाली को और मजबूत बनाने के लिए कवच-4.0 का सफल परीक्षण किया गया, जिसके बाद इसे लोकोमोटिव्स में स्थापित करने का कार्य तेजी से प्रारंभ हुआ। साथ ही, अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत 1,337 स्टेशनों में से 1,198 पर काम शुरू हुआ।

वर्ष 2024 में भारतीय रेल द्वारा ट्रैक नवीनीकरण के तहत 6,450 कि.मी. ट्रैक और 8,550 टर्नआउट का नवीनीकरण किया गया। 2,000 कि.मी. खंड पर गति सीमा को बढ़ाकर 130 कि.मी. प्रति घंटा किया गया। 3,210 रूट कि.मी. के विद्युतीकरण के साथ ब्रॉड गेज नेटवर्क का 97% हिस्सा अब विद्युतीकृत हो चुका है। नवीकरणीय ऊर्जा की क्षमता 2,014 मेगावाट तक पहुँचकर रेलवे को पर्यावरण-अनुकूल बनाने में बड़ी भूमिका निभा रही है। इस वर्ष माल ढुलाई में 1,473 मिलियन टन की रिकॉर्ड उपलब्धि हासिल की गई, जो पिछले वर्ष की तुलना में 3.86% अधिक है।

पूर्वी और पश्चिमी डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर के माध्यम से 72,000 से अधिक मालगाड़ियाँ संचालित हुईं, जिससे लॉजिस्टिक्स को और अधिक कुशल बनाया गया। ये उपलब्धियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि भारतीय रेल का सर्वांगीण विकास हो रहा है।

भारतीय रेल की कई महत्त्वपूर्ण परियोजनाएँ वर्ष 2024 के अंत तक अपने अंतिम चरण में पहुँच चुकी हैं। वर्ष 2025 की शुरुआत में चिनाब ब्रिज और अंजी ब्रिज पर ट्रेनों का संचालन शुरू होगा, जिससे कश्मीर से कन्याकुमारी तक रेल संपर्क संभव होगा। इसके अलावा, नवनिर्मित पंबन ब्रिज पर भी रेल संचालन प्रारंभ होने से क्षेत्रीय कनेक्टिविटी में सुधार होगा। इस वर्ष वंदे भारत एक्सप्रेस का स्लीपर वर्जन, अमृत भारत एक्सप्रेस और नमो भारत रैपिड रेल यात्रियों को एक नई यात्रा का अनुभव प्रदान करेंगी। पुनर्विकसित रेलवे स्टेशनों का उद्घाटन इस वर्ष भारतीय रेल की प्राथमिकताओं में शामिल है।

जनवरी-फरवरी 2025 में प्रयागराज में आयोजित होने वाले महाकुंभ के दौरान भारतीय रेल ने तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिए व्यापक प्रबंध किए हैं। पिछले दो वर्षों में ₹5,000 करोड़ से अधिक की लागत से यात्री सुविधाओं में सुधार किया गया है। महाकुंभ के दौरान 13,000 से अधिक ट्रेनों का संचालन करने की योजना है।

दिनांक 21 दिसंबर 2024 को नई दिल्ली में आयोजित 69वें अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार-2024 में 101 रेल कर्मियों को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। इस अवसर पर रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने रेल कर्मचारियों की कड़ी मेहनत और प्रतिबद्धता की सराहना करते हुए कहा, 'राष्ट्र प्रथम, सदैव प्रथम' की भावना से कार्य करना ही भारतीय रेल की सच्ची पहचान है।

भविष्य को ध्यान में रखते हुए भारतीय रेल ने चार मुख्य बिंदुओं-सेफ्टी, रखरखाव, गुणवत्ता, और प्रशिक्षण-पर तीन गुना बेहतर प्रदर्शन का लक्ष्य तय किया है। ये पहल भारतीय रेल की कार्यकुशलता और यात्री सुविधाओं को अंतरराष्ट्रीय मानकों तक ले जाने में सहायक सिद्ध होंगी।

हम आशा करते हैं कि यह नववर्ष आप सभी के जीवन में नई ऊँचाइयों को छूने का वर्ष साबित होगा।

आपको हमारा यह अंक कैसा लगा, हमें अवश्य बताएं।

माननीय राष्ट्रपति ने ओडिशा में 3 नई रेल लाइनों की आधारशिला रखी



ओडिशा के बांगिरिपोसि से ओडिशा की तीन नई लाइनों की आधारशिला रखती हुईं माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु, साथ में हैं ओडिशा के मुख्यमंत्री श्री मोहन चरण माझी, रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव व जनजातीय मामलों के मंत्री श्री जुएल ओराम एवं अन्य गणमान्य अतिथि

माननीय राष्ट्रपति, श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने दिनांक 7 दिसम्बर, 2024 को ओडिशा के बांगिरिपोसि से दक्षिण पूर्व रेलवे के बादामपहाड़-केंदुझरगढ़, बांगिरिपोसि-गोरुमाहिषानी और बुढ़ामरा-चाकुलिया के बीच तीन नई लाइनों की आधारशिला रखी। इस अवसर पर ओडिशा के मुख्यमंत्री श्री मोहन चरण माझी, रेल मंत्री, श्री अश्विनी वैष्णव, केंद्रीय जनजातीय मामलों के मंत्री, श्री जुएल ओराम और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।



बादामपहाड़-केंदुझरगढ़ नई लाइन :

82 कि.मी. की यह नई लाइन परियोजना ओडिशा के मयूरभंज और क्योंझर जिलों को कवर करेगी। इस लाइन का निर्माण ₹2,106 करोड़ की लागत से किया जाएगा।

बांगिरिपोसि-गोरुमाहिषानी नई लाइन :

86 कि.मी. की यह नई लाइन परियोजना ओडिशा के मयूरभंज जिले को कवर करेगी। इस लाइन का निर्माण ₹2,549 करोड़ की लागत से किया जाएगा।

बुढ़ामरा-चाकुलिया नई लाइन :

60 कि.मी. की यह नई लाइन परियोजना ओडिशा के मयूरभंज जिले एवं झारखंड के पूर्व सिंहभूम जिले को कवर करेगी। इस लाइन का निर्माण ₹1,639 करोड़ की लागत से किया जाएगा।

रेल सुविधा से वंचित स्थानीय निवासियों को अब काफी फायदा होगा। नई लाइनें व्यापार के अवसरों को बढ़ाएंगी और इससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा। ओडिशा के खनिज समृद्ध क्षेत्रों पर तीन लाइनों के निर्माण से माल ढुलाई की गुंजाइश बनेगी और इससे आसपास के औद्योगिक क्षेत्र को बढ़ावा मिलेगा। फलस्वरूप स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के नये अवसर पैदा होंगे।

इसके अलावा, परिवहन के नए तरीके से क्षेत्र में चिकित्सा और शैक्षिक अवसर बढ़ेंगे। नई लाइनें ओडिशा के मयूरभंज और क्योंझर जिलों के पिछड़े इलाकों एवं झारखंड के पूर्व सिंहभूम जिले में सामाजिक और आर्थिक विकास को गति प्रदान करेंगी।■



इस अवसर पर माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु का अभिवादन कर उन्हें पेंटिग भेंट करते हुए रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव

महाकुंभ 2025



महाकुंभ में आनेवाले तीर्थयात्रियों के स्वागत के लिए तैयार भारतीय रेल

कुंभ मेला के लिए उपलब्ध यात्री सुविधाएं

- **79 परियोजनाएँ :** निर्माण/विस्तार/सुधार के लिए यात्री सुविधा परियोजनाएँ।
- **ट्रेन सेवाएं :** कुंभ मेले के दौरान लगभग 13,400 ट्रेनें, जिनमें लगभग 10,100 नियमित ट्रेनें और 3,134 विशेष ट्रेनें शामिल हैं।
- **टिकटिंग विस्तार :** 544 टिकटिंग पॉइंट्स, प्रयागराज जंक्शन पर 132 काउंटर, प्रतिदिन 9,76,000 टिकट जारी करने में सक्षम।
- **अतिरिक्त शेल्टर्स :** प्रयागराज जंक्शन पर 4000 यात्रियों के लिए अतिरिक्त शेल्टर, प्रयागराज छिवकी, सुबेदारगंज, प्रयाग जंक्शन, फाफामऊ और प्रयागराज रामबाग रेलवे स्टेशन में स्थायी शेल्टर।
- **बुनियादी सुविधाएं :** सभी शेल्टर्स पर सार्वजनिक शौचालय, खानपान स्टॉल, घोषणा और पूछताछ डिस्प्ले।
- 'क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूँ' बूथ : सामान की ट्रॉली, व्हीलचेयर सेवाएं, टैक्सी और होटल बुकिंग में सहायता।
- **बहुभाषी घोषणाएं :** हिंदी, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी, तमिल, कन्नड़, तेलुगु, मलयालम, बंगाली और उड़िया में जानकारी।
- **हेल्पलाइन और ऐप :** तीर्थयात्रियों की सहायता के लिए टोल-फ्री नंबर 1800-4199-139 और कुंभ रेल सेवा 2025 ऐप।
- **भीड़ प्रबंधन :** विस्तृत यातायात योजना, समन्वय बैठकें, एक-दिशात्मक आंदोलन योजनाएं।
- **आपदा तैयारियां :** प्रयागराज जंक्शन पर 10 बिस्तरों वाला अवलोकन वार्ड, प्राथमिक चिकित्सा बूथ, त्वरित कार्रवाई टीमें, एआई आधारित चेहरे की पहचान के साथ 1,186 अतिरिक्त सीसीटीवी कैमरे।



प्रधानमंत्री द्वारा भारतीय रेल की विभिन्न परियोजनाएं राष्ट्र को समर्पित



उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में विभिन्न रेल परियोजनाओं को राष्ट्र को समर्पित करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी। साथ में हैं उत्तर प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल एवं उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ

दिनांक 13 दिसम्बर, 2024 को प्रयागराज में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ₹5,500 करोड़ की 167 परियोजनाओं का राष्ट्र को समर्पण किया। इसी क्रम में उन्होंने भारतीय रेल की ₹1600 करोड़ से अधिक की विभिन्न रेल परियोजनाएँ राष्ट्र को समर्पित कीं।

इसके तहत झूंसी–प्रयागराज लाइन के दोहरीकरण और विद्युतीकरण के साथ गंगा नदी पर बना रेल पुल राष्ट्र को समर्पित किया गया, जिसकी लागत ₹850 करोड़ है। इस परियोजना से महाकुंभ के दौरान भक्तों की यात्रा को सुगम बनाने में सहायता होगी। इसके साथ प्रयागराज जंक्शन की इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग भी की गई। इससे ट्रेनों की आवाजाही और सुरक्षा दोनों बढ़ेगी। महानगरों तक क्षेत्र की कनेक्टिविटी और बढ़ जाएगी।

इसी क्रम में सुगम आवागमन के लिए प्रयागराज के आसपास के इलाकों को भी विकास से जोड़ा गया है। करीब ₹415 करोड़ की लागत से जिले के विभिन्न स्थानों पर 7 रोड ओवर ब्रिज और 3 रोड अंडर ब्रिज राष्ट्र को समर्पित किए गए हैं। इससे लेवल क्रॉसिंग तो खत्म हुआ साथ ही सड़क और रेल दोनों का सफर और अधिक सुरक्षित हो गया है। कुंभ के दौरान करोड़ों भक्त बिना किसी रुकावट और परेशानी के आ जा सकेंगे।

इसके अलावा करीब ₹226 करोड़ की लागत से प्रयागराज जंक्शन, नैनी, झूंसी, सुबेदारगंज, प्रयागराज छिवकी, प्रयागराज रामबाग जैसे स्टेशनों पर यात्रियों के लिए बनाई गई सुविधाओं को भी राष्ट्र को समर्पित किया गया। ज्ञात हो कि, इन स्टेशनों पर यात्रियों के लिए वेटिंग रूम और सुरक्षा को पुख्ता करने के लिए सीसीटीवी कैमरे और लाइटिंग, पानी और शौचालय आदि की व्यवस्था की गई है। इसके साथ ही प्रयागराज क्षेत्र में भी यात्रियों की सहूलियत के लिए सुविधाओं का विस्तार किया गया है।

इसी क्रम में प्रधानमंत्री द्वारा फाफामऊ, प्रयाग, नैनी, सूबेदारगंज, झूंसी और प्रयागराज छिवकी रेलवे स्टेशन के पुनर्विकसित दूसरे प्रवेश द्वार को भी राष्ट्र को समर्पित किया गया है। इनसे यात्रियों का रेलवे स्टेशन और प्लेटफॉर्म तक पहुँचना और आसान हो सकेगा।





इस अवसर पर संगम पर पूजा अर्चना करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

इस कार्यक्रम में उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने संगम की पावन भूमि प्रयागराज को नमन किया और महाकुंभ में भाग लेने वाले संतों और साध्वियों के प्रति सम्मान व्यक्त किया। श्री मोदी ने कर्मचारियों, श्रमिकों और सफाई कर्मचारियों के प्रति आभार व्यक्त किया जिनकी कड़ी मेहनत और समर्पण के बगैर महाकुंभ का सफल होना असंभव है। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह दुनिया के सबसे बड़े समागमों में से एक है जहाँ 45 दिनों तक चलने वाले महायज्ञ के लिए प्रतिदिन लाखों श्रद्धालुओं का स्वागत किया जाता है और इस अवसर के लिए एक नया शहर बसाया जाता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि प्रयागराज की धरती पर एक नया इतिहास लिखा जा रहा है। प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि महाकुंभ-2025 देश की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पहचान को नए शिखर पर ले जाएगा। उन्होंने कहा कि एकता के ऐसे महायज्ञ की चर्चा पूरी दुनिया में होगी। उन्होंने महाकुंभ के सफल आयोजन के लिए लोगों को शुभकामनाएं दीं।

भारत को पवित्र स्थलों और तीर्थों की भूमि बताते हुए श्री मोदी ने कहा कि यह गंगा, यमुना, सरस्वती, कावेरी, नर्मदा और कई अन्य असंख्य नदियों की भूमि है। प्रयाग को इन नदियों के संगम, संग्रह, समागम, संयोजन, प्रभाव और शक्ति के रूप में वर्णित करते हुए, कई तीर्थ स्थलों के महत्त्व और उनकी महानता के बारे में बताते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि प्रयाग सिर्फ तीन नदियों का संगम नहीं है, बल्कि उससे भी कहीं अधिक है। उन्होंने कहा कि प्रयाग के बारे में कहा जाता है कि यह एक पवित्र समय होता है जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है, तब सभी दिव्य शक्तियां, अमृत, ऋषि और संत प्रयाग में उतरते हैं। उन्होंने कहा कि प्रयाग एक ऐसा स्थान है जिसके बिना पुराण अधूरे रह जाएंगे। उन्होंने आगे कहा कि प्रयाग एक ऐसा स्थान है जिसकी स्तुति वेदों की ऋचाओं में की गई है।

श्री मोदी ने कहा कि प्रयाग एक ऐसी जगह है, जहाँ हर कदम पर पवित्र स्थान और पुण्य क्षेत्र हैं। प्रयागराज के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए प्रधानमंत्री ने एक संस्कृत श्लोक पढ़ा और इसे समझाते हुए कहा कि त्रिवेणी का प्रभाव, वेणीमाधव की महिमा, सोमेश्वर का आशीर्वाद, ऋषि भारद्वाज की तपस्थली, भगवान नागराज वसु जी की विशेष भूमि, अक्षयवट की अमरता और ईश्वर की कृपा यही हमारे तीर्थराज प्रयाग को बनाती है। उन्होंने आगे बताया कि प्रयागराज एक ऐसी जगह है, जहाँ 'धर्म', 'अर्थ', 'काम' और 'मोक्ष' चारों तत्व उपलब्ध हैं। प्रयागराज आने के लिए नागरिकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि प्रयागराज सिर्फ एक भूमि का टुकड़ा नहीं है, यह आध्यात्मिकता का अनुभव करने की जगह है। उन्होंने पिछले कुंभ के दौरान संगम में पवित्र डुबकी लगाए जाने को याद किया और आज यह अवसर मिलने का भी उल्लेख किया। आज हनुमान मंदिर और अक्षयवट में दर्शन और पूजा के बारे में बात करते हुए प्रधानमंत्री ने श्रद्धालुओं की आसान पहुँच के लिए हनुमान कॉरिडोर और अक्षयवट कॉरिडोर के विकास के बारे में

जानकारी दी और सरस्वती कूप के पुनर्विकास परियोजना के बारे में भी जानकारी ली। श्री मोदी ने हजारों करोड़ रुपए की विकास परियोजनाओं के लिए नागरिकों को बधाई भी दी।

श्री मोदी ने कहा कि महाकुंभ हमारी आस्था, आध्यात्म और संस्कृति के दिव्य पर्व की विरासत की जीवंत पहचान है। उन्होंने कहा कि हर बार महाकुंभ धर्म, ज्ञान, भक्ति और कला के दिव्य समागम का प्रतीक होता है। प्रधानमंत्री ने संस्कृत के श्लोक का पाठ करते हुए कहा कि संगम में डुबकी लगाना करोड़ों तीर्थ स्थलों की यात्रा के बराबर है। उन्होंने कहा कि पवित्र डुबकी लगाने वाला व्यक्ति अपने सभी पापों से मुक्त हो जाता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि आस्था का यह शाश्वत प्रवाह विभिन्न सम्राटों और राज्यों के शासनकाल, यहां तक कि अंग्रेजों के निरंकुश शासन के दौरान भी कभी नहीं रुका और इसके पीछे प्रमुख कारण यह है कि कुंभ किसी बाहरी ताकतों द्वारा संचालित नहीं होता है। उन्होंने कहा कि कुंभ मनुष्य की अंतरात्मा की चेतना का प्रतिनिधित्व करता है, वह चेतना जो भीतर से आती है और भारत के हर कोने से लोगों को संगम के तट पर खींचती है। गांवों, कस्बों, शहरों से लोग प्रयागराज की ओर निकलते हैं और सामूहिकता और जनसमूह की ऐसी शक्ति शायद ही कहीं और देखने को मिलती है। श्री मोदी ने कहा कि एक बार महाकुंभ में आने के बाद हर कोई एक हो जाता है, चाहे वह संत हो, मुनि हो, ज्ञानी हो या आम आदमी हो और जाति-पंथ का भेद भी खत्म हो जाता है। उन्होंने कहा कि करोड़ों लोग एक लक्ष्य और एक विचार से जुड़ते हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि इस बार महाकुंभ के दौरान विभिन्न राज्यों से अलग-अलग भाषा, जाति, विश्वास वाले करोड़ों लोग संगम पर एकत्र होकर एकजुटता का प्रदर्शन करेंगे। यही उनकी मान्यता है कि महाकुंभ एकता का महायज्ञ है, जहाँ हर तरह के भेदभाव का त्याग किया जाता है और यहां संगम में डुबकी लगाने वाला हर भारतीय एक भारत, श्रेष्ठ भारत की सुंदर तस्वीर पेश करता है।

श्री मोदी ने भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपरा में कुंभ के महत्त्व पर जोर दिया और बताया कि कैसे यह हमेशा से संतों के बीच महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय मुद्दों और चुनौतियों पर गहन विचार-विमर्श का मंच रहा है। उन्होंने कहा कि जब अतीत में आधुनिक संचार के माध्यम मौजूद नहीं थे, तब कुंभ महत्त्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तनों का आधार बन गया, जहाँ संत और विद्वान राष्ट्र के कल्याण पर चर्चा करने के लिए एकत्र हुए और वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों पर विचार-विमर्श किया, जिससे देश की विचार प्रक्रिया को नई दिशा और ऊर्जा मिली। प्रधानमंत्री ने कहा कि आज भी कुंभ एक ऐसे मंच के रूप में अपना महत्त्व बनाए हुए है, जहाँ इस तरह की चर्चाएं जारी रहती हैं, जो पूरे देश में सकारात्मक संदेश भेजती हैं और राष्ट्रीय कल्याण पर सामूहिक विचारों को प्रेरित करती हैं। भले ही ऐसे समारोहों के नाम, उपलब्धि और मार्ग अलग-अलग हों, लेकिन उद्देश्य और यात्रा एक ही है। उन्होंने उल्लेख किया कि कुंभ राष्ट्रीय विमर्श का प्रतीक और भविष्य की प्रगति का एक प्रकाश स्तंभ बना हुआ है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि केंद्र और राज्य दोनों स्तरों पर मौजूदा सरकार के तहत भारत की परंपराओं और आस्था के प्रति गहरा सम्मान है। उन्होंने कहा कि केंद्र और राज्य दोनों की सरकारें कुंभ में आने वाले तीर्थयात्रियों के लिए सुविधाएं प्रदान करना अपनी जिम्मेदारी मानती हैं। प्रधानमंत्री ने बताया कि विभिन्न परियोजनाओं के लिए हजारों करोड़ रुपए आवंटित किए गए हैं, केंद्र और राज्य दोनों सरकारें सुचारू तैयारी सुनिश्चित करने के लिए मिलकर काम कर रही हैं। उन्होंने अयोध्या, वाराणसी, रायबरेली और लखनऊ जैसे शहरों से प्रयागराज की कनेक्टिविटी में सुधार करने पर विशेष बल दिया ताकि तीर्थयात्रियों के लिए यात्रा आसान हो सके। प्रधानमंत्री ने भव्य आयोजन की तैयारी में कई सरकारी विभागों के सामूहिक प्रयासों की प्रशंसा की जो 'सरकार के समग्र' दृष्टिकोण को दर्शाता है।

प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि सरकार का लक्ष्य विकास के साथ-साथ भारत की विरासत को समृद्ध करना भी है। उन्होंने देश भर में विकसित किए जा रहे विभिन्न पर्यटन सर्किटों का उल्लेख किया और रामायण सर्किट, कृष्ण सर्किट, बौद्ध सर्किट और तीर्थंकर सर्किट का उदाहरण दिया। स्वदेश दर्शन और प्रसाद जैसी योजनाओं का जिक्र करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि सरकार तीर्थ स्थलों पर सुविधाओं का विस्तार कर रही है। उन्होंने भव्य राम मंदिर के निर्माण के साथ अयोध्या के परिवर्तन पर प्रकाश डाला जिसने पूरे शहर का उत्थान किया है। उन्होंने विश्वनाथ धाम और महाकाल महालोक जैसी परियोजनाओं का भी उल्लेख किया जिन्हें वैश्विक मान्यता मिली है। प्रधानमंत्री ने कहा कि अक्षय वट कॉरिडोर, हनुमान मंदिर कॉरिडोर और भारद्वाज ऋषि आश्रम कॉरिडोर इस दृष्टि को दर्शाते हैं जबकि सरस्वती कूप, पातालपुरी, नागवासुकी और द्वादश माधव मंदिर जैसे स्थलों को भी तीर्थयात्रियों के लिए पुनर्जीवित किया जा रहा है।

प्रधानमंत्री ने उल्लेख किया कि निषादराज की भूमि प्रयागराज ने भगवान राम को मर्यादा पुरुषोत्तम बनाने की यात्रा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने कहा कि भगवान राम और केवट का प्रसंग हमें प्रेरणा देता है। केवट ने भगवान राम के पैर धोए और उन्हें अपनी नाव से नदी पार करने में मदद की जो भक्ति और मित्रता का प्रतीक है। उन्होंने आगे कहा कि इस प्रसंग से यह संदेश मिलता है कि भगवान भी अपने भक्त से मदद मांग सकते हैं। श्री मोदी ने कहा कि श्रृंगवेरपुर धाम का विकास इस मित्रता का प्रमाण है और भगवान राम और निषादराज की मूर्तियां आने वाली पीढ़ियों को सद्भाव का संदेश देती रहेंगी।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भव्य कुंभ को सफल बनाने में स्वच्छता की महत्त्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि प्रयागराज में उचित स्वच्छता और अपशिष्ट प्रबंधन सुनिश्चित करने के लिए नमामि गंगे कार्यक्रम में तेजी लाई गई है और जागरूकता बढ़ाने के लिए गंगा दूत, गंगा प्रहरी और गंगा मित्र नियुक्त करने जैसी पहल शुरू की गई हैं। प्रधानमंत्री ने बताया कि इस बार कुंभ की स्वच्छता सुनिश्चित करने के लिए 15,000

से अधिक सफाई कर्मचारी तैनात किए जाएंगे। उन्होंने इन कर्मचारियों के प्रति पहले से ही आभार व्यक्त किया और करोड़ों श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक और स्वच्छ वातावरण प्रदान करने में उनके समर्पण को स्वीकार किया। प्रधानमंत्री ने भगवान कृष्ण का उदाहरण देते हुए कहा कि भगवान कृष्ण ने जूठी पत्तल उठाकर संदेश दिया कि हर काम महत्त्वपूर्ण है और कहा कि सफाई कर्मचारी अपने कार्यों से इस आयोजन की महानता को बढ़ाएंगे। उन्होंने 2019 के कुंभ के दौरान स्वच्छता के लिए मिली सराहना को याद किया और बताया कि कैसे उन्होंने सफाई कर्मचारियों के पैर धोकर अपना आभार व्यक्त किया, जो उनके लिए एक यादगार अनुभव है।

श्री मोदी ने इस बात पर बल दिया कि कुंभ मेले से आर्थिक गतिविधियों में उल्लेखनीय वृद्धि होती है जिस पर अक्सर ध्यान नहीं जाता। उन्होंने कहा कि कुंभ से पहले भी इस क्षेत्र में आर्थिक गतिविधियां तेजी से बढ़ रही थीं। प्रधानमंत्री ने कहा कि संगम के तट पर करीब डेढ़ महीने के लिए एक अस्थायी शहर बसाया जाएगा, जिसमें रोजाना लाखों लोग आएंगे। उन्होंने कहा कि इस दौरान प्रयागराज में व्यवस्था बनाए रखने के लिए बड़ी संख्या में लोगों की जरूरत होगी। श्री मोदी ने कहा कि 6,000 से अधिक नाविक, हजारों दुकानदार और धार्मिक अनुष्ठानों और पवित्र स्नान में सहायता करने वालों के काम में वृद्धि होगी, जिससे रोजगार के कई अवसर सृजित होंगे। उन्होंने कहा कि आपूर्ति श्रृंखला को बनाए रखने के लिए व्यापारियों को दूसरे शहरों से माल लाना होगा। प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि कुंभ का असर आसपास के जिलों में भी महसूस किया जाएगा। उन्होंने कहा कि दूसरे राज्यों से आने वाले तीर्थयात्री ट्रेन या हवाई सेवाओं का उपयोग करेंगे जिससे अर्थव्यवस्था को और बढ़ावा मिलेगा। श्री मोदी ने इस बात पर जोर दिया कि कुंभ न केवल समाज को मजबूत करेगा बल्कि लोगों के आर्थिक सशक्तिकरण में भी योगदान देगा।

श्री मोदी ने प्रौद्योगिकी में महत्त्वपूर्ण प्रगति का उल्लेख किया जो आगामी महाकुंभ 2025 को आकार देगी। उन्होंने बताया कि पिछले वर्षों की तुलना में, स्मार्टफोन उपयोगकर्ताओं में वृद्धि हुई है और 2013 की तुलना में डेटा बहुत सस्ता है। उन्होंने कहा कि उपयोगकर्ता के अनुकूल ऐप उपलब्ध होने के कारण, सीमित तकनीकी ज्ञान वाले लोग भी उनका आसानी से उपयोग कर सकते हैं। उन्होंने कुंभ के लिए पहली बार एआई और चैटबॉट तकनीक के उपयोग को चिह्नित करते हुए 'कुंभ सहायक' चैटबॉट के शुभारंभ का उल्लेख किया, जो ग्यारह भारतीय भाषाओं में संवाद करने में सक्षम है। उन्होंने अधिक से अधिक लोगों को जोड़ने के लिए डेटा और प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने और एकता के प्रतीक के रूप में कुंभ के सार को दर्शाने वाली फोटोग्राफी प्रतियोगिताएं आयोजित करने का सुझाव दिया। सोशल मीडिया पर व्यापक रूप से साझा की जाने वाली ये तस्वीरें, अनगिनत भावनाओं और रंगों को मिलाकर एक विशाल कैनवास तैयार करेंगी। इसके अतिरिक्त, उन्होंने आध्यात्मिकता और प्रकृति पर केंद्रित प्रतियोगिताओं के आयोजन का प्रस्ताव रखा, जो युवाओं के बीच कुंभ के आकर्षण को और बढ़ाएगी।

प्रधानमंत्री मोदी ने विश्वास व्यक्त किया कि महाकुंभ से निकलने वाली सामूहिक और आध्यात्मिक ऊर्जा विकसित भारत के प्रति राष्ट्र के संकल्प को और मजबूत करेगी। उन्होंने कुंभ स्नान को ऐतिहासिक और अविस्मरणीय बनाने की कामना की और गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों के पवित्र संगम के माध्यम से मानवता के कल्याण की प्रार्थना की। अपनी शुभकामनाएं देते हुए उन्होंने सभी तीर्थयात्रियों का प्रयागराज की पवित्र नगरी में स्वागत किया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने प्रयागराज की यात्रा की और संगम नोज व अक्षय वट वृक्ष पर पूजा-अर्चना की। उसके बाद हनुमान मंदिर और सरस्वती कूप में दर्शन-पूजन किया। प्रधानमंत्री ने महाकुंभ प्रदर्शनी स्थल का भी दौरा किया।

रेल मंत्री ने महाकुंभ की व्यवस्थाओं का किया अवलोकन

भारतीय रेल ने महाकुंभ की तैयारियों के लिए 2 वर्षों में 5000 करोड़ रुपये से अधिक खर्च किए : रेल मंत्री

महाकुंभ 2025 की तैयारी के लिए भारतीय रेल पिछले कई वर्षों से तैयारी में लगी है और सभी कार्य भारतीय रेल के शीर्षस्थ नेतृत्व के मार्गदर्शन में किए गए हैं। अनुमान है कि 2025 में प्रयागराज में होने वाले महाकुंभ मेले में लगभग 40 करोड़ तीर्थयात्री आएंगे, इसके लिए प्रयागराज क्षेत्र को सेवित करने वाली आधारभूत संरचना के विकास के लिए कई बड़े कार्य किए गए हैं। केंद्रीय रेल, सूचना एवं प्रसारण और इलेक्ट्रॉनिक्स, सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने व्यक्तिगत रूप से इन कार्यों की प्रगति की ना केवल मॉनिटरिंग की बल्कि दिनांक 8, दिसंबर, 2024 को प्रयागराज क्षेत्र में महाकुम्भ-2025 के लिए की जा रही तैयारियों का निरीक्षण भी किया। इस दौरान उन्होंने मीडिया प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए बताया कि, पिछले 2 वर्षों में इस क्षेत्र में ₹5,000 करोड़ से अधिक की परियोजनाएँ क्रियान्वित की गई हैं। इस दौरान उन्होंने रेलवे के प्रयासों से भी अवगत कराया।

ज्ञात हो कि महाकुंभ 2025 के दौरान अतिरिक्त भीड़ को समायोजित करने और यातायात के निर्बाध संचालन के लिए अवसंरचना में सुधार के क्रम में कई कार्य किए गए। इन कार्यों में वाराणसी-प्रयागराज रेलमार्ग का दोहरीकरण, जिसमें प्रयागराज में गंगा नदी पर एक बड़ा पुल भी शामिल है, इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग की स्थापना सहित प्रयागराज यार्ड की रीमॉडलिंग,



दिनांक 8 दिसम्बर, 2024 को महाकुंभ की तैयारियों का निरीक्षण करते हुए रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव, इस निरीक्षण के दौरान रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सतीश कुमार एवं उच्च अधिकारीगण उपस्थित थे

जंघई-फाफामऊ सेक्शन के दोहरीकरण जैसे बड़े कार्य समयबद्ध तरीके से पूरे किए गए हैं। इसके अतिरिक्त प्रयागराज जंक्शन के अग्रभाग के उन्नयन, अमृत स्टेशन योजना के तहत प्रयाग जंक्शन और फाफामऊ जंक्शन के विकास इसमें स्टेशन विकास के साथ नए 12 मीटर चौड़े फुट ओवर ब्रिज का निर्माण, ₹30 करोड़ की लागत से फाफामऊ, प्रयाग, नैनी, सूबेदारगंज, झूंसी, प्रयागराज छिवकी स्टेशनों पर द्वितीय प्रवेश द्वार का विकास कार्य, सुबेदारगंज यार्ड का पुनर्निर्माण, सुबेदारगंज स्टेशन पर दो अतिरिक्त प्लेटफॉर्मों का निर्माण, झूंसी में दो अतिरिक्त प्लेटफॉर्मों का निर्माण, प्रयागराज और सूबेदारगंज में नई वाशिंग लाइनों का निर्माण/मौजूदा वाशिंग लाइनों का उन्नयन, प्रयाग जंक्शन पर एक अतिरिक्त प्लेटफॉर्म का निर्माण, प्रयागराज सिविल लाइन्स की ओर की वाशिंग लाइनों की भारी मरम्मत आदि शामिल हैं। सभी कार्य लक्षित समय सीमा में पूरे कर लिए गए हैं।

ज्ञात हो कि, प्रयागराज में प्रयागराज जंक्शन, सुबेदारगंज, नैनी, प्रयागराज छिवकी, प्रयाग जंक्शन, फाफामऊ, प्रयागराज रामबाग, प्रयागराज संगम और झूंसी सहित कुल 9 रेलवे स्टेशन हैं, जो तीन क्षेत्रीय रेलवे उत्तर मध्य रेलवे, उत्तर रेलवे और पूर्वोत्तर रेलवे के अंतर्गत आते हैं।

तीनों क्षेत्रीय रेलें प्रयागराज में आयोजित होने वाले महाकुंभ-2025 मेले की तैयारियों के लिए कार्यरत हैं। भारतीय रेल ने ₹494.90 करोड़ की लागत से यात्री सुविधाओं में वृद्धि और ₹438.72 करोड़ की लागत से रोड ओवर ब्रिज और रोड अंडर ब्रिज का निर्माण कार्य भी संपादित किया है।

अध्यक्ष रेलवे बोर्ड एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा निरीक्षण

पिछले दो वर्षों के दौरान मंत्री के साथ ही रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सतीश कुमार एवं पूर्ववर्ती अध्यक्ष रेलवे बोर्ड श्रीमती, जया वर्मा सिन्हा सहित वरिष्ठ रेल अधिकारियों द्वारा समय-समय पर कार्यों की गति, गुणवता और प्रगति का दौरा कर जायजा लिया गया।

यात्री सुविधा विस्तार-श्रद्धालुओं को सुख अपार

कुंभ पर्व हेतु 79 यात्री सुविधा कार्य किए जा रहे हैं। इनमें से लगभग सभी कार्य पूरे किए जा चुके हैं। इन कार्यों में स्टेशन भवन/प्लेटफॉर्म कवर शेड का निर्माण विस्तार/सुधार, अतिरिक्त



नैनी रेलवे स्टेशन



प्रयागराज स्टेशन पर यात्री सुविधाएं

एफओबी का निर्माण/मरम्मत, वाशिंग लाइनों का निर्माण/उन्नयन, यात्री सूचना प्रणाली का विस्तार, सर्कुलेटिंग एरिया में सुधार, अमृत स्टेशनों का विकास, रेलवे परिसर में बाउंड्री का निर्माण, यात्री शेल्टर, सड़कों का सुधार, सीसीटीवी और सुरक्षा व्यवस्था, पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था, जलापूर्ति में वृद्धि, साइनेज और अन्य वाणिज्यिक वस्तुओं की खरीद, एग्जीक्यूटिव लाउंज का निर्माण, शौचालय सुविधाओं में वृद्धि आदि शामिल हैं।

प्रयागराज के सभी स्टेशनों पर होल्डिंग क्षमता भी बढ़ाई जा रही है। प्रयागराज जंक्शन पर पहले से उपलब्ध 4 यात्री आश्रयों के साथ ही 4,000 यात्रियों की क्षमता वाला एक अतिरिक्त यात्री आश्रय जोड़ा गया है। इसी तरह प्रयागराज छिवकी में 2 अस्थायी आश्रयों के स्थान पर 2 स्थायी आश्रय, सूबेदारगंज में 1 आश्रय, प्रयाग जंक्शन पर 3 स्थायी आश्रय, फाफामऊ में 2 और प्रयागराज रामबाग में 6 आश्रय बनाए गए हैं, जबकि पिछली बार मात्र दो आश्रय बनाए गए थे। सभी आश्रयों में सार्वजनिक शौचालय, खानपान स्टॉल, उदघोषणा और पूछताछ डिस्प्ले आदि जैसी बुनियादी सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं। लगेज ट्रॉली बुकिंग, व्हील चेयर सेवा, टैक्सी और होटल बुकिंग आदि जैसी आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायता के लिए स्टेशनों पर 'मे आई हेल्प यू' बूथ भी खोले जा रहे हैं।

जानकारी के प्रसार हेतु बहुभाषी सूचना प्रसारण

महाकुंभ के दौरान, बहुभाषी उद्घोषणा प्रणाली के माध्यम से भारत के कोने-कोने से आने वाले श्रद्धालुओं को स्टेशन और मेला क्षेत्र में विभिन्न भाषाओं में यात्रा संबंधी जानकारी/डेटा की घोषणा की जाएगी। यह प्रणाली हिंदी, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी, तमिल, कन्नड़, तेलुगु, मलयालम, बंगाली और उड़िया आदि भाषाओं में जानकारी प्रदान करेगी।



तीर्थयात्रियों की सहायता करने और उनके प्रश्नों के समाधान और उन्हें ऑनलाइन मदद करने के लिए महाकुंभ रेलवे हेल्पलाइन टोल फ्री नंबर 1800-4199-139 जारी किया गया है और कुम्भ रेल सेवा 2025 ऐप विकसित किया गया है। कॉल सेंटर को ऑपरेटरों द्वारा 24 घंटे प्रबंधित किया जाएगा और इसमें टोल फ्री नंबर और क्लाउड सेटअप शामिल होगा।



सुविधाजनक यात्रा के लिए अधिकतम रेल परिचालन सुनिश्चित करना

भारतीय रेल द्वारा कुंभ मेला अवधि के दौरान अधिक से अधिक रेलगाड़ियाँ चलाने की योजना बनाई गई है। रेलवे ने मेला अवधि के दौरान श्रद्धालुओं की सेवा में लगभग 13,400 ट्रेनें संचालित की जाएंगी, जिसमें 10,100 नियमित रेलगाड़ियों के अलावा लगभग 3134 विशेष ट्रेनों का संचालन किया जायेगा। अयोध्या और काशी जाने के इच्छुक तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिए दो दिशाओं में हर चौथे स्टेशन पर ठहराव के साथ फास्ट रिंग रेल मेमू सेवा चलाने की भी योजना बनाई गई है– प्रयागराज जंक्शन प्रयाग अयोध्या–वाराणसी–प्रयागराज जंक्शन और प्रयागराज जंक्शन–प्रयागराज रामबाग–वाराणसी अयोध्या प्रयागराज जंक्शन। इसके साथ ही तीर्थस्थल चित्रकूट जाने के इच्छुक तीर्थयात्रियों के लिए एक और रिंग रेल सेवा की योजना बनाई गई है, जो वीरांगना लक्ष्मीबाई झाँसी–बाँदा–चित्रकूट मानिकपुर–प्रयागराज–फतेहपुर–गोविंदपुरी–उरई–वीरांगना लक्ष्मीबाई झाँसी मार्ग को कवर करेगी और इसके विपरीत दिशा में अपनी सेवा उपलब्ध कराएगी।



भीड़ प्रबंधन और सुरक्षित परिवहन

भीड़ नियंत्रण एवं प्रबंधन के लिए राज्य सरकार द्वारा विस्तृत यातायात योजना तैयार की गई है, जिसमें भारतीय रेल द्वारा व्यापक इनपुट दिया गया है। भारतीय रेल की तीनों क्षेत्रीय रेलवे और स्थानीय नागरिक प्रशासन के बीच आवश्यक समन्वय सुनिश्चित करने के लिए, उत्तर मध्य रेलवे द्वारा नोडल (समन्वय) रेलवे के रूप में नियमित समन्वय बैठकें आयोजित की जाती हैं। महाकुंभ मेला अवधि के दौरान सभी हितधारकों के बीच निर्बाध संचार सुनिश्चित करने पर भी बहुत ध्यान दिया जा रहा है। मैन पावर के क्षेत्र में अतिरिक्त संसाधन भी जुटाए जा रहे हैं। कुंभ मेले की भीड़ को अधिक प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने में मदद करने के लिए भारतीय रेल के सभी हिस्सों से बड़ी संख्या में आरपीएफ और आरपीएसएफ कर्मियों को प्रयागराज लाया जा रहा है। प्रयागराज क्षेत्र के सभी स्टेशनों के लिए तीर्थयात्रियों की आवाजाही की योजना और रेलवे परिसर के भीतर होल्डिंग एरिया प्लान को अंतिम रूप दिया गया है। प्रत्येक स्टेशन से दिशावार आवाजाही की योजना बनाई गई है और यात्रियों के लिए जानकारी प्रसारित करने के लिए वांछित 360 डिग्री प्रचार रणनीति तैयार की गई है। यह सुनिश्चित किया गया है कि किसी भी स्टेशन पर क्रॉस मूवमेंट की संभावना न हो और यात्रियों का केवल यूनी डायरेक्शनल मूवमेंट सुनिश्चित किया जाएगा।



प्रयागराज जंक्शन पर स्थित कंट्रोल टॉवर

सहज टिकट उपलब्धता हेतु टिकटिंग व्यवस्था का विस्तार

सभी स्टेशनों के साथ-साथ मेला क्षेत्र में यूटीएस, एटीवीएम, एमयूटीएस, पूछताछ और पीआरएस सहित कुल 544 टिकटिंग प्वाइंट उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इनमें प्रयागराज जंक्शन पर ही 132 काउंटर खोले जाएंगे। ये सभी काउंटर प्रतिदिन लगभग 9,76,000 टिकट प्रदान कर सकते हैं, इस प्रकार प्रति टिकट दो यात्रियों के हिसाब से प्रतिदिन लगभग 19,52,000 यात्रियों को यात्रा टिकट उपलब्ध कराया जा सकता है।



उत्तर मध्य रेलवे के प्रयागराज मण्डल ने डिजिटल तकनीक के उपयोग से टिकटिंग प्रक्रिया को सरल और सुगम बनाने के लिए एक अभिनव पहल शुरू की है।

महाकुम्भ के दौरान, रेलवे के कर्मयोगी प्रयागराज जंक्शन पर विशेष ड्यूटी पर तैनात रहेंगे और हरे रंग की जैकेट पहनेंगे। इन जैकेट्स के पीछे एक क्यूआर कोड अंकित होगा, जिसे श्रद्धालु अपने मोबाइल से स्कैन कर सीधे यूटीएस (Unreserved Ticketing System) मोबाइल ऐप डाउनलोड कर सकते हैं। यह ऐप यात्रियों को बिना लाइन में खड़े अनारक्षित टिकट बुक करने की सुविधा प्रदान करेगा।

इस पहल से श्रद्धालु रेलवे स्टेशन पर भीड़ और लंबी लाइनों से बचते हुए सहजता से टिकट प्राप्त कर सकेंगे। डिजिटल भुगतान के माध्यम से टिकट बुकिंग की यह प्रक्रिया न केवल समय की बचत करेगी, बल्कि महाकुम्भ के दौरान आने वाले लाखों श्रद्धालुओं को परेशानी मुक्त अनुभव प्रदान करेगी।

आपदा और आकस्मिकता के लिए व्यवस्था विस्तार

विशेष चिकित्सा सेवाएं

महाकुम्भ 2025 के दौरान भारतीय रेल ने प्रयागराज के रेलवे स्टेशनों पर तीर्थयात्रियों की स्वास्थ्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए विशेष चिकित्सा सुविधाएं प्रदान की हैं। इन सुविधाओं में 24X7 ऑब्जर्वेशन रूमों की व्यवस्था की गई है, ताकि किसी भी आपातकालीन स्थिति में त्वरित और प्रभावी चिकित्सा सेवा प्रदान की जा सके। पिछले महाकुम्भ के दौरान 1 लाख श्रद्धालुओं को प्राथमिक चिकित्सा सहायता दी गई थी, और इस बार रेलवे एक बड़ी संख्या में यात्रियों को उच्च गुणवत्ता की चिकित्सा सेवा देने के लिए पूरी तरह से तैयार है। महाकुम्भ के दौरान यात्रियों की स्वास्थ्य सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए भारतीय रेल ने प्रयागराज जंक्शन,प्रयाग जंक्शन, सुबेदारगंज, नैनी जंक्शन एवं प्रयागराज छिवकी स्टेशन पर ऑब्जर्वेशन रूम स्थापित किए हैं। इन रूम्स में हमेशा डॉक्टर और अन्य मेडिकल स्टाफ मौजूद रहेंगे। यहां सभी आवश्यक चिकित्सा उपकरण मौजूद होंगे, जिससे यात्रियों को त्वरित उपचार प्रदान किया जा सके।

आधुनिक चिकित्सा उपकरण

ऑब्जर्वेशन रूम और अन्य चिकित्सा केंद्रों में निम्नलिखित चिकित्सा उपकरण उपलब्ध होंगे : ECG मशीन : हृदय सम्बन्धित समस्याओं की त्वरित पहचान के लिए। डिफिब्रिलेटर : दिल के रुकने पर उसे सामान्य करने के लिए। ऑक्सीजन कन्सेन्ट्रेटर : ऑक्सीजन की कमी से निपटने के लिए। ग्लूकोमीटर : रक्त शर्करा की माप करने के लिए, जो मधुमेह से प्रभावित लोगों के लिए जरूरी है।

प्रयागराज जंक्शन, सुबेदारगंज, नैनी एवं प्रयाग सहित प्रमुख स्टेशनों पर ऑब्जर्वेशन रूम्स स्थापित किए गए हैं, जहां निम्नलिखित स्टाफ तैनात रहेगा : स्टाफ नर्स : 15, फार्मासिस्ट: 12, हॉस्पिटल अटेंडेंट (एचए) : 12, हाउस कीपिंग असिस्टेंट (एचकेए) : 15। हर स्टेशन पर चिकित्सा स्टाफ की तैनाती सुनिश्चित की गई है।





राज्य सरकार के अग्निशमन विभाग द्वारा सभी 9 स्टेशनों का अग्निशमन (फायर) ऑडिट किया गया है। इसके अलावा, सभी स्थानों पर अग्निशमन की समुचित व्यवस्था की जा रही है। इसमें अग्निशमन यंत्र, फायर बॉल, वाटर हाइड्रेट, बाल्टी में पानी/रेत के साथ- साथ फायर टेंडर की तैयारी भी शामिल है। सुरक्षा तैयारियों को भी बढ़ाया जा रहा है। अतिरिक्त कर्मचारियों की तैनाती के अलावा, किसी भी संदिग्ध व्यक्ति/वस्तु का पता लगाने और स्टेशनों पर तलाशी अभियान के लिए आरपीएफ की डॉग स्क्वायड टीमों को तैनात किया गया है। यात्रियों की भीड़ पर नजर रखने और निगरानी रखने के लिए सीसीटीवी नियंत्रण कक्षों में लाइव फुटेज के साथ 1186 अतिरिक्त सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं। इनमें से करीब 116 कैमरों में शरारती तत्वों और असामाजिक तत्वों की पहचान करने के लिए एआई आधारित फेस रिकग्निशन सिस्टम है।

जल्द ही पूर्व की भाँति एक बार फिर अद्वितीय, अतुलनीय और भव्य महाकुंभ के रूप में धरती पर सबसे बड़े समागम का साक्षी बनने जा रहे प्रयागराज में एक बहुत मजबूत रेल नेटवर्क और रेलकर्मियों की एक अत्यंत प्रतिबद्ध और सक्षम टीम तीर्थयात्रियों की सेवा पूरे समर्पण भाव से करते हुए अपने सर्वश्रेष्ठ प्रयास से एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेगी।■



प्रयागराज जंक्शन पर स्थित सीसीटीवी कंट्रोल रूम

संकलन - डॉ. अमित मालवीय
वरिष्ठ जनसम्पर्क अधिकारी, उत्तर मध्य रेलवे

प्रधानमंत्री ने राजस्थान को दी चार महत्त्वपूर्ण रेल परियोजनाओं की सौगात

3 रेल लाइन के दोहरीकरण कार्यों का शिलान्यास एवं 1 विद्युतीकरण परियोजना का राष्ट्र को समर्पण किया



जयपुर में आयोजित एक कार्यक्रम में राजस्थान की चार महत्त्वपूर्ण रेल परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी। साथ में हैं राजस्थान के राज्यपाल श्री हरिभाऊ किसनराव बागड़े, राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिनांक 17 दिसम्बर, 2024 को जयपुर में आयोजित समारोह में राजस्थान में लगभग ₹6,500 करोड़ की लागत से 3 महत्त्वपूर्ण रेल परियोजनाओं के दोहरीकरण का शिलान्यास और एक रेलमार्ग के विद्युतीकरण परियोजना का राष्ट्र को समर्पण किया गया।

पर्यटन की असीम संभावना से युक्त, कृषि आधारित उद्योग धंधों और अनेक आर्थिक, सैन्य और खेल गतिविधियों से समृद्ध राजस्थान राज्य में विगत वर्षों में रेलवे अधिक बजट आवंटन के साथ आधारभूत ढाँचे को मजबूत बनाने की ओर अग्रसर है। तेज और सुगम रेल परिवहन के माध्यम से जोड़ने के लिए वित्त वर्ष 2023-24 में 3 महत्त्वपूर्ण रेलमार्गों जयपुर-सवाई माधोपुर (131.27 कि.मी.) ₹1,204 करोड़ की लागत से, अजमेर-चंदेरिया (चित्तौड़गढ) (178.20 कि.मी.) ₹1,634 करोड़ की लागत से और लूनी-समदड़ी-भीलड़ी (271.97 कि.मी.) ₹3,086 करोड़ की लागत से स्वीकृत की गई थी, जिनका शिलान्यास और भीलड़ी-समदड़ी-लूनी-जोधपुर-मेड़ता रोड़-डेगाना-रतनगढ़ (604 रूट कि.मी.) रेलमार्ग के विद्युतीकरण का राष्ट्र को समर्पण किया गया।

जयपुर-सवाई माधोपुर, अजमेर-चंदेरिया (चित्तौड़गढ़) और लूनी-समदड़ी-भीलड़ी रेलमार्ग अभी सिंगल रेल लाइन है, जिसकी वजह से इन व्यस्त रेलमार्गों पर ट्रेनों के परिचालन में परेशानी होती है। इन रेलखंडों के दोहरीकरण से ट्रेनों के परिचालन में सुगमता आएगी और ट्रेनों की गति भी बढ़ेगी। इसके साथ ही पर्यटन, धार्मिक, शैक्षणिक और औद्योगिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलने के साथ-साथ सामाजिक और व्यापारिक सम्बंधों को भी मजबूती प्राप्त होगी।

इसके साथ ही भीलवाड़ा के कपड़ा उद्योग और चित्तौड़गढ़ के आस-पास स्थापित सीमेंट इंडस्ट्रीज भी रेलवे की इन परियोजनाओं से लाभान्वित होंगी। जालौर और समीपवर्ती क्षेत्र जो कि आदिवासी बहुल्य है वहाँ भी विकास को नई गति मिलेगी और रोजगार के नए अवसरों का सृजन होगा।

भीलड़ी-समदड़ी-लूनी-जोधपुर-मेड़ता रोड़-डेगाना-रतनगढ़ (604 रूट कि.मी.) रेलमार्ग का ₹602 करोड़ की लागत से विद्युतीकरण कार्यों का राष्ट्र को समर्पण किया जाएगा। इन मार्गों का विद्युतीकरण होने से बिजली से चलने वाली ट्रेनों का सम्पर्क अन्य मार्गों से सीधा हो जाएगा जिससे समय की बचत होगी, राजस्व में भी कमी आएगी एवं प्रदुषण के स्तर में सुधार होगा।

प्रधानमंत्री द्वारा रेल परियोजनाओं के शिलान्यास और राष्ट्र को समर्पण से राजस्थान में विकास का नया अध्याय प्रारम्भ होगा और क्षेत्र में रोजगार और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा।■

पंजाब के राज्यपाल ने किया रेल डिब्बा कारखाना, कपूरथला का दौरा



पंजाब के राज्यपाल श्री गुलाब चंद कटारिया ने दिनांक 18 दिसम्बर, 2024 को रेल डिब्बा कारखाना, कपूरथला का दौरा किया, जहाँ उन्हें कोच निर्माण प्रक्रियाओं से अवगत कराया गया। उन्होंने कोच घटकों और विभिन्न प्रकार के कोचों के निर्माण की जाँच की, जिनका निर्माण अगले वित्तीय वर्ष में पर्याप्त उत्पादन के लिए लक्षित है। आरसीएफ के महाप्रबंधक श्री एस.एस. मिश्र ने राज्यपाल को विनिर्माण प्रक्रिया के बारे में बताते हुए वर्तमान उत्पादन आउटपुट और अगले वित्तीय वर्ष में नए प्रकार के कोचों के विनिर्माण से सम्बन्धित मुख्य मुद्दों पर विस्तार से बताया। श्री कटारिया ने भारतीय रेल को विश्व मानकों के अनुरूप बनाने में आरसीएफ के योगदान की सराहना की तथा आरसीएफ को डिजाइनिंग और विनिर्माण में अपनी सर्वोच्च स्थिति को बनाए रखने के लिए कड़ी मेहनत करने पर जोर दिया।

इस अवसर पर कपूरथला के डिप्टी कमिश्नर श्री अमित कुमार पंचाल और एस एस पी श्री गौरव तूरा भी मौजूद थे। श्री कटारिया के साथ उनकी पत्नी श्रीमती अनीता कटारिया भी थीं।■

भारतीय रेल ने डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर को उनके महापरिनिर्वाण दिवस पर श्रद्धांजलि अर्पित की



दिनांक 6 दिसम्बर, 2024 को भारतीय रेल के सभी कार्यालयों में डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर को उनके महापरिनिर्वाण दिवस पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इसी शृंखला में रेल भवन में आयोजित कार्यक्रम में रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव, रेल राज्य मंत्री श्री वी सोमन्ना, रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सतीश कुमार तथा वरिष्ठ अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

भारतीय रेल
पत्रिका

अब
सोविनियर शॉप
राष्ट्रीय रेल संग्रहालय
चाणक्यपुरी, नई दिल्ली में भी उपलब्ध है

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर रेल मंत्री ने किया आईटीएमएस और आरसीआरआईवी का अवलोकन

हाई-टेक रेल-कम-रोड निरीक्षण वाहन और अत्याधुनिक रेलवे ट्रैक हेल्थ मैनेजमेंट सिस्टम से भारत में सुरक्षित हो रही रेल यात्रा : रेल मंत्री

अगले पांच वर्षों में सभी क्षेत्रीय रेलवे में इस नई प्रणाली को लागू करने का लक्ष्य

रेल, सूचना एवं प्रसारण और इलेक्ट्रॉनिक्स, सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने दिनांक 5 दिसम्बर, 2024 को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर इंटीग्रेटेड ट्रैक मॉनिटरिंग सिस्टम (आईटीएमएस) और रोड सह रेल निरीक्षण वाहन (आरसीआरआईवी) का अवलोकन किया। यह अत्याधुनिक प्रणाली भारतीय रेल की ट्रैक सुरक्षा और संचालन की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

उन्होंने इस मौके पर पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए कहा, कि आरसीआरआईवी ने हमारे ट्रैकमैन, गैंगमैन, कीमैन और पीडब्ल्यूआई (स्थायी पथ निरीक्षक) के कार्य करने के तरीके में बड़े बदलाव किए हैं। इन बदलावों से न केवल सुरक्षा में सुधार होगा बल्कि उनके कामकाज और जीवन की गुणवत्ता भी बेहतर होगी। आने वाले पांच वर्षों में सभी क्षेत्रीय रेलवे में इस नई प्रणाली को लागू करने का लक्ष्य है। यह विशेष रूप से ट्रैक निरीक्षण और रखरखाव के आधुनिकीकरण में रेलवे विकास का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बनेगा।

यह तकनीकी प्रणाली न केवल ट्रैक की निगरानी और माप करने में मदद करेगी, बल्कि रेलवे संचालन को भी और अधिक सुरक्षित और प्रभावी बनाएगी। उन्होंने बताया कि यह प्रणाली प्रत्येक क्षेत्रीय रेलवे में उपलब्ध कराई जाएगी। रेलवे का लक्ष्य है कि हर चार महीने में होने वाले इस रखरखाव को अब हर दो महीने में किया जाए। यह नवीन टेक्नोलॉजी भारतीय रेल से हर रोज यात्रा करनेवाले लगभग 2.3 करोड़ यात्रियों की सुरक्षा में बढ़ोतरी करेगी।

आईटीएमएस और इसका कार्य

इंटीग्रेटेड ट्रैक मॉनिटरिंग सिस्टम (आईटीएमएस) एक उच्च-प्रदर्शन प्रणाली है, जो ट्रैक की निगरानी, माप और सुरक्षा के लिए नवीनतम





नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर आईटीएमएस और आरसीआरआईवी का अवलोकन करते हुए रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव, साथ में है अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सतीश कुमार एवं उच्च अधिकारीगण

तकनीकों का इस्तेमाल करती है। आईटीएमएस ट्रैक रिकॉर्डिंग कार (टीआरसी) पर स्थापित है, जो 20 से 200 कि.मी. प्रति घंटे की गति से ट्रैक का विश्लेषण कर सकता है। इसमें लेजर सेंसर, हाई-स्पीड कैमरे, जीपीएस और अन्य सेंसर शामिल होते हैं, जो ट्रैक की स्थिति और संभावित दोषों का पता लगाते हैं।

प्रमुख विशेषताएँ

त्वरण माप : (आईटीएमएस) प्रणाली में एक्सेलेरोमीटर का उपयोग किया जाता है, जो कोच और एक्सल बॉक्स पर त्वरण (acceleration) को मापता है। यह सिस्टम सवारी की गुणवत्ता की निगरानी करता है और ऐसे स्थानों की पहचान करता है जिन पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

उल्लंघन माप प्रणाली : यह प्रणाली LiDAR तकनीक का उपयोग करती है, जिससे किसी भी ट्रैक उल्लंघन (infringement) या बाधा का तुरंत पता लगाया जा सकता है। यह रेलवे ट्रैक के आसपास की सुरक्षा को और भी मजबूत बनाता है।

आरसीआरआईवी की विशेषताएँ

रोड सह रेल निरीक्षण वाहन (आरसीआरआईवी) टाटा योद्धा मॉडल से रूपांतरित करके बनाया गया है, जिसमें आगे 250 मि.मी. के दो लोहे के पहिए और पीछे 750 मि.मी. के दो लोहे के पहिए जुड़े हैं, जो कि इस ट्रेन को सड़क के साथ-साथ रेलवे ट्रैक पर चलने में सक्षम बनाते हैं। इसमें 3 कैमरे हैं जो 15 दिन के बैकअप के साथ ट्रैक का रेकॉर्डिंग करेंगे।■

रेल मंत्री ने किया कटक रेलवे स्टेशन के दूसरे प्रवेश द्वार का उद्घाटन

दिनांक 7 दिसम्बर, 2024 को रेल, सूचना एवं प्रसारण, और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने ओडिशा के कटक रेलवे स्टेशन के दूसरे प्रवेश द्वार का उद्घाटन किया। यह विकास अमृत स्टेशन योजना के तहत स्टेशन के पुनर्विकास में एक महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर है, जिसका उद्देश्य इसे एक आधुनिक परिवहन केंद्र में बदलना है।

नया प्रवेश द्वार, जो पूर्वी दिशा में स्थित है, नेशनल हाईवे की ओर से आने वाले यात्रियों के लिए आसान पहुँच प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह सुविधाजनक यात्रा सुनिश्चित करते हुए सुगमता, सुरक्षा और आराम को बढ़ाता है। ₹303 करोड़ की बड़ी परियोजना का हिस्सा यह पहल, यात्री अनुभव को बेहतर बनाने और क्षेत्रीय कनेक्टिविटी को बढ़ाने के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

अपने संबोधन में, श्री वैष्णव ने इस पुनर्विकास के सामाजिक-आर्थिक लाभों पर जोर दिया, जिसमें व्यापार, वाणिज्य और क्षेत्रीय संपर्क में वृद्धि शामिल है। उन्होंने कहा, 'यह बुनियादी ढाँचे के आधुनिकीकरण और यात्रियों के लिए विश्वस्तरीय सुविधाएं सुनिश्चित करने की दिशा में एक कदम है।'

दूसरे प्रवेश द्वार की मुख्य विशेषताएं :

- **आधुनिक संरचना :** 21,270 वर्ग फुट का वातानुकूलित क्षेत्र यात्रियों के आराम के लिए।
- **सुविधाएं :** 2,100 वर्ग फुट का फूड कोर्ट, टिकट काउंटर, प्रतीक्षालय, आधुनिक शौचालय, एस्केलेटर और लिफ्ट।
- **सुगमता :** सुगम्य भारत मानकों के अनुरूप एस्केलेटर और लिफ्ट, जिससे दिव्यांगजन समेत सभी यात्रियों को सुविधा मिलेगी।





कटक रेलवे स्टेशन के दूसरे प्रवेश द्वार के उद्घाटन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव

- **यात्री सुविधाएं :** विशाल परिभ्रमण क्षेत्र, पार्किंग और पिकअप/ड्रॉप-ऑफ एरिया।
- **अतिरिक्त सेवाएं :** प्रधानमंत्री भारतीय जनऔषधि केंद्र, एटीएम, स्वचालित टिकट वेंडिंग मशीन, और स्थानीय हस्तशिल्प प्रदर्शित करने वाले 'वन स्टेशन वन प्रोडक्ट' ट्रॉली।

₹14.63 करोड़ की लागत से पूरा हुआ यह प्रवेश द्वार क्षेत्र में बेहतर कनेक्टिविटी और आधारभूत संरचना की लंबे समय से चली आ रही मांगों को पूरा करता है। इस नई व्यवस्था से स्टेशन संचालन को सुगम बनाने, सुरक्षा बढ़ाने और बढ़ती यात्री जरूरतों को पूरा करने की उम्मीद है।

यह स्टेशन न केवल कटक बल्कि पड़ोसी जिलों जैसे पारादीप, जगतसिंहपुर, केंद्रापाड़ा और जाजपुर के यात्रियों की सेवा करेगा, जिससे सुगमता और क्षेत्रीय कनेक्टिविटी को बढ़ावा मिलेगा। आधुनिक सुविधाओं और यात्री सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित करते हुए, यह विकास भविष्य की रेलवे स्टेशन परियोजनाओं के लिए एक मॉडल बन सकता है।

बालेश्वर स्टेशन पर फुट ओवर ब्रिज का उद्घाटन

अपनी यात्रा के दौरान, श्री वैष्णव ने बालेश्वर रेलवे स्टेशन पर 3 मीटर चौड़े नए फुट ओवर ब्रिज का भी उद्घाटन किया। ₹200 करोड़ की इस परियोजना का उद्देश्य स्टेशन को विश्वस्तरीय सुविधा में बदलना और यात्रियों की सुविधा और सुरक्षा को बढ़ाना है।

इस अवसर पर श्री भरतृहरि महताब, सांसद (कटक), और कई विधायकों समेत अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। ये विकास ओडिशा में रेलवे बुनियादी ढाँचे के आधुनिकीकरण और यात्रियों की सुविधा को बढ़ाने के प्रयासों को दर्शाते हैं।■

रेल राज्य मंत्री द्वारा कर्नाटक में रेल के विकास सम्बन्धी नई रेल सेवाओं का शुभारंभ और स्टेशनों का निरीक्षण

रेल राज्य मंत्री श्री वी. सोमन्ना ने दिनांक 14 से 16 नवंबर, 2024 तक कर्नाटक में कई कार्यक्रमों में भाग लिया। उन्होंने आधारभूत संरचना के विकास, बेहतर सेवाओं और यात्री सुविधाओं पर जोर दिया।

बेलगावी-धारवाड़ नई रेलवे लाइन की समीक्षा बैठक

दिनांक 14 नवंबर, 2024 को श्री वी. सोमन्ना ने बेलगावी-धारवाड़ नई रेलवे लाइन पर समीक्षा बैठक की। उन्होंने रेलवे और जिला अधिकारियों को बेलगावी और धारवाड़ जिलों में भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया में तेजी लाने और परियोजना की समय-सीमा का पालन सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। इस बैठक में सांसद श्री ईरन्ना कडाडी, सुश्री दिव्या प्रभु, धारवाड़ के उपायुक्त श्री मोहम्मद रोशन (वीडियो लिंक के माध्यम से), बेलगावी के उपायुक्त श्री राहुल शिंदे, दक्षिण पश्चिम रेलवे और कर्नाटक औद्योगिक क्षेत्र विकास बोर्ड के वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए।



नई ट्रेन सेवाओं का शुभारंभ

दिनांक 15 नवंबर, 2024 को श्री वी. सोमन्ना ने दो महत्त्वपूर्ण ट्रेन सेवाओं को हरी झंडी दिखाई :

यशवंतपुर-चिक्कमगलुरु एक्सप्रेस

इस ट्रेन में अब संपिगे रोड स्टेशन पर अतिरिक्त ठहराव जोड़ा गया है। शुभारंभ समारोह में विधायक श्री एम.टी. कृष्णप्पा, श्री जी.बी. ज्योति गणेश, श्री बी. सुरेश गौड़ा, पूर्व विधायक श्री मसाला जयराम और दक्षिण पश्चिम रेलवे के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

केएसआर बेंगलुरु-शिवमोगा टाउन और एसएसएस हुबली-केएसआर बेंगलुरु जनशताब्दी एक्सप्रेस

इन ट्रेनों में अब टिपटूर रेलवे स्टेशन पर अतिरिक्त ठहराव दिया गया है। इस अवसर पर विधायक, पूर्व विधायक श्री मसाला जयराम और बेंगलुरु और मैसूरु के मंडल रेल प्रबंधक मौजूद थे।



निरीक्षण और उद्घाटन

केएसआर बेंगलुरु रेलवे स्टेशन

दिनांक 16 नवंबर, 2024 को श्री वी. सोमन्ना ने केएसआर बेंगलुरु रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया और प्लेटफॉर्म नंबर 1 पर नए एस्केलेटर का उद्घाटन किया। इस दौरान मंडल रेल प्रबंधक श्री योगेश मोहन, मुख्य वाणिज्य प्रबंधक श्री अनूप दयानंद साधु और दक्षिण पश्चिम रेलवे के अन्य वरिष्ठ अधिकारी उनके साथ थे।

केंगेरी स्टेशन

श्री वी. सोमन्ना ने दिनांक 16 नवंबर, 2024 को केंगेरी स्टेशन का निरीक्षण किया और प्लेटफॉर्म नंबर 1 पर एस्केलेटर का उद्घाटन किया। इस अवसर पर सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम एवं श्रम और रोजगार राज्य मंत्री सुश्री शोभा करंदलाजे, विधान परिषद सदस्य श्री एच.एस. गोपीनाथ रेड्डी और दक्षिण पश्चिम रेलवे के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।



इन पहलों से क्षेत्र में कनेक्टिविटी बढ़ाने, यात्री सुविधाओं में सुधार करने और प्रमुख बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं को तेज करने के रेल मंत्रालय के प्रयासों की झलक मिलती है।■

रेल राज्य मंत्री द्वारा बढ़नी रेलवे स्टेशन पर नवनिर्मित कोचिंग डिपो का लोकार्पण

रेल एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग राज्य मंत्री, श्री रवनीत सिंह ने दिनांक 8 दिसम्बर, 2024 को सांसद श्री जगदम्बिका पाल, विधायक श्री विनय वर्मा, विधायक श्री श्यामधनी राही की उपस्थिति में सिद्धार्थनगर-चिल्हिया स्टेशनों के मध्य समपार संख्या-58 (भीमापार) पर रोड अंडर ब्रिज का शिलान्यास तथा बढ़नी रेलवे स्टेशन पर स्थित नवनिर्मित कोचिंग डिपो का लोकार्पण फलक अनावरण कर किया।

इस अवसर पर श्री रवनीत सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के गतिशील नेतृत्व में, उत्तर प्रदेश में बढ़ते रेल इन्फ्रास्ट्रक्चर के विस्तार के क्षेत्र में पिछले एक दशक में एक बड़ा परिवर्तन आया है। आर.ओ.बी./आर.यू.बी. का निर्माण कार्य करने के साथ ही स्टेशनों पर यात्री सुविधाओं एवं यातायात



सुविधाओं के विकास एवं विस्तार का कार्य प्रगति पर है। इन समारोहों में पूर्वोत्तर रेलवे लखनऊ मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री आदित्य कुमार एवं बड़ी संख्या में क्षेत्रीय जनता उपस्थित थी।■

केंद्रीय राज्य मंत्री ने मोहम्मदगंज रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया



केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण (राज्य) मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्री, डॉ. एल. मुरुगन ने दिनांक 25 दिसंबर, 2024 को पलामु जिले में स्थित मोहम्मदगंज में नवनिर्मित रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया और यात्री सुविधाओं की जानकारी ली। उन्होंने पास ही में स्थित भीम चूल्हा पर्यटन स्थल के पास बन रहे रेलवे टनल का भी दौरा किया और बारीकी से निरीक्षण किया। मंत्री ने मौजूद रेल अधिकारियों से प्रोजेक्ट के पूरा होने की समय सीमा और अन्य पहलुओं की भी जानकारी ली।■

जीआरपी प्रमुखों की 5वीं अखिल भारतीय कॉन्फ्रेंस संपन्न

नई दिल्ली के विज्ञान भवन में दिनांक 17 दिसम्बर, 2024 को रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) के समन्वय में रेल मंत्रालय द्वारा आयोजित जीआरपी प्रमुखों का 5वां अखिल भारतीय सम्मेलन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में यात्री सुरक्षा, अपराध नियंत्रण, और सुरक्षा ढाँचे के आधुनिकीकरण पर गहन चर्चा की गई।

रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सतीश कुमार ने यात्री सुरक्षा के लिए जीआरपी और आरपीएफ के सहयोग को महत्त्वपूर्ण बताया। महानिदेशक आरपीएफ श्री मनोज यादव ने सुरक्षा संरचना के आधुनिकीकरण और नई चुनौतियों से निपटने की आवश्यकता पर बल दिया।

सम्मेलन में ऑपरेशन नन्हे फरिश्ते, ऑपरेशन आहट और मेरी सहेली जैसी पहलों की सराहना की गई। रेल मदद पोर्टल के माध्यम से यात्री शिकायतों और अपराधों के डेटा का विश्लेषण किया गया। नए आपराधिक कानूनों के तहत जीरो एफआईआर



और ई-एफआईआर सिस्टम की आवश्यकता को रेखांकित किया गया। जीआरपी कार्यबल की मजबूती और ढाँचे को लेकर एक समान मानक तय करने हेतु समिति का गठन किया गया। श्री यादव ने कहा, 'हमारे सामूहिक प्रयास रेलवे सुरक्षा को मजबूत करेंगे और सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करेंगे।' सम्मेलन बेहतर समन्वय, उन्नत तकनीक के उपयोग और यात्री सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के संकल्प के साथ समाप्त हुआ।■

संसद में भारतीय रेल

संसद सत्र के दौरान सांसदों द्वारा भारतीय रेल के संबंध में पूछे गए विभिन्न प्रश्नों के उत्तर में रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने निम्नलिखित जानकारियाँ दीं :

(प्रस्तुत हैं संकलित अंश)

अनारक्षित यात्रियों की सुविधा हेतु अतिरिक्त 12,000 सामान्य कोच लगाने का लक्ष्य : रेल मंत्री

केंद्रीय रेल, सूचना एवं प्रसारण और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने दिनांक 11 दिसम्बर, 2024 को लोकसभा में सांसद सदस्यों के सवालों का जवाब देते हुए भारतीय रेल की कई महत्त्वपूर्ण पहलों और उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। विभिन्न विषयों पर बोलते हुए, रेल मंत्री ने यात्री सुविधाओं को बेहतर करने, कार्यान्वयन की दक्षता में सुधार, सुरक्षा सुनिश्चित करने और भर्ती प्रक्रियाओं में पारदर्शिता को बढ़ावा देने के प्रयासों के बारे में विस्तार से बताया। इंफ्रास्ट्रक्चर में एडवांसमेंट से लेकर नवाचारी ट्रेन सेवाओं तक, मंत्री ने देश की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए रेलवे की प्रतिबद्धता पर जोर दिया।

संसद में बोलते हुए, रेल मंत्री ने गैर-एसी कोचों के लिए 2:3 और एसी कोचों के लिए 1:3 का अनुपात बनाए रखते हुए आर्थिक रूप से कमजोर और अन्य, दोनों पर संतुलित ध्यान केंद्रित करने पर जोर दिया। सामान्य कोचों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए, एक विशेष मैन्युफैक्चरिंग कार्यक्रम शुरू किया गया है, जिसका लक्ष्य 12,000 सामान्य कोचों का उत्पादन करना है। इसमें से, 900 पहले ही चालू वित्तीय वर्ष में जोड़े जा चुके हैं, वहीं 10,000 और निर्माण करने का लक्ष्य है, जिससे अनारक्षित श्रेणी के यात्रियों के लिए सुविधा सुनिश्चित की जा सके।

रेल मंत्री ने महाकुंभ-2025 की व्यापक तैयारियों के बारे में विस्तार से बताया। यात्रियों की अनुमानित बढ़ोतरी को पूरा करने के लिए कुल 13,000 ट्रेनों की योजना बनाई गई है, जो मध्यम वर्ग और आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की सेवा के लिए एक केंद्रित प्रयास को दर्शाता है।

मंत्री ने छठ और दिवाली त्योहारों के दौरान रेलवे की कार्यान्वयन दक्षता पर प्रकाश डाला। इन अवधि के दौरान, करीब 7,900 स्पेशल ट्रेनों ने 1 करोड़ 80 लाख से अधिक यात्रियों को बिना किसी बड़ी असुविधा के पहुँचाया, जो व्यस्त यात्रा सीजन के दौरान यात्री सुविधाओं के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। एक सवाल के जवाब में, रेल मंत्री ने कहा कि अमृत भारत ट्रेन



श्रृंखला को शामिल किया गया है, जो पूरी तरह से गैर-एसी यात्रियों के लिए तैयार की गई है। वंदे भारत ट्रेनों के समान अत्याधुनिक तकनीक से परिपूर्ण, ये ट्रेनें शोर और झटका-मुक्त यात्रा का अनुभव देती हैं। बीते दस महीने में शुरुआती बेड़े के सफल संचालन के बाद 50 अतिरिक्त अमृत भारत ट्रेनों के उत्पादन की योजना पर काम चल रहा है।

रेल मंत्री ने नमो भारत ट्रेन पहल पर प्रकाश डाला, जो अधिक आवृत्ति वाली शटल सेवाओं के साथ कम दूरी के शहरी जोड़े के लिए डिज़ाइन की गई है। दो नमो भारत ट्रेनें पहले से ही चालू हैं, और प्रदर्शन मूल्यांकन के बाद बड़े पैमाने पर उत्पादन शुरू किया जाएगा। इस कदम का उद्देश्य भारतीय मध्यम वर्ग के लिए यूरोपीय क्षेत्रीय ट्रेन मानकों को दोहराना है।

एक अन्य प्रश्न के उत्तर में श्री वैष्णव ने कहा कि भारतीय रेल की उत्पादन इकाइयां अप्रैल 2018 से केवल एलएचबी कोच बना रही हैं। पिछले कुछ वर्षों में एलएचबी कोच का उत्पादन लगातार बढ़ा है। वित्त वर्ष 2014-24 के दौरान निर्मित एलएचबी कोच की संख्या 2004-14 के दौरान निर्मित 2,337 संख्या से 16 गुना 36,933 अधिक है। भारतीय रेल ने एलएचबी कोचों की भरमार कर दी है जो तकनीकी रूप से बेहतर हैं और इनमें एंटी क्लाइम्बिंग व्यवस्था, विफलता संकेत प्रणाली के साथ एयर सस्पेंशन और कम संक्षारक शेल जैसी विशेषताएं हैं।

निष्पक्ष और पारदर्शी भर्ती प्रक्रिया

रेल मंत्री ने हाल ही में हुई रेलवे भर्ती बोर्ड (आरआरबी) परीक्षा को पारदर्शिता और दक्षता का एक मॉडल बताया। 211 शहरों से भाग लेने वाले 1.26 करोड़ उम्मीदवारों के साथ, परीक्षा एक भी पेपर लीक या घटना के बिना संपन्न हुई। परिणामस्वरूप, 1,30,581 युवाओं ने रोजगार हासिल किया और निष्पक्ष भर्ती प्रक्रियाओं के लिए एक मानदंड स्थापित किया।

एक संरचित भर्ती प्रक्रिया की मांगों को संबोधित करते हुए, मंत्री ने कहा कि रेलवे ने परीक्षाओं के लिए एक वार्षिक कैलेंडर पेश किया है। वर्तमान में 58,642 पदों के लिए भर्ती जारी है, हाल ही में 11 लाख से अधिक उम्मीदवार लोको पायलट चयन प्रक्रिया में भाग ले रहे हैं। उन्होंने संसद को पारदर्शी तरीके से अधिकतम रोजगार के अवसर प्रदान करने की रेलवे की प्रतिबद्धता का आश्वासन दिया।





12,000 फ्लाईओवर और अंडरपास का निर्माण

मंत्री ने कहा कि आज सभी मानवरहित अधिकृत लेवल क्रॉसिंगों को 100% मानवयुक्त कर दिया गया है या पर फ्लाईओवर या अंडरपास का निर्माण कर समाप्त कर दिया गया है। इन 10 वर्षों में 12,000 फ्लाईओवर और अंडरपास का निर्माण किया गया है। यह उपलब्धि बढ़ी हुई सुरक्षा और कुशल ट्रेन परिचालन सुनिश्चित करती है, जो रेलवे के बुनियादी ढाँचे के विकास में एक महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर है।

सुगम्य भारत मिशन

'सुगम्य भारत मिशन' (सुलभ भारत अभियान) के हिस्से के रूप में, भारतीय रेल दिव्यांगजनों और कम गतिशीलता वाले यात्रियों के लिए सुगमता सुनिश्चित करने में महत्त्वपूर्ण प्रगति कर रहा है। दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 के दिशा-निर्देशों के अंतर्गत, रैंप, सुलभ पार्किंग, ब्रेल और स्पर्शनीय संकेत, कम ऊंचाई वाले काउंटर और लिफ्ट/एस्कलेटर जैसी व्यापक सुविधाएँ प्रदान की गई हैं।

नवंबर 2024 तक भारतीय रेल ने 399 स्टेशनों पर 1,512 एस्कलेटर और 609 स्टेशनों पर 1,607 लिफ्टें स्थापित की थीं जो पिछले दशक की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि को दर्शाता है- क्रमशः 9 और 14 गुना की वृद्धि। इसके अलावा, अधिकांश मेल और एक्सप्रेस रेलगाड़ियों में चौड़े प्रवेश द्वार, सुलभ शौचालय और व्हीलचेयर पार्किंग वाले कोच उपलब्ध हैं, जबकि वंदे भारत रेलगाड़ियां दिव्यांगजनों के लिए स्वचालित दरवाजे, निर्धारित स्थान और ब्रेल साइनेज जैसी सुविधाओं के साथ बेहतर सुगमता प्रदान करती हैं।■



वंदे भारत स्लीपर रेक

10 वंदे भारत स्लीपर ट्रेनें निर्माणाधीन

200 वंदे भारत अतिरिक्त स्लीपर रेक के निर्माण हेतु तकनीकी साझेदारों से अनुबंध

भारतीय रेल अपनी आधुनिकीकरण प्रक्रिया को गति देते हुए लंबे और मध्यम दूरी की यात्रा के लिए डिज़ाइन की गई वंदे भारत स्लीपर ट्रेनों का निर्माण कर रहा है। स्लीपर ट्रेनसेट का पहला प्रोटोटाइप सफलतापूर्वक तैयार किया गया है और यह जल्द ही फील्ड ट्रायल के लिए जाएगा। ट्रेनों की लॉन्चिंग का कार्यक्रम इन ट्रायल्स की सफलता पर निर्भर करेगा।

प्रोटोटाइप के अलावा, 10 वंदे भारत स्लीपर ट्रेनों का निर्माण वर्तमान में जारी है, और 200 अतिरिक्त स्लीपर रेक के निर्माण के लिए तकनीकी साझेदारों को अनुबंध दिया गया है। यह कदम यात्रियों की सुविधा और सुरक्षा को बेहतर बनाने की दिशा में एक बड़ा प्रयास है।

रेल, सूचना और प्रसारण, और इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने लोकसभा और राज्यसभा में दिए गए अपने बयान में वंदे भारत स्लीपर ट्रेनों की उन्नत सुविधाओं पर प्रकाश डाला।

- कवच सुरक्षा प्रणाली उन्नत सुरक्षा के लिए।
- EN-45545 HL3 अग्नि सुरक्षा मानकों का पालन।
- बेहतर सुरक्षा के लिए क्रैशवर्दी कपलर और एंटी-क्लाइम्बर्स।
- ऊर्जा दक्षता के लिए रीजनरेटिव ब्रेकिंग सिस्टम।
- तेज गति क्षमताएं, तेजी से ब्रेक लगाने और गति बढ़ाने की सुविधा।
- यात्रियों और ट्रेन चालक दल के बीच आपातकालीन संचार के लिए टॉक-बैक यूनिट।
- सीमित गतिशीलता वाले यात्रियों (PRM) के लिए आवास और शौचालय की सुविधाएं।
- स्वचालित प्लग दरवाजे और चौड़े, सील गैलरी।
- ऊपरी बर्थ तक पहुँचने के लिए एर्गोनॉमिक रूप से डिज़ाइन की गई सीढ़ियां।
- एयर कंडीशनिंग और लाइटिंग जैसी सुविधाओं की निगरानी के लिए सेंट्रलाइज्ड कोच मॉनिटरिंग सिस्टम।
- सभी कोच में CCTV निगरानी।
- वंदे भारत ट्रेनों का विस्तारित नेटवर्क

दिनांक 2 दिसंबर, 2024 तक, भारतीय रेल अपने ब्रॉड गेज विद्युतीकृत नेटवर्क पर 136 वंदे भारत ट्रेन सेवाओं का संचालन कर रही है। ये ट्रेन सेवाएं, जो मुख्य रूप से छोटी और मध्यम दूरी की यात्रा के लिए हैं, चेयर कार कोचों से सुसज्जित हैं और अक्टूबर 2024 तक 100% से अधिक यात्री भार दर प्राप्त कर चुकी हैं।

इनमें से, 16 वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनें तमिलनाडु में चल रही हैं, जबकि सबसे लंबा मार्ग दिल्ली से बनारस तक है, जिसकी दूरी 771 कि.मी. है। श्री वैष्णव ने यह भी बताया कि वंदे भारत सेवाओं और इसके विभिन्न प्रकारों का परिचय यातायात की जरूरतों, परिचालन व्यवहार्यता, और संसाधनों की उपलब्धता पर आधारित एक सतत प्रक्रिया है।



भविष्य की योजना

वंदे भारत स्लीपर ट्रेनों के निर्माण और परीक्षण प्रगति पर हैं, और भारतीय रेल यात्रियों को आधुनिक सुविधाओं, बेहतर सुरक्षा और विश्वस्तरीय अनुभव प्रदान करने के लिए तैयार है। यह पहल देश में सार्वजनिक परिवहन के बुनियादी ढाँचे और दक्षता को सुधारने के व्यापक लक्ष्यों के साथ संरेखित है।■

पश्चिम बंगाल में चल रही रेल परियोजनाओं की स्थिति



पश्चिम बंगाल में पूरी तरह/आंशिक रूप से आने वाली रेल बुनियादी ढाँचा परियोजनाएँ भारतीय रेल के पूर्वी रेल, दक्षिण पूर्व रेल (एसईआर) और पूर्वोत्तर फ्रंटीयर रेल (एनएफआर) क्षेत्रीय रेलवे के अंतर्गत आती हैं। लागत, व्यय और परिव्यय सहित रेल परियोजनाओं का क्षेत्रीय रेलवार विवरण भारतीय रेल की वेबसाइट पर सार्वजनिक डोमेन में उपलब्ध कराया गया है।

दिनांक 1 अप्रैल, 2024 तक, पिछले तीन वर्षों में स्वीकृत (13 नई लाइन, 4 गेज परिवर्तन और 26 दोहरीकरण) सहित कुल 4,479 कि.मी. लंबाई की 43 रेल परियोजनाएँ, पूरी तरह से/आंशिक रूप से पश्चिम बंगाल में आती हैं जिनकी लागत ₹60,168 करोड़ है। यह योजना और कार्यान्वयन के विभिन्न चरणों में हैं, जिनमें से 1,655 कि.मी. की लंबाई चालू हो चुकी है और मार्च 2024 तक इन पर ₹20,434 करोड़ का व्यय हुआ है। सारांश इस प्रकार है :

श्रेणी	परियोजनाओं की संख्या	कुल लंबाई (कि.मी. में)	मार्च 2024 तक कमीशन की गई लंबाई (कि.मी. में)	मार्च 2024 तक का कुल व्यय (₹करोड़ में)
नई लाइन	13	1,087	322	9,774
गेज परिवर्तन	4	1,201	854	3,663
दोहरीकरण/ मल्टीट्रैकिंग	26	2,192	479	6,997
कुल	43	4,479	1,655	20,434

पश्चिम बंगाल में पूर्ण/आंशिक रूप से आने वाली बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं के लिए बजट आवंटन इस प्रकार है :

अवधि	व्यय
वित्त वर्ष 2009-14	₹4,380 करोड़/वर्ष
वित्त वर्ष 2024-25	₹13,941 करोड़ (3 गुना अधिक)

यद्यपि निधि आवंटन कई गुना बढ़ गया है, लेकिन परियोजना के कार्यान्वयन की गति शीघ्र भूमि अधिग्रहण पर निर्भर है। रेल राज्य सरकार के माध्यम से भूमि अधिग्रहण करता है और रेल परियोजनाओं का पूरा होना भूमि अधिग्रहण पर निर्भर है। भूमि अधिग्रहण में देरी के कारण पश्चिम बंगाल में पूरी तरह/आंशिक रूप से आने वाली महत्त्वपूर्ण बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं का निष्पादन रुका हुआ है। पश्चिम बंगाल में भूमि अधिग्रहण की स्थिति इस प्रकार है :

पश्चिम बंगाल में परियोजनाओं के लिए आवश्यक कुल भूमि	3040 हेक्टेयर
भूमि अधिग्रहण	640 हेक्टेयर (21%)
शेष भूमि का अधिग्रहण किया जाना है	2,400 हेक्टेयर (79%)

भारत सरकार परियोजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए तैयार है, लेकिन सफलता पश्चिम बंगाल सरकार के समर्थन पर निर्भर करती है। उदाहरण के लिए, भूमि अधिग्रहण के कारण विलंबित कुछ प्रमुख परियोजनाओं का विवरण इस प्रकार है :

क्र.सं.	परियोजना का नाम	कुल आवश्यक भूमि (हेक्टेयर में)	जमीन अधि ग्रहीत की गयी (हेक्टेयर में)	शेष भूमि का अधिग्रहण किया जाना है (हेक्टेयर में)
1.	नबदीपघाट-नबदीपधाम नई लाइन (10 कि.मी.)	106.86	0.17	106.69
2.	चंदनेश्वर-जलेश्वर नई लाइन (41 कि.मी.)	158	0	158
3.	नैहाटी-राणाघाट तीसरी लाइन (36 कि.मी.)	87.3	0.09	87.74
4.	बलुरघाट-हिल्ली नई लाइन (30 कि.मी.)	156.38	67.38	88.00
5.	सैंथिया में बाईपास (5 कि.मी.)- सीतारामपुर (7 कि.मी.)22.28	2.22	20.06	

किसी भी रेल परियोजना का पूरा होना विभिन्न कारकों पर निर्भर करता है जैसे राज्य सरकार द्वारा त्वरित भूमि अधिग्रहण, वन

विभाग के अधिकारियों द्वारा वन मंजूरी, लागत साझाकरण परियोजनाओं में राज्य सरकार द्वारा लागत हिस्सेदारी जमा करना, परियोजनाओं की प्राथमिकता, उल्लंघनकारी उपयोगिताओं का स्थानांतरण, विभिन्न प्राधिकरणों से वैधानिक मंजूरी, क्षेत्र की भूवैज्ञानिक और स्थलाकृतिक स्थितियाँ, परियोजना स्थल के क्षेत्र में कानून और व्यवस्था की स्थिति, जलवायु परिस्थितियों के कारण विशेष परियोजना स्थल के लिए एक वर्ष में कार्य महीनों की संख्या आदि।

रेल परियोजनाओं के त्वरित अनुमोदन और कार्यान्वयन के लिए सरकार द्वारा उठाए गए विभिन्न कदमों में शामिल हैं (i) गति शक्ति इकाइयों की स्थापना (ii) परियोजनाओं को प्राथमिकता देना (iii) प्राथमिकता वाली परियोजनाओं पर धन के आवंटन में पर्याप्त वृद्धि (iv) क्षेत्र में शक्तियों का प्रत्यायोजन स्तर (v) विभिन्न स्तरों पर परियोजना की प्रगति की बारीकी से निगरानी करना, और (vi) शीघ्र भूमि अधिग्रहण, वानिकी और वन्यजीव मंजूरी और परियोजनाओं से सम्बन्धित अन्य मुद्दों को हल करने के लिए राज्य सरकारों और सम्बन्धित अधिकारियों के साथ नियमित अनुवर्ती कार्रवाई करना। इससे 2014 के बाद से कमीशनिंग की दर में काफी वृद्धि हुई है।■

परियोजना	परियोजना की संख्या	लम्बाई (किमी)
नई लाइनें	13	1,087
आमान परिवर्तन	4	1,201
दोहरीकरण / मल्टी ट्रैकिंग	26	2,192
कुल	43	4,479

तमिलनाडु में चल रही रेल परियोजनाओं की स्थिति

तमिलनाडु में पूरी तरह/आंशिक रूप से आने वाली रेल बुनियादी ढाँचा परियोजनाएँ भारतीय रेल के दक्षिणी रेल (एसआर), दक्षिण मध्य रेल (एससीआर) और दक्षिण पश्चिम रेल (एसडब्ल्यूआर) क्षेत्रीय रेलवे के अंतर्गत आती हैं। लागत, व्यय और परिव्यय सहित रेल परियोजनाओं का क्षेत्रीय रेलवार विवरण भारतीय रेल की वेबसाइट पर सार्वजनिक डोमेन में उपलब्ध कराया गया है।

दिनांक 1 अप्रैल, 2024 तक, पिछले तीन वर्षों में स्वीकृत (10 नई लाइन, 3 गेज परिवर्तन और 9 दोहरीकरण) सहित कुल 2,587 कि.मी. लंबाई की 22 रेल परियोजनाएँ, पूरी तरह से/आंशिक रूप से तमिलनाडु राज्य में आती हैं जिनकी लागत ₹33,467 करोड़ है। यह योजना और कार्यान्वयन के विभिन्न चरणों में हैं, जिनमें से 665 कि.मी. की लंबाई चालू हो चुकी है और मार्च 2024 तक इन पर ₹7,154 करोड़ का व्यय हुआ है। सारांश इस प्रकार है :

योजना शीर्ष	परियोजनाओं की संख्या	कुल लंबाई (कि.मी. में)	कमीशन की गई लंबाई (कि.मी. में)	मार्च 2024 तक का व्यय (₹करोड़ में)
नई लाइन	10	872	24	1,223
गेज परिवर्तन	3	748	604	3267
दोहरीकरण/ मल्टीट्रैकिंग	9	967	37	2664
कुल	22	2587	665	7154

तमिलनाडु में पूर्ण/आंशिक रूप से आने वाली बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं और सुरक्षा कार्यों के लिए बजट आवंटन इस प्रकार है :



अवधि	व्यय
वित्त वर्ष 2009-14	₹879 करोड़/वष
वित्त वर्ष 2024-25	₹6,362 करोड़ (7 गुना से अधिक)

यद्यपि निधि आवंटन कई गुना बढ़ गया है, लेकिन परियोजना के कार्यान्वयन की गति शीघ्र भूमि अधिग्रहण पर निर्भर है। रेल राज्य सरकार के माध्यम से भूमि अधिग्रहण करता है और रेल परियोजनाओं का पूरा होना भूमि अधिग्रहण पर निर्भर है। भूमि अधिग्रहण में देरी के कारण तमिलनाडु में पूरी तरह/आंशिक रूप से आने वाली महत्त्वपूर्ण बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं का निष्पादन रुका हुआ है। तमिलनाडु में भूमि अधिग्रहण की स्थिति इस प्रकार है:



तमिलनाडु में परियोजनाओं के लिए आवश्यक कुल भूमि	3,389 हेक्टेयर
भूमि अधिग्रहण	866 हेक्टेयर (26%)
शेष भूमि का अधिग्रहण किया जाना है	2,523 हेक्टेयर (74%)

भारत सरकार परियोजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए तैयार है, लेकिन सफलता तमिलनाडु सरकार के समर्थन पर निर्भर करती है। उदाहरण के लिए, भूमि अधिग्रहण के कारण विलंबित कुछ प्रमुख परियोजनाओं का विवरण इस प्रकार है :

क्र.सं.	परियोजना का नाम	कुल आवश्यक भूमि (हेक्टेयर में)	जमीन अधि ग्रहीत की गयी (हेक्टेयर में)	शेष भूमि का अधिग्रहण किया जाना है (हेक्टेयर में)
1.	तिंडीवनम-तिरुवन्नामलाई नई लाइन (71 कि.मी.)	273	33	240
2.	अट्टीपुट्टू-पुत्तूर नई लाइन (88 कि.मी.)	189	0	189
3.	मोरप्पुर-धर्मपुरी (36 कि.मी.)	93	0	93
4.	मन्नारगुडी-पट्टुकोट्टई (41 कि.मी.)	152	0	152
5.	तंजावुर-पट्टुकोट्टई (52 कि.मी.)	196	0	196

किसी भी रेल परियोजना का पूरा होना विभिन्न कारकों पर निर्भर करता है जैसे राज्य सरकार द्वारा त्वरित भूमि अधिग्रहण, वन विभाग के अधिकारियों द्वारा वन मंजूरी, लागत साझाकरण परियोजनाओं में राज्य सरकार द्वारा लागत हिस्सेदारी जमा करना, परियोजनाओं की प्राथमिकता, उल्लंघनकारी उपयोगिताओं का स्थानांतरण, विभिन्न प्राधिकरणों से वैधानिक मंजूरी, क्षेत्र की भूवैज्ञानिक और स्थलाकृतिक स्थितियाँ, परियोजना स्थल के क्षेत्र में कानून और व्यवस्था की स्थिति, जलवायु परिस्थितियों के कारण विशेष परियोजना स्थल के लिए एक वर्ष में कार्य महीनों की संख्या आदि।■

हम सभी का **भारतीय रेल** के साथ अटूट रिश्ता है

भारतीय रेल के साथ आप अपने संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, गीत, लेख आदि हिन्दी में हमें भेज सकते हैं। पसंद आने पर रचनाओं को हम रेल मंत्रालय की आधिकारिक मासिक पत्रिका

भारतीय रेल

में प्रकाशित करेंगे

ई-मेल editorbhartiyarailrb@gmail.com

चयनित सामग्री/लेख की जानकारी ई-मेल द्वारा दी जाएगी,
प्रकाशित रचनाओं के लिए रेल मंत्रालय द्वारा निर्धारित मानदेय भी दिया जाएगा

भारतीय रेल 2024 की उपलब्धियाँ

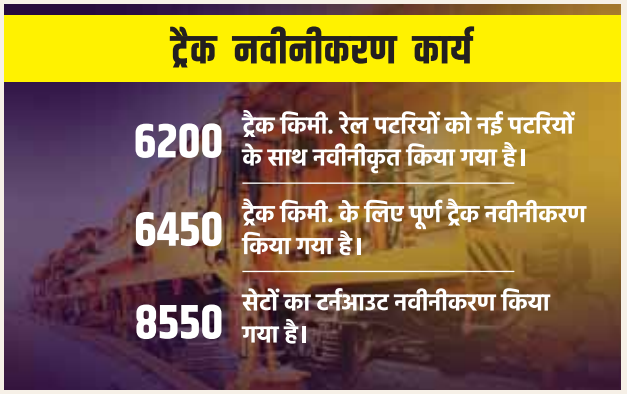
परिवर्तनकारी यात्रा पर त्वरित गति से आगे बढ़ रही है भारतीय रेल

- भारतीय रेल ने 2024 में 6,450 कि.मी. ट्रैक का पूर्ण नवीनीकरण और 8,550 विस्तारित मार्गों (टर्नआउट) का नवीनीकरण किया तथा 2,000 कि.मी. से अधिक पर गति 130 कि.मी. प्रति घंटे तक बढ़ाया।
- भारतीय रेल ने 2024 में 3,210 रूट कि.मी. (आरकेएम) का विद्युतीकरण किया, जिससे विद्युतीकृत ब्राड गेज नेटवर्क का विस्तार 97 प्रतिशत तक हो गया और अक्षय ऊर्जा क्षमता 2,014 मेगावाट तक पहुँच गई।
- रिकॉर्ड 136 वंदे भारत ट्रेनें और पहली नमो भारत रैपिड रेल शुरू की गई, साथ ही पीक सीजन के दौरान 21,513 विशेष ट्रेनों का परिचालन किया गया।
- भारतीय रेल ने 2024 में 1,473 मीट्रिक टन माल ढुलाई की, जिससे 3.86 प्रतिशत की वृद्धि हुई, इसमें ईडीएफसी और डब्ल्यूडीएफसी ने 72,000 से अधिक ट्रेन चलाने में मदद की।
- अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत 1,337 स्टेशनों में से 1,198 स्टेशनों पर काम शुरू हुआ।
- 10,000 लोको को कवच सुरक्षा तकनीक से लैस किया जा रहा है, 9,000 तकनीशियनों को प्रशिक्षित किया गया और 15,000 रूट कि.मी. (आरकेएम) के लिए बोलियां आमंत्रित की गईं।
- भारतीय रेल के 80 स्टेशनों और 78 संरचनाओं सहित विरासत स्थलों को डिजिटल किया गया, जबकि घूम जैसे उत्सवों ने पर्यटन को बढ़ावा दिया।

विकसित भारत 2047 का लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में, भारतीय रेल ने वर्ष 2024 में अपनी परिवर्तनकारी यात्रा जारी रखी, जिससे आधुनिकीकरण और प्रगति के एक नए युग का मार्ग प्रशस्त हुआ। रेल यात्रा को विश्व स्तरीय अनुभव वाला बनाने, माल ढुलाई दक्षता को बढ़ाने और उन्नत तकनीकों को अपनाने पर जोर देने के साथ, रेलवे ने राष्ट्रीय विकास के उत्प्रेरक के रूप में अपनी भूमिका को मजबूत किया है। आधुनिक स्टेशन, अत्याधुनिक ट्रेनें और अभिनव सुरक्षा प्रणालियां रेल यात्रा के परिदृश्य को नया आकार दे रही हैं। स्थायित्व के लिए प्रतिबद्ध भारतीय रेल व्यापक बुनियादी ढाँचे के उन्नयन और क्षमता निर्माण के माध्यम से आर्थिक विकास को आगे बढ़ाते हुए लगातार हरित संचालन की ओर बढ़ रही है। रेलवे ने इस वर्ष विश्व स्तरीय परिवहन नेटवर्क बनने के अपने दृष्टिकोण की पुष्टि की है, जो गतिशील और विकासशील राष्ट्र की जरूरतों को पूरा करने के लिए परंपरा को नवाचार के साथ जोड़ती है।



रेल ट्रैक अवसंरचना और गति में वृद्धि



सेक्शनल गति में वृद्धि :

- स्वर्णिम चतुर्भुज और विकर्ण मार्गों तथा अन्य बी मार्गों के कुछ हिस्सों को कवर करते हुए 2000 ट्रैक कि.मी. पर सेक्शनल गति को 130 कि.मी. प्रति घंटे तक बढ़ाया गया है।
- 7200 ट्रैक कि.मी.पर सेक्शनल गति को 110 कि.मी. प्रति घंटे तक बढ़ाया गया है।■

प्रोजेक्ट इंजीनियरिंग और प्रबंधन

- भारतीय रेल ई-प्रोक्योरमेंट सिस्टम (आईआरईपीएस) पर विभिन्न क्षेत्रीय रेलवे के इंजीनियरिंग विभाग के सभी लंबित मामलों को 'विवाद से विश्वास II (अनुबंध संबंधी विवाद)' नामक एकमुश्त निपटान योजना के तहत निपटाया गया है।
- इंजीनियरिंग खरीद और निर्माण (ईपीसी) निविदा मोड में अनिश्चितताओं को दूर करने के लिए, मदवार कार्यों के लिए अलग-अलग मात्रा के बिल (बीओक्यू) के लिए एक नया 'शेड्यूल जी-1' शामिल किया गया है।
- मध्यस्थ/डीएबी सदस्य/सैट सदस्य/मध्यस्थ(यों) की नियुक्ति और उन्हें देय शुल्क के लिए विवाद निवारण तंत्र हेतु मास्टर नीति जारी की गई है।
- परियोजना प्रबंधन सेवाओं (पीएमएस)/परियोजना पर्यवेक्षण सेवा एजेंसी (पीएसएसए) के अनुबंधों के मामले में माप, परीक्षण जाँच सीमा, सामग्री पासिंग और भुगतान आदि के लिए प्रक्रिया आदेश जारी किया गया है।
- परियोजनाओं को तेजी से पूरा करने के लिए कार्य निविदाओं की स्वीकृति के अधिकार को विभिन्न स्वीकृति प्राधिकरणों तक बढ़ा दिया गया है, जिसमें इंजीनियरिंग खरीद और निर्माण (ईपीसी) निविदाओं सहित सभी कार्य अनुबंधों के लिए मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण को पूर्ण शक्तियां शामिल हैं। परियोजनाओं के तेजी से निष्पादन के लिए मॉडल एसओपी-2018 के अन्य अधिकार भी फील्ड इकाइयों को सौंपे गए हैं।
- कार्य निविदाओं के लिए इलेक्ट्रॉनिक रिवर्स नीलामी (ई-आरए) को केवल वैकल्पिक बनाया गया है।
- वेब आधारित सीआरएस स्वीकृति निगरानी प्रणाली के लिए चार नए मॉड्यूल बनाए गए हैं जैसे-
- रेलवे की अतिरिक्त लाइनों और विचलन लाइनों (नई लाइनें/आमान परिवर्तन/दोहरीकरण आदि) को खोलना
- प्रमुख और महत्त्वपूर्ण पुलों का पुनर्निर्माण (नया, संशोधित)
- छोटे कार्यों की स्वीकृति : लेवल क्रॉसिंग (मैनिंग, अपग्रेडेशन, इंटरलॉकिंग, नई एलसी, शिफ्टिंग, एलएचएस)

यार्डों की रीमॉडलिंग

- रेलवे (यात्रियों के सार्वजनिक परिवहन के लिए खोलना) संशोधन नियम, 2024 के लिए राजपत्र अधिसूचना के संदर्भ में प्रधान मुख्य अभियंता द्वारा छोटे कार्यों को खोलने के लिए प्रक्रिया आदेश जारी किया गया है।
- ट्रैक का रखरखाव करने वालों के लिए मानदंड/मापदंडों के संबंध में संशोधित एमसीएनटीएम (ट्रैक मेंटेनर्स के लिए मैनपावर और लागत मानदंड) फॉर्मूला - 2024 जारी किया गया है।
- ट्रैक रखरखाव के लिए श्रमशक्ति/गतिविधियों की आउटसोर्सिंग के लिए व्यय (राजस्व) की एक नई प्राथमिक इकाई (प्रयोजन) 'पीयू-49' नाम से बनाई गई है।■

सड़क ऊपरी पुल (आरओबी)
सड़क निचले पुल (आरयूबी)



मानवयुक्त क्रॉसिंग को हटाना

718

आरओबी/आरयूबी का निर्माण

1024

विद्युतीकरण

3,210

रूट कि.मी.

का विद्युतीकरण किया गया है और भारतीय रेल के ब्राड गेज नेटवर्क का

97%

प्रतिशत तक विस्तार किया गया है।

गति शक्ति परियोजनाएँ

गति शक्ति मल्टी-मॉडल कार्गो टर्मिनल

कार्गो टर्मिनलों की स्थापना में उद्योग से निवेश को बढ़ावा देने के लिए, देश भर में 'गति शक्ति मल्टी-मॉडल कार्गो टर्मिनल' (जीसीटी) विकसित किए जा रहे हैं।

- अब तक, देश भर में **354** स्थानों (गैर-रेलवे भूमि पर 327 और रेलवे भूमि पर 27) की पहचान की गई है।
- दिनांक 31 अक्टूबर, 2024 तक, **91** जीसीटी शुरू किए गए हैं।

2024 में तीन आर्थिक गलियारों को मंजूरी

- ऊर्जा, खनिज और सीमेंट गलियारे;
- उच्च यातायात घनत्व मार्ग और
- रेल सागर गलियारे

इन तीन गलियारों के अंतर्गत कार्यान्वयन के लिए कुल **434** परियोजनाओं की योजना बनाई गई है। कैलेंडर वर्ष 2024 में, तीन आर्थिक गलियारों की कुल **434** परियोजनाओं में से कुल **58** परियोजनाओं को मंजूरी दी गई, जिनपर संयुक्त लागत लगभग **₹88,875** करोड़ और कुल ट्रैक की लंबाई लगभग 4,107 कि.मी. है।

ऊर्जा, खनिज और सीमेंट कॉरिडोर में **51** परियोजनाएँ हैं, जिनकी लंबाई **2,911** कि.मी. है और इनकी पूर्णता लागत **₹57,313** करोड़ है।

उच्च यातायात घनत्व वाले मार्गों में **5** परियोजनाएँ हैं, जिनकी लंबाई लगभग **830** कि.मी. है और इनकी लागत लगभग **₹11,280** करोड़ है।

रेल सागर कॉरिडोर में **2** परियोजनाएँ हैं, जिनकी कुल ट्रैक लंबाई लगभग **366** कि.मी. है और इनकी पूर्णता लागत लगभग **₹20,282** करोड़ है।

वर्ष 2024 में अब तक पूरी हुई परियोजनाएँ

योजना शीर्ष	कमीशनिंग (किमी)
नई लाइन	1158
आमान परिवर्तन	259
दोहरीकरण	2016
कुल	3433

भारतीय रेल ने दिनांक 1 अप्रैल, 2024 से अब तक कुल **3433** कि.मी. का काम पूरा कर लिया है, जिसमें 1158 कि.मी. नई लाइन, **259** कि.मी. आमान परिवर्तन और **2016** कि.मी. दोहरीकरण शामिल है।■

स्टेशन पुनर्विकास

- 'अमृत भारत स्टेशन योजना' के तहत पुनर्विकास के लिए **1337** स्टेशनों की पहचान की गई है।
- **1337** स्टेशनों में से **1198** स्टेशनों के लिए निविदाएं प्रदान की जा चुकी हैं तथा कार्य प्रारंभ हो चुका है। अन्य रेलवे स्टेशन निविदा प्रक्रिया तथा नियोजन के विभिन्न चरणों में हैं। देश भर में रेलवे स्टेशनों के पुनर्विकास से रोजगार सृजन में वृद्धि तथा आर्थिक विकास में सुधार के साथ अर्थव्यवस्था पर गुणात्मक प्रभाव पड़ेगा।
- छह रेलवे स्टेशनों अर्थात पश्चिम मध्य रेलवे के रानी कमलापति स्टेशन, पश्चिमी रेलवे के गांधीनगर कैपिटल स्टेशन, दक्षिण पश्चिमी रेलवे के सर एम. विश्वेश्वरैया टर्मिनल स्टेशन, पूर्वोत्तर रेलवे के गोमती नगर रेलवे स्टेशन का प्रथम चरण, उत्तर रेलवे के अयोध्या रेलवे स्टेशन तथा पूर्वी तटीय रेलवे के कटक रेलवे स्टेशन का विकास तथा संचालन किया जा चुका है।



दूरसंचार से सम्बन्धित कार्य

हाथी घुसपैठ पहचान प्रणाली (ईआईडीएस) : हाथियों से होने वाली दुर्घटनाओं को रोकने के लिए पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे (एनएफआर) में महत्त्वपूर्ण संवेदनशील स्थानों पर इस प्रणाली को लगाया गया है।

- इस उद्देश्य के लिए भारतीय रेल के एनएफआर, ईसीओआर, एसआर, एनआर, एसईआर, एनईआर और डब्ल्यूआर रेल क्षेत्रों को कवर करते हुए ₹**208.02** करोड़ की कुल लागत वाले कार्यों को मंजूरी दी गई है। इसके अलावा, **582.25** कि.मी.(एनएफआर-141 आरकेएमएस + ईसीओआर-349.4 आरकेएमएस + एसआर-55.85 आरकेएमएस + एनईआर-36 आरकेएमएस) पर काम सौंपा गया है। वर्तमान में यह प्रणाली **141** आरकेएमएस पर चालू हो चुकी है।

एनटीईएस के साथ एकीकृत कोच गाइडेंस सिस्टम (सीजीएस) और ट्रेन इंडिकेटर बोर्ड (टीआईबी) की निगरानी के लिए एक एप्लीकेशन का विकास : रेलवे बोर्ड ने सीजीएस और टीआईबी को आरडीएसओ विनिर्देश संशोधन-4 का अनुपालन करते हुए और एपीआई आधारित इंटरफेस का उपयोग करते हुए क्षेत्रीय रेलवे और क्रिस को एकीकृत करने की सलाह दी है। क्रिस ने एनटीईएस के साथ आईपीआईएस के एकीकरण की निगरानी के लिए एक एप्लीकेशन विकसित किया है।

केंद्रीकृत उद्घोषणा प्रणाली : पश्चिम मध्य रेलवे के अंतर्गत भोपाल मंडल और पूर्व मध्य रेलवे के अंतर्गत दीन दयाल उपाध्याय (डीडीयू) मंडल के सभी स्टेशनों पर केंद्रीकृत सार्वजनिक उद्घोषणा प्रणाली उपलब्ध कराई गई है।

भारतीय रेल में डिजिटल वीएचएफ सेट का उपयोग : लोको पायलट और गार्ड के बीच संचार। डिजिटल प्रौद्योगिकी आधारित वीएचएफ सेट से मिलने वाली सुविधाओं का लाभ उठाने के लिए रेलवे बोर्ड ने इस बात की मंजूरी दी है कि भारतीय रेल में केवल डिजिटल 5डब्ल्यू वॉकी-टॉकी सेट ही खरीदे जाएंगे।

सुरंग संचार प्रणाली : सुरंग संचार के प्रावधान के लिए परियोजना को विभिन्न रेलवे में शुरू किया गया है।

ऑप्टिकल फाइबर केबल (ओएफसी) : वित्त वर्ष 2023-24 में, भारतीय रेल ने नवंबर 2024 तक **1411** रूट कि.मी. (आरकेएम) ऑप्टिकल फाइबर केबल प्रदान की है। इस प्रकार, भारतीय रेल नेटवर्क का संचयी कुल लगभग **66588** आरकेएम तक पहुँच गया है। इसके अलावा, नवंबर 2024 तक **801** आरकेएम क्वाड प्रदान किए गए हैं, जिससे भारतीय रेल नेटवर्क कुल मिलाकर लगभग **66271** आरकेएम हो गया है।

रेलवे स्टेशनों पर वाई-फाई सुविधा का प्रावधान : अब तक **6112** स्टेशनों पर वाई-फाई सुविधा प्रदान की गई है।

रेलवे स्टेशनों पर क्लोज्ड सर्किट टेलीविजन (सीसीटीवी) : भारतीय रेल ने हाल्ट स्टेशनों को छोड़कर सभी स्टेशनों पर सीसीटीवी कैमरे लगाने को मंजूरी दे दी है। अब तक कुल **1051** स्टेशनों पर सीसीटीवी कैमरे लगाए जा चुके हैं।

डिजिटल इंडिया पहल – मानव संसाधन प्रबंधन प्रणाली (एचआरएमएस)

प्रचार श्रेणियों के लिए समुदाय आधारित आरक्षण रोस्टर : उचित सत्यापन, रिक्ति मूल्यांकन और डीएससी हस्ताक्षरों के साथ 5-स्तरीय सत्यापन के साथ ऑनलाइन रोस्टर बनाने का प्रावधान।

सभी कर्मचारियों के ई-सेवा रिकॉर्ड तैयार करना : कर्मचारी की पूरी आवाजाही को ट्रैक करने के लिए इसे व्यापक बनाया गया, ई-एसआर में प्रविष्टियों को स्वचालित रूप से अपडेट करने के लिए कार्यालय आदेशों से जोड़ा गया।

श्रमशक्ति नियोजन : 1.45 मिलियन पदों में से प्रत्येक के लिए एक व्यापक डेटाबेस और राजस्व पदों के सृजन, प्राथमिक इकाई के बाहर पदों का पुनर्वितरण, पदों का समर्पण आदि का प्रावधान।

नवीनीकृत स्थानांतरण मॉड्यूल : इसमें आवेदन से लेकर नई इकाइयों में ज्वाइनिंग रिपोर्ट तक सभी अंतर-रेलवे और अंतर-मंडल स्थानांतरण अनुरोध आवेदन, प्रशासनिक स्थानांतरण आदि शामिल हैं।

ड्यूटी पास : नवंबर 2024 से पूरे भारत में प्रायोगिक आधार पर ड्यूटी पास मॉड्यूल शुरू किया गया है।

गुड वर्क पोर्टल : कर्मचारियों के अच्छे काम को एचआरएमएस में जमा करने का प्रावधान है, जिसे गुड वर्क पोर्टल पर डाला जाएगा।■



डिजिटल पहल – यात्रियों के हाथों में सुविधा लाना

आरक्षित क्षेत्र में ई-टिकटिंग **86** प्रतिशत तक पहुँच गई है। अनारक्षित क्षेत्र में ई-टिकटिंग चालू वित्त वर्ष की शुरुआत में **28** प्रतिशत से बढ़कर अक्टूबर 2024 में लगभग **33** प्रतिशत हो गई है।

भारतीय रेल ने भी रिफंड प्रक्रिया में बदलाव किया है, जिससे पात्र मामलों में लगभग **98** प्रतिशत मामलों में 24 घंटे के भीतर रिफंड मिल सकता है।

भारतीय रेल के सभी काउंटरों पर डायनेमिक क्यूआर कोड आधारित भुगतान सक्षम किया गया है। यह सुविधा पार्सल कार्यालयों में भी फैलाई जा रही है और चालू वित्त वर्ष के अंत तक सभी पार्सल कार्यालय इसके दायरे में आ जाएंगे।

UTS ON MOBILE



अक्षय ऊर्जा
की प्रमुख उपलब्धियाँ

भारतीय रेल ने 2030 तक शुद्ध शून्य कार्बन उत्सर्जक बनने का लक्ष्य रखा है।

नवंबर 2024 तक, लगभग **487 मेगावाट** सौर संयंत्र (छत और जमीन दोनों पर) और लगभग **103 मेगावाट** पवन ऊर्जा संयंत्र चालू हो चुके हैं।

इसके अतिरिक्त, **100 मेगावाट** अक्षय ऊर्जा - चौबीसों घंटे (आरई-आरटीसी) भी प्रवाहित होने लगी है।



ट्रेन सेवाएं : यात्रियों की मांग के अनुसार बदलाव

वंदे भारत :

दिनांक 26 दिसंबर, 2024 तक, भारतीय रेल नेटवर्क पर कुल **136** वंदे भारत ट्रेनें चल रही हैं।

कैलेंडर वर्ष-2024 के दौरान, भारतीय रेल ने **62** वंदे भारत ट्रेनें शुरू कीं।

नमो भारत रैपिड रेल :

अहमदाबाद और भुज के बीच पहली नमो भारत रैपिड रेल दिनांक 17 सितंबर, 2024 को शुरू की गई है।

अमृत भारत सेवाएं :

अमृत भारत सेवाएं पूरी तरह से गैर-एसी ट्रेनें हैं। इनमें वर्तमान में **12** स्लीपर कोच और **8** सामान्य श्रेणी के कोच हैं। इनमें यात्रियों को उच्च गुणवत्ता वाली सेवाएं प्रदान की जा रही हैं।

कैलेंडर वर्ष-2024 के दौरान, **4** अमृत भारत एक्सप्रेस सेवाएं दरभंगा-आनंद विहार (टी) एक्सप्रेस और मालदा टाउन-एसएमवीटी बेंगलुरु एक्सप्रेस शुरू की गई हैं। आगे ऐसी और भी रेल सेवाएं शुरू करने की योजना बनाई जा रही है।

विशेष रेलगाड़ियाँ :

भारतीय रेल ने वर्ष 2024 के दौरान रिकॉर्ड संख्या में विशेष रेलगाड़ियां चलाईं।

होली और गर्मियों की भीड़ को देखते हुए, पिछले वर्ष के **6,896** ट्रिप की तुलना में इस वर्ष कुल **13,523** ट्रिप विशेष रेलगाड़ियाँ चलाई गईं।

पूजा/दीपावली/छठ के दौरान दिनांक अक्टूबर, 2024 से 30 नवंबर, 2024 के बीच विशेष रेलगाड़ियों की **7990** ट्रिप भी चलाई गई हैं।

भारत गौरव पर्यटक रेलगाड़ियाँ :

भारत गौरव पर्यटक रेलगाड़ियां थीम-आधारित पर्यटक सर्किट रेलगाड़ियां हैं जिनका उद्देश्य भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और शानदार ऐतिहासिक स्थलों का प्रदर्शन करना है।

जनवरी 2024 से दिसंबर 2024 तक भारत गौरव ट्रेन का संकलन	
ट्रिप की संख्या	यात्रियों की संख्या
158	104077



डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर

गलियारा	चलाई गई ट्रेनों की संख्या		जीटीकेएम (मिलियन में)		औसत गति (कि.मी. प्रति घंटा)
	अक्टूबर 2024 तक	संचयी (वित्त वर्ष 24-25)	अक्टूबर 2024 तक	संचयी (वित्त वर्ष 24-25)	
ईडीएफसी	5,915	41,054	11,088	73,022	44.6
डब्ल्यूडीएफसी	5,109	31,653	5643	33,255	51.3
कुल	11,024	72,617	16,731	1,06,277	

अक्टूबर 2024 तक



मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना

मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना के तहत **243** कि.मी. से अधिक मार्ग सेतु का निर्माण पूरा हो चुका है। इसके साथ ही **352** कि.मी. पियर का काम और **362** कि.मी. पियर फाउंडेशन का काम भी पूरा हो चुका है।

13 नदियों पर पुल बनाए गए हैं, और कई रेलवे लाइनों और राजमार्गों को पांच स्टील पुलों और दो पीएससी पुलों के माध्यम से पार किया गया है।

गुजरात में ट्रैक निर्माण तेजी से आगे बढ़ रहा है। आणंद, वडोडरा, सूरत और नवसारी जिलों में आरसी (प्रबलित कंक्रीट) ट्रैक बेड का निर्माण चल रहा है। आरसी ट्रैक बेड का **71** कि.मी. ट्रैक निर्माण पूरा हो चुका है, और मार्ग सेतु पर रेल की वेल्डिंग शुरू हो गई है।

महाराष्ट्र में, मुंबई बुलेट ट्रेन स्टेशन के लिए पहला कंक्रीट बेस-स्लैब **32** मीटर की गहराई पर सफलतापूर्वक डाला गया है। यह गहराई **10** मंजिला इमारत के बराबर है। बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स (बीकेसी) और शिल्फता के बीच **21** कि.मी. लंबी सुरंग पर काम चल रहा है, जिसमें मुख्य सुरंग निर्माण की सुविधा के लिए **394** मीटर की इंटरमीडिएट सुरंग (एडीआईटी) पूरी हो चुकी है।



पालघर जिले में न्यू ऑस्ट्रियन टनलिंग मेथड (एमएटीएम) का उपयोग करके सात पर्वतीय सुरंगों का निर्माण प्रगति पर है। गुजरात में एकमात्र पर्वतीय सुरंग पहले ही सफलतापूर्वक पूरी हो चुकी है।

विषयगत तत्वों और ऊर्जा-कुशल विशेषताओं के साथ डिज़ाइन किए गए गलियारे के साथ 12 स्टेशन तेजी से निर्माणाधीन हैं। ये यात्रियों के अनुकूल और ऊर्जा-सकारात्मक स्टेशन स्थायित्व को प्राथमिकता देते हुए विश्व स्तरीय यात्री अनुभव प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं।■

विशेष अभियान 4.0

कार्यस्थल की स्वच्छता और रेलवे स्टेशनों की सफाई पर ध्यान केंद्रित करते हुए भारतीय रेल में कुल **56,168** स्वच्छता अभियान चलाए गए।

इसमें **12.15** लाख वर्ग फुट जगह खाली कराई गई और **₹452.40** करोड़ का राजस्व अर्जित किया गया।

लंबित मामलों में कमी :

- **1065** सांसदों के संदर्भों का पूर्ण समाधान किया गया।
- राज्य सरकार के **138** संदर्भों को सफलतापूर्वक समाधान किया गया।
- **69** पीएमओ संदर्भों में से **65** संदर्भों को निपटाया गया।
- **139** संसदीय आश्वासनों में से **55** पूरे किए गए।
- **2.5** लाख लोक शिकायतों का समाधान किया गया।
- **1427** लोक शिकायत अपीलों का समाधान किया गया।

फाइल समीक्षा और प्रबंधन :

रिकॉर्ड प्रबंधन को सुव्यवस्थित करने के लिए **89,000** से अधिक पुरानी फाइलों को छांटना।

सोशल मीडिया सहभागिता :

3713 ट्वीट और कई रीपोस्ट किए गए, जिससे व्यापक सार्वजनिक रुचि पैदा हुई और स्वच्छता आंदोलन में भागीदारी बढ़ी।■





ट्रेनों का विस्तार

सामान्य और गैर-वातानुकूलित स्लीपर कोच का उपयोग करने वाले यात्रियों के लिए, मेल/एक्सप्रेस ट्रेनों की संरचना के संबंध में मौजूदा नीति के अनुसार, **22** कोचों वाली ट्रेन में **12** (बारह) सामान्य श्रेणी (जनरल क्लास) तथा स्लीपर क्लास गैर-वातानुकूलित कोच और **8** (आठ) एसी कोच होते हैं।

अनारक्षित कोच में यात्रा करने वाले यात्रियों के लिए, 2024 के दौरान एलएचबी (लिंक हॉफमैन बुश) कोच के साथ चलने वाली मेल/एक्सप्रेस ट्रेनों में **950** से अधिक जनरल क्लास कोच जोड़े गए हैं।

स्थायी आधार पर ट्रेन सेवाओं के विस्तार के लिए **875** से अधिक कोचों का उपयोग किया गया है।

आधुनिक एलएचबी कोच वाली अधिक ट्रेनों का संचालन

भारतीय रेल की उत्पादन इकाइयां अप्रैल-2018 से केवल एलएचबी कोच का उत्पादन कर रही हैं और आईसीएफ कोच वाली ट्रेनों को एलएचबी कोचों के साथ चलाने के लिए परिवर्तित किए जा रहे हैं।

2014 से नवंबर-2024 तक, **75** जोड़ी से अधिक ट्रेनों को इस प्रकार परिवर्तित किया गया है।



स्वास्थ्य एवं स्वच्छता

- ईट राइट प्रमाणन - भारतीय रेल ने भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) की ओर से शुरू की गई 'ईट राइट इंडिया' पहल के तहत उल्लेखनीय प्रगति की है। अब तक, **182** स्टेशनों को एफएसएसएआई ने 'ईट राइट' की मान्यता प्रदान की है।
- नमस्ते स्वास्थ्य ऐप - आपातकालीन स्थिति में पश्चिम रेलवे उपनगरीय यात्रियों के हित में दिनांक 16 दिसम्बर, 2024 को **'नमस्ते स्वास्थ्य ऐप'** लॉन्च किया गया है।

प्रधानमंत्री द्वारा लॉन्च किए गए **50** प्रधानमंत्री जन औषधि केंद्रों का और प्रसार किया जा रहा है।

एक स्टेशन एक उत्पाद

- स्टेशनों की संख्या **1906** है।
- इकाइयों/आउटलेट्स की संख्या **2170** है।



पूंजीगत व्यय

2024-25 के लिए कुल पूंजी व्यय **₹2,65,200** करोड़ है, जो बजट में आवंटित अब तक की सबसे अधिक राशि है।

स्वचालित ट्रेन सुरक्षा प्रणाली (कवच)



दक्षिण मध्य रेलवे पर 1465 रूट कि.मी. (आरकेएम) पर कवच संस्करण 3.2 की तैनाती के आधार पर, बहुत सारे अनुभव प्राप्त हुए। इसका उपयोग करके आगे और सुधार किए गए। अंत में, कवच विनिर्देश संस्करण 4.0 को 16.07.2024 को आरडीएसओ ने अनुमोदित किया।

भारतीय रेल पर स्वचालित ट्रेन सुरक्षा प्रणाली (कवच) कार्यान्वयन की वर्तमान स्थिति इस प्रकार है :

कवच एक स्वदेशी रूप से विकसित स्वचालित ट्रेन सुरक्षा (एटीपी) प्रणाली है। कवच एक अत्यधिक प्रौद्योगिकी गहन प्रणाली है, जिसके लिए उच्चतम क्रम (एसआईएल-4) के सुरक्षा प्रमाणन की आवश्यकता होती है।

कवच प्रणाली के कार्यान्वयन में निम्नलिखित प्रमुख गतिविधियां शामिल हैं :

- प्रत्येक स्टेशन, ब्लॉक सेक्शन पर स्टेशन कवच की स्थापना।
- पूरे ट्रैक की लंबाई में आरएफआईडी टैग लगाना।
- पूरे सेक्शन में टेलीकॉम टावर लगाना।
- ट्रैक के साथ ऑप्टिकल फाइबर केबल बिछाना।
- भारतीय रेल पर चलने वाले प्रत्येक लोकोमोटिव पर लोको कवच का प्रावधान।

कवच कार्यान्वयन के अगले चरण की योजना इस प्रकार है :

क्र. सं.	मद	प्रगति
1	ऑप्टिकल फाइबर केबल बिछाना	5133 कि.मी.
2	टेलीकॉम टावर लगाना	540 संख्या
3	स्टेशनों पर कवच का प्रावधान	523 संख्या
4	लोको में कवच का प्रावधान	707 लोको
5	ट्रैक साइड उपकरण लगाना	3,434 आरकेएम

10,000 इंजनों को सुसज्जित करने की परियोजना को अंतिम रूप दिया गया है। कवच से लैस करने के लिए **69** लोको शेड तैयार किए गए हैं।

लगभग **15000** आरकेएम के लिए कवच के ट्रैक साइड काम के लिए बोलियां आमंत्रित की गई हैं। इसमें भारतीय रेल के सभी जीक्यू, जीडी, एचडीएन और चिन्हित किए गए सेक्शन शामिल हैं।

कवच सिस्टम की आपूर्ति के लिए **3 ओईएम** को मंजूरी दी गई है। अधिक ओईएम के परीक्षण और अनुमोदन विभिन्न चरणों में हैं।

अब तक **9000** से अधिक तकनीशियनों, ऑपरेटरों और इंजीनियरों को कवच तकनीक पर प्रशिक्षित किया जा चुका है। इरिसेट के सहयोग से पाठ्यक्रम तैयार किए गए हैं।■

रिकॉर्ड माल लदान



जनवरी-24 से नवंबर-24 की अवधि के दौरान, भारतीय रेल पर राजस्व अर्जित करने वाला माल लदान **1473.05** मीट्रिक टन रहा है, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में **3.86** प्रतिशत अधिक है।■

कौशल भारत पहल में भारतीय रेल का योगदान

'मिशन कर्मयोगी' के अंतर्गत, राष्ट्रीय सिविल सेवा क्षमता निर्माण कार्यक्रम (एनपीसीएससीबी)में रेल मंत्रालय (एमओआर) ने 2024 में उल्लेखनीय प्रगति की है। आईजीओटी प्लेटफॉर्म पर प्रमुख प्रदर्शन संकेतक (केपीआई) निम्नलिखित उपलब्धियों को उजागर करते हैं :

प्रदर्शन संकेतक	दिनांक 31 दिसम्बर, 2024 तक	दिनांक 1 दिसम्बर, 2024 तक
ऑनबोर्ड किए गए रेल अधिकारियों की संख्या	8,43,087	11,92,495
न्यूनतम 1 कोर्स में नामांकित अधिकारियों की संख्या	48,824	5,15,532
कुल कोर्स नामांकन	2,13,642	42,42,409
कुल कोर्स पूर्ण	1,54.053	29,30,811

रेल मंत्रालय ने कर्मयोगी सप्ताह – दिनांक 19 अक्टूबर, 2024 से 25 अक्टूबर, 2024 तक राष्ट्रीय शिक्षण सप्ताह (एनएलडब्ल्यू) चलाया। इस दौरान भारतीय रेल (आईआर) ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। कुछ प्रदर्शन इस प्रकार हैं :

- एनएलडब्ल्यू के दौरान लगभग **33** प्रतिशत कोर्स नामांकन और पूर्णता भारतीय रेल से आई।
- एनएलडब्ल्यू के दौरान न्यूनतम 4 घंटे सीखने के लक्ष्य को पार करने वाले लगभग **40** प्रतिशत उपयोगकर्ता भारतीय रेल से थे।
- कर्मयोगी सप्ताह का लक्ष्य पूरा करने वाले शीर्ष **5** एमडीओ में से **4** एमडीओ भारतीय रेल से थे, जिसमें एनसीआर नंबर 1, एनडब्ल्यूआर नंबर 3, ईआर नंबर 4 और डब्ल्यूआर नंबर 5 पर था।
- पूर्वी रेलवे (ईआर) के **55,251** कर्मचारियों ने कम से कम 1 कोर्स पूरा किया। निकटतम दूसरे और तीसरे स्थान पर एनसीआर और डब्ल्यूआर **37.87** हजार और **37.12** हजार थे।
- एनएलडब्ल्यू के दौरान किए गए शीर्ष **10** पाठ्यक्रमों में से **2** पाठ्यक्रम भारतीय रेल से थे।
- रेलवे सीटीआई/जेडआरटीआई की ओर से **60** से अधिक लाइव वेबिनार/सेमिनार आयोजित किए गए।■

भर्ती और कार्यबल प्रबंधन

- रेल मंत्रालय ने समूह 'सी' पदों की विभिन्न श्रेणियों में भर्ती के लिए वर्ष 2024 से वार्षिक कैलेंडर प्रकाशित करने की प्रणाली शुरू की है।
- उम्मीदवारों के लिए निम्नलिखित तरीके से लाभ
  - हर साल इसके लिए पात्र बनने वालों को अवसर;
  - परीक्षाओं की निश्चितता;
  - तेज भर्ती प्रक्रिया, प्रशिक्षण और नियुक्तियां;
  - उम्मीदवारों के लिए अधिक अवसर;
- विभिन्न पदों को भरने के लिए जनवरी से दिसंबर 2024 के दौरान लगभग **92000** रिक्तियों के लिए दस केंद्रीकृत रोजगार अधिसूचनाएं (सीईएन) अधिसूचित की गई/ की जा रही हैं।■



भारतीय रेल की विरासत

- वर्तमान में, **80** विरासत स्टेशन और **78** भवन तथा संरचनाएं भारतीय रेल की प्रणाली में मौजूद हैं जिन्हें भारतीय रेल की वेबसाइट पर अपलोड किया गया है।
- सी-डैक, पुणे के सहयोग से पुस्तकों, तस्वीरों, मानचित्रों, दस्तावेजों आदि सहित राष्ट्रीय रेल संग्रहालय अभिलेखागार का डिजिटलीकरण किया जा रहा है। रेल विरासत के प्रति उत्साही लोग सभी डिजीटल दस्तावेजों को वेबसाइट 'इंडियन रेलवे आर्काइव-रेलवे हेरिटेज पोर्टल' www.railheritage.in पर पढ़ सकते हैं।
- राष्ट्रीय रेल संग्रहालय की अमूल्य संपत्तियों में से एक जॉन मॉरिस फायर इंजन (1914) ने दिनांक 11 फरवरी, 2024 को द स्टेट्समैन और वीसीसीआई द्वारा आयोजित **57वीं** स्टेट्समैन विंटेज और क्लासिक कार रैली में भाग लिया और इंडियन ऑयल की 'विरासत संरक्षण ट्रॉफी' (वर्ष का सर्वश्रेष्ठ पुनर्स्थापित वाहन) प्राप्त की।
- 18 अप्रैल को विश्व विरासत दिवस पर राष्ट्रीय रेल संग्रहालय में 'माउंटेन रेलवे' नामक एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया और भारत के दूसरे सबसे पुराने स्टीम लोकोमोटिव, रामगोटी (1862) की एक स्टार प्रदर्शनी आगंतुकों के लिए आयोजित की गई।
- रेल स्मृति चिन्हों के आपूर्तिकर्ताओं को सूचीबद्ध करने; रेल स्मारिका डिज़ाइन, विशिष्टताओं और कीमतों को केंद्रीकृत/मानकीकृत करने; और रेल स्मारिका दुकानों का प्रबंधन करने के लिए दिनांक 2 सितम्बर, 2024 को रेल स्मृति चिन्हों पर एक नई नीति तैयार की गई है।
- दृश्यों और परिदृश्य का बेहतर दृश्य पेश करने वाले विस्टाडोम कोचों जैसे दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे, कालका शिमला रेलवे, नीलगिरि माउंटेन रेलवे, कांगड़ा वैली रेलवे, मथेरन लाइट रेलवे और पाताल पानी कालाकुंड मार्ग को भारत के माउंटेन रेलवे में शामिल किया जा रहा है ताकि बेहतर यात्री अनुभव प्रदान किया जा सके और इन क्षेत्रों में पर्यटन को बढ़ावा मिल सके।
- दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे (डीएचआर) ने पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से घुम (भारत का सबसे ऊंचा रेलवे स्टेशन) और दार्जिलिंग रेलवे स्टेशनों पर एक महीने तक चलने वाले 'घुम महोत्सव' का आयोजन किया। यह महोत्सव दिनांक 13 नवंबर, 2024 से शुरू हुआ और 5 दिसंबर, 2024 को समाप्त हुआ जो डीएचआर दिवस भी है।
- वर्ष 1881 में निर्मित सबसे छोटा भाप इंजन 'बेबी सिवोक' अब गर्व से घूम स्टेशन पर प्रदर्शित किया गया है, जो पर्यटकों को रेलवे की समृद्ध विरासत के साथ एक ठोस जुड़ाव प्रदान करता है।
- उत्तर रेलवे के अंतर्गत वर्ष 1882 में बने काशी रेलवे स्टेशन को हेरिटेज रेलवे स्टेशनों की सूची में शामिल किया गया है।■



आरपीएफ की उपलब्धियाँ

ट्विटर और हेल्पलाइन नंबर पर सुनी गई शिकायतों का विवरण :

ट्विटर पर शिकायतों की संख्या	हेल्पलाइन नंबर पर शिकायतों की संख्या	कुल
19,590	3,35,720	3,55,310

नवम्बर, 2024 तक

रेलवे सुरक्षा को मजबूत करने के प्रयास

ऑपरेशन 'नन्हे फरिश्ते' (बच्चों का बचाव) : रेल मंत्रालय ने महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के सहयोग से अक्टूबर 2024 में एक संशोधित मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) जारी की।

ऑपरेशन 'नन्हे फरिश्ते' (बच्चों का बचाव) के तहत आरपीएफ द्वारा बचाए गए बच्चों का विवरण

आरपीएफ द्वारा बचाए गए बच्चों की संख्या
13,717

नवम्बर, 2024 तक

ऑपरेशन 'यात्री सुरक्षा' : यात्रियों की सुरक्षा संबंधी शिकायतों का निवारण।

आईपीसी मामलों की संख्या	गिरफ्तार लोगों की संख्या
3,702	4,158

नवम्बर, 2024 तक

ऑपरेशन 'अमानत' : यात्रियों के छूट गए सामान को सही व्यक्ति को सौंपने के मामले।

यात्रियों के छूट गए सामान की बरामदगी और उसकी वापसी के मामलों की संख्या	बरामद संपत्ति का मूल्य (₹ में)
36,026	64,22,55,731

नवम्बर, 2024 तक

ऑपरेशन 'जीवन रक्षा' : जिसमें यात्री जल्दी में चलती ट्रेन में चढ़ने/उतरने की कोशिश करता है और ट्रेन के पहिये के नीचे आने के जोखिम के साथ फिसल जाता है/गिर जाता है या जानबूझकर चलती ट्रेन के सामने आकर आत्महत्या करने की कोशिश करता है।

ट्रैक पर होने वाली मौतों को कम करने के लिए जीवन बचाना		
पुरुष	महिला	कुल
2,328	970	3,298

नवम्बर, 2024 तक

ऑपरेशन 'सेवा'

आरपीएफ द्वारा सहायता प्राप्त व्यक्तियों (बुजुर्ग/महिला/दिव्यांगजन/बीमार/घायल/शिशु) की संख्या
16,594

नवम्बर, 2024 तक

ऑपरेशन 'मातृशक्ति' : महिला आरपीएफ कर्मी ऑपरेशन मातृशक्ति के तहत उन गर्भवती महिलाओं की मदद करने के लिए आगे आती हैं, जिन्हें ट्रेन यात्रा के दौरान प्रसव पीड़ा होती है।

बच्चे के जन्म के दौरान महिलाओं को प्रदान की गई सहायता की संख्या		
ट्रेन में	परिसर में	कुल
102	61	163

नवम्बर, 2024 तक

ऑपरेशन 'एएएचटी' (मानव तस्करी के खिलाफ कार्रवाई) : दिनांक 19 मार्च, 2024 को, आरपीएफ ने आरपीएफ कर्मियों के लिए क्षमता निर्माण प्रशिक्षण आयोजन कार्यशालाएं प्रदान करके मानव तस्करी को रोकने के लिए राष्ट्रीय महिला आयोग (एनसीडब्ल्यू) के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

मानव तस्करी से बचाए गए लोगों की संख्या					गिरफ्तार तस्करों की संख्या
किशोर		वयस्क		कुल	
लड़के	लड़कियां	पुरुष	महिला		
761	61	50	10	882	278

नवम्बर, 2024 तक

ऑपरेशन 'उपलब्ध' : ऑपरेशन उपलब्ध के तहत, भारतीय रेल पर दलालों के खिलाफ आरपीएफ द्वारा नियमित अभियान चलाए जाते हैं और मौजूदा कानूनी प्रावधानों के अनुसार इसमें शामिल पाए जाने वाले लोगों पर कार्रवाई की जाती है।

(क) तौलिया फैलाने वालों/अनधिकृत प्रवेश/अधिकृत यात्रियों के प्रवेश का विरोध करने वालों के खिलाफ कार्रवाई।

रेलवे अधिनियम की धारा 155 के तहत दर्ज मामले	गिरफ्तार किए गए लोग	छूटने पर जुर्माना राशि
33,373	33,440	65,82,565

नवम्बर, 2024 तक

(ख) अवैध टिकट खरीदने के लिए कार्रवाई

दर्ज मामलों की संख्या	गिरफ्तार लोगों की संख्या	जब्त किए गए टिकटों की संख्या		जब्त किए गए टिकटों का मूल्य		ब्लॉक किए गए आईआरसीटीसी यूजर आईडी की संख्या
		आगामी यात्रा	पिछली यात्रा	आगामी यात्रा	पिछली यात्रा	
4353	5796	29,00,035	99,155	₹12.2 करोड़	₹39.5 करोड़	24,663

नवम्बर, 2024 तक

(ग) दिव्यांग यात्रियों के लिए आरक्षित कोचों में अनधिकृत रूप से यात्रा स्थान पर कब्जा करने वाले लोगों के खिलाफ कार्रवाई :

पंजीकृत मामलों की संख्या	गिरफ्तार लोगों की संख्या
86,895	87,866

नवम्बर, 2024 तक

ऑपरेशन 'रेल सुरक्षा' : रेलवे संपत्ति की सुरक्षा और संरक्षा के लिए आरपीएफ को अधिकृत किया गया है। आरपीएफ रेलवे संपत्ति की चोरी, हेराफेरी में शामिल अपराधियों पर मुकदमा चलाती है।

बुक की गई खेप + रेलवे सामग्री

पंजीकृत मामलों की संख्या	बरामद की गई संपत्ति का मूल्य	गिरफ्तार किए गए लोगों की संख्या
5353	₹7.9 करोड़	9,785

नवम्बर, 2024 तक

ऑपरेशन सतर्क : इस ऑपरेशन का उद्देश्य अन्य कानून प्रवर्तन एजेंसियों को उनके काम में सहायता करना है, जिसके तहत आरपीएफ तंबाकू उत्पाद, शराब उत्पाद, एफआईसीएन/बेहिसाब सोना/बेहिसाब नकदी/बेहिसाब अन्य कीमती धातु/तस्करी का सामान/हथियार तथा गोला-बारूद/विस्फोटक और प्रतिबंधित दवाओं की बरामदगी में उनकी सहायता करती है।

तम्बाकू उत्पाद			शराब उत्पाद			एफआईसीएन/बेहिसाब सोना/नकदी/अन्य तस्करी के सामान आदि की बरामदगी		
मामले जिनका पता चला	मूल्य	गिरफ्तार लोग	मामले जिनका पता चला	मूल्य	गिरफ्तार लोग	मामले जिनका पता चला	मूल्य	गिरफ्तार लोग
94	₹3.4 करोड़	46	2020	₹2.4 करोड़	1,332	62	₹24.96 करोड़	48

नवम्बर, 2024 तक

ऑपरेशन 'दूसरा': यह अभियान रेलवे परिसरों और ट्रेनों में अनधिकृत रूप से फेरी लगाने और बेचने के खतरे के खिलाफ कार्रवाई के लिए शुरू किया गया है।

पंजीकृत मामलों की संख्या	गिरफ्तार किए गए लोगों की संख्या
2,41,923	2,42,266

नवम्बर, 2024 तक

ऑपरेशन 'नारकोस' : 'ऑपरेशन नार्कोस' के तहत आरपीएफ ने अपराधियों को गिरफ्तार किया और आगे की कानूनी कार्रवाई के लिए अधिकार प्राप्त एजेंसियों को सौंप दिया।

एनडीपीएस की बरामदगी

पता लगाए गए मामलों की संख्या	बरामद की गई एनडीपीएस की कीमत	गिरफ्तार किए गए लोगों की संख्या
1295	₹63.7 करोड़	1097

नवम्बर, 2024 तक

ऑपरेशन 'वाइलेप' : इस अभियान के तहत आरपीएफ ने रेलवे के जरिए वन्यजीवों के अवैध व्यापार में शामिल तस्करों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की है।

पता लगाए गए मामलों की संख्या		गिरफ्तार किए गए लोगों की संख्या
जीव-जंतु	वनस्पति	
35	18	21

आम संसदीय चुनाव : 2024 के दौरान, आरपीएफ ने ₹39 करोड़ मूल्य की बेहिसाबी नकदी, ड्रग्स/एनडीपीएस (गांजा/चरस, तंबाकू), प्रतिबंधित सामान (शराब), बुलियन (सोना, चांदी आदि), अवैध हथियार/गोला-बारूद, अन्य सामान (सिगरेट, पान मसाला आदि) जब्त किए।

ऑपरेशन 'भूमि' : आरपीएफ रेलवे के सहयोगी विभागों को 'ऑपरेशन भूमि' के तहत रेलवे की भूमि को अवैध अतिक्रमण से मुक्त करने में सहायता करती है।

अभियानों की संख्या	स्थान सहित अतिक्रमण से मुक्त की गई इकाइयां
1119	13605

नवम्बर, 2024 तक

मेरी सहेली पहल :

- आरपीएफ ने लंबी दूरी की ट्रेनों में अपनी संपूर्ण यात्रा यानी आरंभिक स्टेशन से गंतव्य स्टेशन तक अकेले यात्रा करने वाली महिला यात्रियों को बेहतर सुरक्षा प्रदान करने के लिए यह पहल शुरू की है।
- इस पहल की उपलब्धियों और कमियों का विश्लेषण करने के लिए महिला यात्रियों से फीडबैक भी लिया जाता है, ताकि इसे और बेहतर बनाया जा सके।
- महिलाओं के लिए आरक्षित डिब्बों में पुरुष यात्रियों के प्रवेश के खिलाफ लगातार अभियान चलाए जाते हैं।

नियम की धारा 162 (अनधिकृत रूप से महिलाओं के लिए आरक्षित ट्रेन या अन्य स्थान में प्रवेश करना) के तहत की गई कार्रवाई

पंजीकृत मामलों की संख्या	गिरफ्तार किए गए लोगों की संख्या
92405	95146

नवम्बर, 2024 तक

खेल

पेरिस ओलंपिक 2024 में भारतीय रेल का जलवा

पेरिस ओलंपिक में रेलवे के **तीन** खिलाड़ियों ने पदक जीते।



अमन सहरावत
कांस्य (कुश्ती)



स्वप्निल कुसाले
कांस्य (निशानेबाजी)



अमित रोहिदास
कांस्य (हॉकी)

रेल पर्यटन व साहित्य को एक साथ संजोए

रेल मंत्रालय द्वारा
विगत 68 वर्षों से भी
अधिक समय से प्रकाशित मासिक पत्रिकाओं

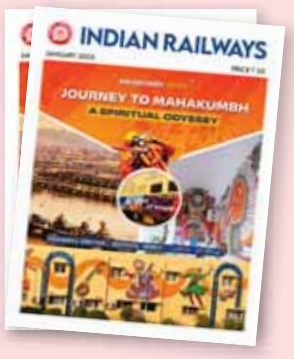
अब **ई-पत्रिका** भी उपलब्ध



भारतीय रेल
(हिन्दी)

की सदस्यता अब
ऑनलाइन
भी उपलब्ध

विज़िट करें



Indian Railways
(English)

www.irctctourism.com/IRBRmag/#/home/hn

दरें एवं शर्तें लागू

69वें अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार 2024 समारोह का भव्य आयोजन

रेल मंत्री ने 101 रेल कर्मियों को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए किया सम्मानित

22 क्षेत्रीय रेलवे एवं उत्पादन इकाईयाँ भी सम्मानित



69वें अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार समारोह में रेल कर्मियों को सम्मानित करते हुए रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव, मंच पर उपस्थित हैं रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सतीश कुमार एवं अन्य रेलवे बोर्ड के सदस्यगण

केंद्रीय रेल, सूचना एवं प्रसारण, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने दिनांक 21 दिसम्बर, 2024 को नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम् में 101 रेल कर्मियों को 69वें अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार तथा विभिन्न श्रेणियों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले 22 क्षेत्रीय रेलवे एवं उत्पादन इकाईयों को शील्ड प्रदान की। इस समारोह में रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सतीश कुमार, रेलवे बोर्ड के सदस्य तथा विभिन्न क्षेत्रीय रेलवे एवं उत्पादन इकाईयों के महाप्रबंधक उपस्थित रहे।

पुरस्कार और शील्ड प्रदान करने के बाद उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए रेल मंत्री श्री वैष्णव ने सभी पुरस्कार विजेताओं को उनके असाधारण कार्यों और प्रयासों के लिए बधाई दी। उन्होंने पिछले एक दशक में भारतीय रेल में हुई परिवर्तनकारी प्रगति को रेखांकित किया। उन्होंने निर्माण की तीव्र गति, कश्मीर से कन्याकुमारी रेल लिंक जैसी परियोजनाओं को पूरा करने और लंबित पूर्वोत्तर कनेक्टिविटी पहलों पर जोर दिया। 2025 तक 100 प्रतिशत विद्युतीकरण के लक्ष्य के साथ विद्युतीकरण के प्रयासों में तेजी आई है, जबकि वंदे भारत, नमो भारत और माल ढुलाई गलियारों जैसी परियोजनाओं ने रफ्तार पकड़ी है। कवच सुरक्षा प्रणाली को बड़े पैमाने पर लागू किया गया है।

श्री वैष्णव ने स्टेशन पुनर्विकास में उल्लेखनीय प्रगति, गंभीर दुर्घटनाओं के मामलों में पर्याप्त कमी (345 से 90 तक) और शिकायतों से मुक्त कुशल भर्ती प्रक्रिया, 1.5 लाख पदों को भरने को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि स्वच्छता की दिशा में उठाए गए कदमों ने सराहना बटोरी है, जिसमें विपक्षी नेताओं द्वारा की गई प्रशंसा भी शामिल है तथा एक नया सुपर ऐप जल्द ही यात्रियों के अनुभव में क्रांतिकारी बदलाव लाने वाला है। श्री वैष्णव ने सुरक्षा, रखरखाव, गुणवत्ता और प्रशिक्षण में प्रयासों को तीन गुना

बढ़ाने, बुनियादी ढाँचे को आधुनिक बनाने और यात्रियों को विश्व स्तरीय अनुभव प्रदान करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने जमीनी स्तर से फीडबैक को शामिल करते हुए रखरखाव में नवाचार पर महत्त्वपूर्ण रूप से ध्यान देने की घोषणा की, जिसमें उद्योग सहकारिता, उन्नत निरीक्षण प्रणालियां तथा अधिकारियों और तकनीशियनों के लिए बेहतर प्रशिक्षण शामिल है। जीरो डिरेलमेंट क्षेत्रीय रेलवे जैसी पहलों को शील्ड और वित्तीय पुरस्कारों से पुरस्कृत किए जाने सहित सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता बनी हुई है। उन्होंने सतत प्रगति सुनिश्चित करने के लिए आधुनिक तकनीक, नीतिगत सुधारों और संरचनात्मक परिवर्तनों के एकीकरण पर जोर दिया। 'राष्ट्र प्रथम, सदैव प्रथम' के लोकाचार पर विचार करते हुए श्री वैष्णव ने रेल को उत्कृष्टता का प्रतीक बनाए रखने के लिए प्रत्येक नागरिक, विशेष रूप से वंचितों की कुशलता और देखभाल के साथ सेवा करते हुए अद्वितीय टीमवर्क और अथक प्रयास करने का आह्वान किया। उन्होंने अगले साल से उत्कृष्ट एसएमक्यूटी (सर्वाधिक सुरक्षित, रखरखाव, गुणवत्ता और प्रशिक्षण) प्रथाओं के माध्यम से रेलवे की कार्य संस्कृति में उत्कृष्टता लाने के लिए शील्ड के साथ वित्तीय पुरस्कारों की भी घोषणा की।

रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सतीश कुमार ने अपने स्वागत भाषण में भारत में रेल यात्रियों को विश्व स्तरीय यात्रा के अनुभव के साथ-साथ किफायती रेल सेवाएं प्रदान करने की भारतीय रेल की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि गति, आराम और सुरक्षा के सिद्धांतों में उत्कृष्टता हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। हम यात्री अनुभव को बेहतर बनाने के लिए अत्याधुनिक तकनीक को शामिल कर रहे हैं। सुरक्षा के महत्त्व पर जोर देते हुए उन्होंने सतर्कता की संस्कृति विकसित करने के लिए रेल अधिकारियों की प्रशंसा की।

अमृत भारत स्टेशन जैसी परियोजनाएँ लिफ्ट, एस्केलेटर और दिव्यांगजनों के अनुकूल बुनियादी ढाँचे सहित विश्व स्तरीय सुविधाओं के साथ स्टेशनों को बदल रही हैं। श्री कुमार ने रेलवे के भीतर बेजोड़ टीमवर्क की सराहना करते हुए इसे अपने संचालन का सबसे महत्त्वपूर्ण भाग करार दिया और बड़े पैमाने पर परियोजनाओं को क्रियान्वित करने में सच्चे नेतृत्व की भूमिका को रेखांकित किया। सभी को एक साथ काम करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने भविष्य के मानक निर्धारित करते हुए समकालीन मांगों को पूरा करने के लिए आधुनिकीकरण और सुरक्षा के रेलवे के मिशन को दोहराया। उन्होंने कहा कि रेलवे निर्बाध गति, आधुनिकीकरण और भारत के लोगों की सेवा के प्रति समर्पण के माध्यम से उत्कृष्टता और प्रगति का प्रतीक है।

यहां पर उल्लेखनीय है कि भारतीय रेल द्वारा हर साल अपने कर्मचारियों को अति विशिष्ट रेल पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। ये पुरस्कार दो श्रेणियों में प्रदान किए जाते हैं, व्यक्तिगत पुरस्कार, साथ ही सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले रेलवे मंडल को शील्ड प्रदान की जाती है। व्यक्तिगत पुरस्कार भारतीय रेल को अधिक कुशल, सुरक्षित और यात्री-अनुकूल संगठन बनाने की दिशा में रेल कर्मियों के समर्पण, कड़ी मेहनत और असाधारण योगदान की सराहना करने और जश्न मनाने के मंच का कार्य करते हैं। विभिन्न श्रेणियों में शील्ड पुरस्कार भारतीय रेल के समग्र प्रदर्शन में उनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों और योगदान की प्रशंसा करते हुए प्रदान किए जाते हैं।■



69वें अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार समारोह में पुरस्कार विजेताओं, रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सतीश कुमार, सुश्री रूपा श्रीनिवासन, सदस्य वित्त, श्री नवीन गुलाटी, सदस्य अवसंरचना, श्री बृजमोहन अग्रवाल, सदस्य कर्षण, श्री हितेन्द्र मल्होत्रा, सदस्य परिचालन एवं व्यवसाय विकास, सुश्री अरूणा नायर, सचिव एवं अन्य उच्च अधिकारियों के संग रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव

रेल मंत्री से
शील्ड प्राप्त करते हुए महाप्रबंधक और वरिष्ठ अधिकारीगण



व्यापक स्वास्थ्य देखभाल शील्ड
दक्षिण एवं उत्तर पश्चिम रेलवे (संयुक्त रूप से)



सुरक्षा शील्ड
दक्षिण रेलवे



सिविल इंजीनियरिंग शील्ड
दक्षिण मध्य, पश्चिम एवं दक्षिण रेलवे (संयुक्त रूप से)



चल स्टॉक शील्ड (पूर्ववर्ती यांत्रिक इंजीनियरी शील्ड)
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे



बिजली इंजीनियरी शील्ड
मध्य एवं पूर्व तट रेलवे (संयुक्त रूप से)



सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियरी शील्ड
उत्तर एवं दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे (संयुक्त रूप से)



भंडार शील्ड
मध्य रेल



यातायात परिवहन शील्ड
मध्य रेल



लेखा और वित्त प्रबंधन शील्ड
पश्चिम मध्य रेलवे



वाणिज्यिक शील्ड
पूर्व रेलवे



सिविल इंजीनियरिंग निर्माण शील्ड
मध्य, दक्षिण मध्य और पूर्व मध्य रेलवे (संयुक्त रूप से)



कार्मिक प्रबंधन शील्ड
पश्चिम मध्य रेलवे



सर्वोत्तम उत्पादन इकाई शील्ड
रेल डिब्बा कारखाना एवं चितरंजन रेल इंजन कारखाना
(संयुक्त रूप से)



पर्यावरण एवं स्वच्छता शील्ड
मध्य रेल



सर्वोत्तम कारखाना (चल स्टॉक) शील्ड
गोल्डन रॉक वर्कशॉप, दक्षिण रेलवे



रनिंग रूम शील्ड
प्रयागराज रनिंग रूम, प्रयागराज मंडल
उत्तर मध्य रेलवे



बिक्री प्रबंधन शील्ड
पूर्व रेलवे



समपार और ऊपरी-निचले सड़क पुल संरक्षा कार्य संबंधी शील्ड
पश्चिम रेलवे



संरक्षा शील्ड
पूर्वोत्तर रेलवे



गोविंद वल्लभ पंत शील्ड
पूर्वोत्तर एवं मध्य रेलवे (संयुक्त रूप से)



रेल मदद शील्ड
पूर्वोत्तर रेलवे



गैर-किराया राजस्व शील्ड
पश्चिम रेलवे



समारोह में रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए कलाकार

69वें अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार-2024 के विजेताओं का कोटि-वार विवरण

नए नवोन्मेष/कार्रवाई/प्रक्रिया के परिणामस्वरूप मितव्ययिता एवं व्यय, उत्पादकता में सुधार, आयात प्रतिस्थापन आदि

क्र. सं.	क्षेत्रीय रेलवे/उत्पादन इकाइयाँ/रेलवे बोर्ड	अधिकारी का नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम
1	दक्षिण पश्चिम रेलवे	दिनेश एन गोलेनवार	तकनीशियन ग्रेड–I (विद्युतीय)
2	रेल पहिया कारखाना	मुथुकुमार जेबराजन	वरिष्ठ तकनीशियन
3	दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे	राजेश कुमार तिवारी	सीनियर सेक्शन इंजीनियर
4	डीजल लोको आधुनिकीकरण कारखाना	कृपाल सिंह	सीनियर इंजीनियर (आईटी)
5	इंटीग्रल कोच फैक्टरी	मुरुगेसन एम	वरिष्ठ सेक्शन अभियंता
6	दक्षिण रेलवे	वी. मंजुनाथ यादव	वरिष्ठ मंडल बिजली अभियंता
7	दक्षिण मध्य रेलवे	एंथोनी दोराई राज	मुख्य वाणिज्यिक निरीक्षक
8	दक्षिण रेलवे	टी. एम. गोपालकृष्णन	सीनियर सेक्शन अभियंता
9	रेल पहिया कारखाना, बेला	अम्बेश मणि त्रिपाठी	उप मुख्य यांत्रिक अभियंता
10	दक्षिण मध्य रेलवे	जावडी वेंकट अनुशा	वरिष्ठ मंडल अभियंता
11	अनुसंधान अभिकल्प एवं मानक संगठन	श्री अभिषेक कुमार गौतम	निदेशक
12	उत्तर रेलवे	अंकुर सिंह	यातायात निरीक्षक
13	मध्य रेलवे	हेमन्त जिन्दल	उप मुख्य सतर्कता अधिकारी
14	पश्चिम रेलवे	शिशिर कुमार राउल	अतिरिक्त मुख्य स्वास्थ्य निदेशक
15	उत्तर रेलवे	संदीप कुमार सिंह	उप मुख्य सामग्री प्रबंधक

व्यक्तिगत सुरक्षा की अनदेखी करते हुए सराहनीय कार्य, जिससे रेलों पर जान–माल की सुरक्षा संभव हुई

क्र. सं.	क्षेत्रीय रेलवे/उत्पादन इकाइयाँ/रेलवे बोर्ड	अधिकारी का नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम
16	पूर्व रेलवे	जीतेन्द्र प्रसाद सिंह	लोको पायलट (यात्री)
17	दक्षिण पश्चिम रेलवे	शिवानंद टी.	हेड कांस्टेबल
18	पूर्व रेलवे	तापस साधुखान	लोको पायलट (मेल/एक्सप्रेस)
19	पूर्व मध्य रेलवे	श्याम सुंदर प्रसाद	पॉइंटस मैन–बी
20	पूर्वोत्तर सीमा रेलवे	राज नारायण कुमार	लोको पायलट (गुड्स)
21	दक्षिण पूर्व रेलवे	गोपबंधु सेठी	वरिष्ठ सेक्शन अभियंता
22	दक्षिण मध्य रेलवे	रामबाबू वविलापल्ली	वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक
23	पूर्व रेलवे	रौशन कुमार	रेलपथ अनुरक्षक ग्रेड-IV
24	उत्तर मध्य रेलवे	विजेंद्र कुमार मीणा	पॉइंट्स मैन–ए
25	दक्षिण रेलवे	तिजो कुरियाकोस	वरिष्ठ तकनीशियन
26	दक्षिण रेलवे	गिरधारी प्रसाद गोंड	लोको पायलट (गुड्स)
27	दक्षिण रेलवे	जोबर अली	स्टेशन अधीक्षक
28	पूर्वोत्तर सीमा रेलवे	राहुल कुमार	वरिष्ठ सहायक लोको पायलट
29	उत्तर रेलवे	सचिन कुमार	लोको पायलट (गुड्स)
30	दक्षिण पूर्व रेलवे	कमलेश राय	लोको पायलट (यात्री)
31	पूर्व रेलवे	उत्पल मंडल	सहायक उप निरीक्षक

आमदनी बढ़ाने, बिना टिकट यात्रा, चोरी रोकने आदि के सम्बन्ध में विशेष प्रयास

क्र. सं.	क्षेत्रीय रेलवे / उत्पादन इकाइयाँ / रेलवे बोर्ड	अधिकारी का नाम (श्री / श्रीमती / सुश्री)	पदनाम
32	पूर्व तट रेलवे	एन. हरिप्रिया	मुख्य वाणिज्य निरीक्षक
33	उत्तर मध्य रेलवे	पंकज कुमार रजक	वाणिज्य निरीक्षक
34	दक्षिण रेलवे	एस. नंदकुमार	उप मुख्य टिकट निरीक्षक
35	पश्चिम रेलवे	विजय कुमार	वरिष्ठ चल लेखा निरीक्षक
36	उत्तर पश्चिम रेलवे	राकेश कुमार चतुर्वेदी	चल टिकट निरीक्षक
37	पूर्व मध्य रेलवे	संजीव कुमार	वरिष्ठ वाणिज्यिक सह आरक्षण लिपिक
38	पूर्व रेलवे	बलयोगेश्वर प्रसाद	मुख्य वाणिज्य निरीक्षक
39	मध्य रेलवे	सुधा वेदप्रकाश द्विवेदी	चल प्रधान / टिकट परीक्षक
40	पश्चिम रेलवे	मंजू मीना	वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक
41	पूर्वोत्तर रेलवे	एस. एस. रहमान	वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रभंधक
42	दक्षिण पूर्व रेलवे	विकास कुमार	वरिष्ठ मण्डल वाणिज्य प्रबंधक
43	उत्तर रेलवे	शशांक भट्ट	मंडल वित्त प्रबंधक
44	उत्तर पश्चिम रेलवे	अशोक कुमार मीणा	उप वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखाधिकारी
45	दक्षिण रेलवे	बूपतिराजा एम.	वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक
46	रेलवे बोर्ड	बी. एस. किरण	निदेशक
47	पूर्व तट रेलवे	प्रदीप कुमार झा	प्रोटोकॉल अधिकारी
48	रेलवे बोर्ड	मृदुल मित्तल	विशेष कार्य अधिकारी (टिकिट चेकिंग)

परिचालन, सुरक्षा और संरक्षा, परिसंपत्तियों के बेहतर अनुरक्षण और उपयोगिता सुधार के लिए किए गए अनुकरणीय कार्य

क्र. सं.	क्षेत्रीय रेलवे / उत्पादन इकाइयाँ / रेलवे बोर्ड	अधिकारी का नाम (श्री / श्रीमती / सुश्री)	पदनाम
49	पूर्व रेलवे	रोहित रंजन	वरिष्ठ मंडल यांत्रिक अभियंता
50	पश्चिम मध्य रेलवे	वांछित खरे	वरिष्ठ मण्डल विद्युत अभियंता
51	दक्षिण मध्य रेलवे	सुमित शर्मा	उप मुख्य परिचालन प्रबंधक
52	उत्तर रेलवे	भूपेंद्र	रेल पथ अनुरक्षक ग्रेड-I
53	उत्तर पश्चिम रेलवे	कमलेश कुमार कुमावत	वरिष्ठ अनुभाग अभियंता
54	पश्चिम रेलवे	नलिन लोचन गुप्ता	वरिष्ठ मंडल बिजली अभियंता
55	पूर्व मध्य रेलवे	अन्जय तिवारी	वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक
56	उत्तर रेलवे	अमर सिंह मीना	वरिष्ठ मंडल अनुभाग अभियंता
57	पूर्वोत्तर रेलवे	बलराम	वरिष्ठ कोचिंग डिपो अधिकारी
58	पश्चिम मध्य रेलवे	दानिश शहाब	वरिष्ठ खंड अभियंता
59	मध्य रेलवे	मिलिन्द एस खडक्कर	परिवहन निरीक्षक (मुख्यालय)
60	मध्य रेल्वे	राहुल अग्रवाल	वरिष्ठ मंडल अभियंता
61	पूर्व तट रेलवे	सुप्रभात मित्रा	तकनीशियन ग्रेड-II
62	पश्चिम रेलवे	शुचिता अरोड़ा	मंडल विद्युत अभियंता
63	रेलवे बोर्ड	अमित कुमार शर्मा	सहायक सुरक्षा आयुक्त
64	मध्य रेलवे	संजीव कौतीक पाटील	सीनियर टेक्नीशियन
65	पूर्व रेलवे	मोहम्मद नासिर	वरिष्ठ मंडल सिग्नल एवं दूरसंचार अभियंता
66	पूर्वोत्तर रेलवे	मिथुन कुमार	तकनीशियन ग्रेड-III
67	रेलवे बोर्ड	अपराजिता राय	निदेशक
68	मध्य रेलवे	पवन निना फिरके	सहायक / सी एण्ड डब्ल्यू
69	उत्तर मध्य रेलवे	दीपा कुमारी	सहायक लोको पायलट
70	पश्चिम रेलवे	नरेन्द्र कुमार	वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक

परियोजनाओं आदि को रिकॉर्ड समय में पूरा करना

क्र. सं.	क्षेत्रीय रेलवे / उत्पादन इकाइयाँ / रेलवे बोर्ड	अधिकारी का नाम (श्री / श्रीमती / सुश्री)	पदनाम
71	उत्तर रेलवे	अभिषेक चौधरी	उप मुख्य अभियंता
72	पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे निर्माण	अजय कुमार वर्मा	उप मुख्य अभियंता
73	पूर्व रेलवे	हेमंत कुमार	उप मुख्य अभियंता
74	पश्चिम रेलवे	श्याम सुन्दर शर्मा	मंडल सिग्नल और दूरसंचार अभियंता
75	उत्तर पश्चिम रेलवे	विक्रम मीना	उप मुख्य अभियंता
76	दक्षिण पूर्व रेलवे	अक्षय कुमार नायक	मंडल सिग्नल एवं दूरसंचार अभियंता
77	रेल कोच फैक्टरी	जसविंदर सिंह	सीनियर सेक्शन अभियंता
78	दक्षिण मध्य रेलवे	पी. आदिनारायण	वरिष्ठ सेक्शन अभियंता
79	दक्षिण पूर्व रेलवे	रामा चन्द्र पात्र	कनिष्ठ अभियंता
80	दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे	हरीश कुमार बंजारे	वरिष्ठ सेक्शन अभियंता
81	पश्चिम रेलवे	प्रशांत सिंह	उप मुख्य अभियंता
82	मध्य रेलवे	विजय मशीदकर	मुख्य डिपो सामग्री अधीक्षक
83	दक्षिण पूर्व रेलवे	अभिषेक कुमार	कनिष्ठ अभियंता
84	चितरंजन रेल इंजन कारखाना	अनुप कुमार महतो	वरिष्ठ अनुभाग अभियंता
85	दक्षिण मध्य रेलवे	कमरापु विनोद	सीनियर सेक्शन अभियंता
86	पूर्व मध्य रेलवे	कुंज बिहारी लाल	वरिष्ठ अनुभाग अभियंता

राष्ट्रीय / अंतरराष्ट्रीय मान्यता के लिए खेल में उत्कृष्ट प्रदर्शन

क्र. सं.	क्षेत्रीय रेलवे / उत्पादन इकाइयाँ / रेलवे बोर्ड	अधिकारी का नाम (श्री / श्रीमती / सुश्री)	पदनाम
87	उत्तर मध्य रेलवे	गुरजीत कौर	सहायक कार्मिक अधिकारी
88	दक्षिण पूर्व रेलवे	मिथुन मंजूनाथ	कार्यालय अधीक्षक

अन्य क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन

क्र. सं.	क्षेत्रीय रेलवे / उत्पादन इकाइयाँ / रेलवे बोर्ड	अधिकारी का नाम (श्री / श्रीमती / सुश्री)	पदनाम
89	दक्षिण रेलवे	नंदिनी जगदीसन	मुख्य नर्सिंग अधीक्षक
90	उत्तर रेलवे	रशीद मलिक	वरिष्ठ खंड अभियंता
91	उत्तर रेलवे	मनोज कुमार	वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी
92	पूर्व मध्य रेलवे	प्रवीण रंजन	लेखा सहायक
93	दक्षिण पश्चिम रेलवे	राजा	तकनीशियन ग्रेड-III
94	दक्षिण पश्चिम रेलवे	श्री श्रीजीत जे बी	ट्रैक मेंटेनर ग्रेड-IV
95	उत्तर मध्य रेलवे	मनमोहन मिश्र	ट्रैक मेंटेनर ग्रेड-III
96	पूर्वोत्तर रेलवे	प्रिंस कुमार कन्नौजिया	रेल पथ अनुरक्षक ग्रेड-IV
97	उत्तर रेलवे	रोहित श्रीवास्तव	वरिष्ठ मंडल अभियंता
98	उत्तर रेलवे	विशाल आर. डेकाटे	वरिष्ठ खंड अभियंता
99	रेलवे बोर्ड	अन्विता सिन्हा	कार्यकारी निदेशक
100	उत्तर रेलवे	उल्लास कुमार	उप मुख्य कार्मिक अधिकारी
101	रेलवे बोर्ड	अभिषेक जागावत	संयुक्त निदेशक

क्षेत्रीय रेल एवं उत्पादन इकाइयों के समाचार

पश्चिम रेलवे ने किया स्वास्थ्य संबंधी 'नमस्ते हेल्थ' ऐप लॉन्च



पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री अशोक कुमार मिश्र ने हाल ही में चर्चगेट स्टेशन कॉनकोर्स में 'नमस्ते हेल्थ' ऐप लॉन्च किया। नमस्ते हेल्थ ऐप एक अनूठा स्वास्थ्य प्लेटफॉर्म है जो स्वास्थ्य संबंधी आपात स्थितियों के प्रबंधन के लिए संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र प्रदान करता है और तत्काल वीडियो टेली-परामर्श का उपयोग करके मरीज को नजदीकी डॉक्टरों और अस्पतालों से जोड़ता है, जो मरीज को तुरंत यह बताने में सक्षम होते हैं कि उस समय, उस परिस्थिति में सबसे अच्छा तरीका क्या है। इस ऐप को प्रमुख मुख्य चिकित्सा निदेशक डॉ. अनुराधा कोंडा, मुंबई सेंट्रल मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री नीरज वर्मा, वरिष्ठ रेलवे अधिकारियों और अन्य गणमान्य अतिथियों और नमस्ते हेल्थ की टीम की उपस्थिति में लॉन्च किया गया।

नमस्ते हेल्थ एक ऐसा ऐप है जो तत्काल चिकित्सा परामर्श प्रदान करके स्वास्थ्य आपात स्थितियों को संबोधित करता है और किसी आपात स्थिति के बाद के पहले कुछ मिनटों तथा गोल्डन ऑवर में सबसे उपयुक्त है। स्वास्थ्य आपात स्थिति अप्रत्याशित रूप से आती है और आपात स्थिति की गंभीरता का निर्धारण, घबराहट और चिंता निवारण, सही अस्पताल/डॉक्टरों तक पहुँचना, एम्बुलेंस की उपलब्धता आदि जैसी चुनौतियों के साथ आती है। इसके अतिरिक्त, जीवनरक्षक सलाह जैसे सीपीआर कैसे दें, रक्तस्राव कैसे रोकें या यदि व्यक्ति को मिर्गी है या वह बेहोश है तो क्या करें आदि जल्द से जल्द दिए जा सकते हैं। यह ऐप फायदेमंद है क्योंकि वर्चुअली कनेक्ट होना किसी भी चिकित्सक का फिजीकली मरीज को देखने की तुलना में तेज है।■

चिरेका सहायक इकाई डानकुनी से 100वां रेलइंजन रवाना

चित्तरंजन रेलइंजन कारखाना (चिरेका) की सहायक इकाई विद्युत लोको एसेम्ब्ली एवं सहायक इकाई (ELAAU) डानकुनी ने वित्त वर्ष 2024-25 का 100 रेलइंजनों का उत्पादन कर एक और ऐतिहासिक कीर्तिमान रचा है। दिनांक 30 नवंबर, 2024 को सहायक इकाई/डानकुनी द्वारा उत्पादित 100वां विद्युत रेलइंजन को रवाना किया गया। उल्लेखनीय है कि, पिछले वर्ष दानकुनी इकाई ने कुल 101 लोकोमोटिव का उत्पादन किया था, इस वर्ष, नवंबर, 2024 के महीने में 16 लोकोमोटिव के उत्पादन के साथ नवंबर के अंत तक इकाई ने 100 रेलइंजनों का उत्पादन हासिल कर लिया है। श्री हितेंद्र मल्होत्रा महाप्रबंधक ने इस सफलता के लिए डानकुनी इकाई की सदस्यों के योगदान की सराहना की।■



चिरेका के नये महाप्रबंधक के रूप में श्री विजय कुमार ने संभाला पदभार



भारतीय रेल मैकेनिकल इंजीनियर सेवा (IRSME) 1988 बैच के वरिष्ठ अधिकारी श्री विजय कुमार ने 10 दिसंबर, 2024 को चित्तरंजन रेल इंजन कारखाना (चिरेका) के महाप्रबंधक के रूप में पदभार संभाला लिया है।

इससे पहले श्री कुमार, उत्तर पश्चिम रेलवे, जयपुर में प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजीनियर के रूप में सेवा प्रदान कर रहे थे। श्री कुमार ने पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज/चंडीगढ़ से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में बी.टेक की पढाई पूरी की। 30 वर्षों से अधिक के अपने करियर के दौरान, इन्होंने भारतीय रेल में कई महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य किया है।■

तकनीकी प्रगति के लिए पू. सी. रेलवे और आईआईटी गुवाहाटी के बीच रणनीतिक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

सं रक्षा, दक्षता और स्थिरता को प्रोत्साहित करने के लिए पू. सी. रेलवे और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) गुवाहाटी ने दिनांक 19 नवंबर, 2024 को चार महत्त्वपूर्ण समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। यह ऐतिहासिक कार्यक्रम आईआईटी गुवाहाटी परिसर में आयोजित किया गया, जिसमें पू. सी. रेलवे के महाप्रबंधक श्री चेतन कुमार श्रीवास्तव और आईआईटी गुवाहाटी के निदेशक प्रो. देवेन्द्र जालिहाल सहित कई गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया।

पहले समझौते के तहत, हाई-स्पीड कैमरों की मदद से मालगाड़ियों में टूटे और बिना टूटे सील का पता लगाने की तकनीक विकसित की जाएगी, जिससे चोरी रोकी जा सकेगी। दूसरा समझौता यात्रियों की सुरक्षा में सुधार के लिए चेहरे की पहचान और चेतावनी प्रणाली के विकास पर केंद्रित है। यह प्रणाली संभावित आपराधिक गतिविधियों का पता लगाकर यात्रियों की यात्रा को सुरक्षित बनाएगी।

तीसरा समझौता ट्रेन संचालन के दौरान अलार्म चेन पुलिंग से सम्बन्धित समस्याओं का समाधान करेगा। यह नई चेतावनी प्रणाली आपात स्थितियों में परिचालन प्रबंधन को सुगम बनाएगी।



चौथा समझौता रेलवे परिसरों के लिए अपशिष्ट उपचार संयंत्र और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली विकसित करने पर केंद्रित है, जिससे पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा मिलेगा।

ये सभी समझौते रेलवे संचालन में आधुनिक तकनीकों का लाभ उठाते हुए सुरक्षा और पर्यावरणीय प्रगति के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। इस रणनीतिक साझेदारी से रेलवे परिचालन में क्रांतिकारी बदलाव की उम्मीद की जा रही है।■

अररिया-गलगलिया रेल लाईन परियोजना के अधीन अररिया-रहमतपुर-अररिया कोर्ट सेक्शन चालू



रे ल संरक्षा आयुक्त (सीआरएस), एन.एफ. सर्किल ने अररिया-गलगलिया नई रेलवे लाइन परियोजना के अररिया कोर्ट-रहमतपुर सेक्शन (3.95 कि.मी.) और अररिया-रहमतपुर सेक्शन से वाई-कनेक्शन (4.292 कि.मी.) को चालू करने की मंजूरी प्रदान की। अररिया-गलगलिया नई लाइन परियोजना की कुल लंबाई 110.75 कि.मी. है। अररिया-गलगलिया नई लाइन परियोजना के अररिया कोर्ट-रहमतपुर-अररिया स्टेशनों के बीच बनाई गई नई सेक्शन को दिनांक 28 नवंबर, 2024 को सीआरएस श्री सुमित सिंघल ने ट्रेन सेवाओं के परिचालन के लिए मंजूरी दी। पूरी परियोजना बिहार में पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के कटिहार मंडल के अधीन है। नवनिर्मित ब्रॉड-गेज लाइन को इस प्राथमिक उद्देश्य से चालू किया गया है कि मौजूदा रेलवे नेटवर्क को और अधिक मजबूती तथा उस हिस्से में संपूर्ण रेलवे परिचालन की दक्षता में सुधार लाई जाए। बिछाई गई यह नई रेलवे लाइन उक्त मार्ग से पूर्वोत्तर क्षेत्र की ओर और अधिक माल एवं यात्री परिवहन ले जाने में सहायक होगी।

अररिया-गलगलिया नई लाइन परियोजना 110.75 कि.मी. की है, जिसमें अररिया कोर्ट, रहमतपुर एवं अररिया स्टेशन के बीच निर्मित 8.242 कि.मी. रेल लाईन को ट्रेन परिचालन के लिए चालू कर दिया गया। इससे पहले जून, 2024 में इस नई रेलवे लाईन परियोजना के अधीन पावाखाली स्टेशन से ठाकुरगंज स्टेशन वाया काडोगांव हॉल्ट, भोगडाबर हॉल्ट, 23.242 कि.मी. रेल लाईन शुरू हुई थी। इस परियोजना से सेक्शन में भीड़भाड़ कम करने में मदद मिलेगी और इस प्रकार सेक्शन में रेल सेवाओं की सुचारू आवाजाही सुनिश्चित होगी। इस परियोजना ने आस-पास के क्षेत्र में बड़ी संख्या में रोजगार सृजित किए हैं।■

अमृत भारत स्टेशन

बिलासपुर, रायपुर एवं दुर्ग स्टेशनों का हो रहा है पुनर्विकास

भारतीय रेल देश की लाइफलाइन है। रेलवे लगातार यात्री सेवा को सुलभ करने के लिए नवीनतम तकनीक, सुविधाओं और बुनियादी ढाँचे को आधुनिक बनाने पर काम कर रही है। वर्तमान में रेल मंत्रालय के महत्त्वाकांक्षी परियोजना के अंतर्गत यात्रियों को विश्वस्तरीय सुविधा प्रदान करने हेतु स्टेशनों के पुनर्विकास व 'अमृत भारत स्टेशन' योजना के अंतर्गत स्टेशनों के उन्नयन का कार्य किए जा रहे हैं। इसी क्रम में बिलासपुर रेलवे स्टेशन को ₹435 करोड़ की लागत, रायपुर रेलवे स्टेशन को ₹456 करोड़ की लागत एवं दुर्ग रेलवे स्टेशन को ₹463 करोड़ की लागत से पुनर्विकसित किया जा रहा है। इस योजना का उद्देश्य यात्री सुविधाओं को उन्नत करना, भीड़ प्रबंधन में सुधार लाना और स्टेशन परिसर को आधुनिक बनाने के साथ-साथ इसे पर्यावरण के अनुकूल बनाना है। पुनर्विकास के तहत बेहतर प्रतीक्षालय, अत्याधुनिक सुरक्षा व्यवस्था, स्वच्छता और हरित क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

बिलासपुर स्टेशन का पुनर्विकास –

बिलासपुर रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास के अंतर्गत आने वाले समय में दीर्घकालिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर कॉन्कोर्स में एकसाथ लगभग 800 यात्रियों के बैठने के लिए वेटिंग एरिया 1,123 से अधिक वाहनों के लिए लगभग 28 हजार वर्ग मीटर पार्किंग एरिया बेहतर भीड़ प्रबंधन हेतु स्टेशन में प्रवेश एवं निकास के अलग-अलग मार्ग तथा 3 नए फुट चौड़े ओवरब्रिज का प्रावधान किया गया है, जिसमें दो स्टेशन प्रवेश के लिए तथा एक स्टेशन से निकास के लिए होगा। 6,000 वर्ग मीटर का कॉन्कोर्स का प्रावधान किया गया है, बुजुर्गों तथा दिव्यांग यात्रियों की विशेष सुविधा के लिए 30 लिफ्ट एवं 22 एस्केलेटर बनाए जाएंगे, जिससे यात्रियों को एक प्लेटफॉर्म से दूसरे प्लेटफॉर्म जाने में आसानी होगी। यात्रियों की संख्या : प्रति दिन 65,867 (अधिकतम 6,587 पीक आवर्स में) क्षमता के अनुरूप तैयार किया जाएगा।

रायपुर स्टेशन का पुनर्विकास –

बिलासपुर रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास के अंतर्गत आने वाले समय में दीर्घकालिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर कॉन्कोर्स में अधिकतम यात्रियों के बैठने के लिए 4,974 वर्ग मीटर वेटिंग एरिया लगभग 2,200 से अधिक वाहनों के लिए पार्किंग एरिया का प्रावधान, बेहतर भीड़ प्रबंधन हेतु स्टेशन में प्रवेश एवं निकास के अलग-अलग मार्ग तथा लगभग 3,400 वर्ग मीटर का कॉन्कोर्स का प्रावधान किया गया है। बुजुर्गों तथा दिव्यांग यात्रियों की विशेष सुविधा। यात्रियों की संख्या : प्रति दिन 47,967 (अधिकतम 4,797पी क आवर्स में) क्षमता के अनुरूप तैयार किया जाएगा।



बिलासपुर स्टेशन



रायपुर स्टेशन

दुर्ग स्टेशन का पुनर्विकास –

बिलासपुर रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास के अंतर्गत आने वाले समय में दीर्घकालिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर कॉन्कोर्स में एकसाथ लगभग 1,300 यात्रियों के बैठने के लिए वेटिंग एरिया 925 से अधिक वाहनों के लिए लगभग 19 हजार वर्ग मीटर पार्किंग एरिया बेहतर भीड़ प्रबंधन हेतु स्टेशन में प्रवेश एवं निकास के अलग-अलग मार्ग तथा 3 नए फुट चौड़े ओवरब्रिज का प्रावधान किया गया है, जिसमें दो स्टेशन प्रवेश के लिए तथा एक स्टेशन से निकास के लिए होगा। 35 वर्ग मीटर का कॉन्कोर्स का प्रावधान किया गया है, बुजुर्गों तथा दिव्यांग यात्रियों की विशेष सुविधा के लिए 45 लिफ्ट एवं 21 एस्केलेटर बनाए जाएंगे, जिससे यात्रियों को एक प्लेटफॉर्म से दूसरे प्लेटफॉर्म जाने में आसानी होगी। यात्रियों की संख्या : प्रति दिन 39,498 (अधिकतम 3,950 पीक आवर्स में) क्षमता के अनुरूप तैयार किया जाएगा। स्टेशन पुनर्विकास के अंतर्गत बिलासपुर, रायपुर एवं दुर्ग स्टेशनों में पर्यावरण संरक्षण के लिए क्लीन एनर्जी के महत्त्व को रेखांकित करते हुए स्टेशन की छतों पर सौर ऊर्जा संयंत्र लगाया जाएगा। जल संरक्षण के दृष्टिगत स्टेशन भवन में रेन वाटर हार्वेस्टिंग व इमरजेंसी पावर बैक-अप के साथ फायर फाइटिंग स्थापित किए जाएंगे। यात्रियों को दी जाने वाली जरूरी सुविधाओं में खान-पान, पीने का पानी, एटीएम, इंटरनेट, वॉशरूम, कवर शेड, स्टैंडर्ड साइनेज तथा दिव्यांगजन फ्रेंडली सुविधाएं आदि शामिल है।

बिलासपुर, रायपुर एवं दुर्ग स्टेशनों को विश्वस्तरीय रूप देते हुए ग्रीन स्टेशन का रूप दिया जा रहा है, जहाँ प्राकृतिक रौशनी और वेंटिलेशन का प्रावधान होगा। पुनर्विकास के बाद बिलासपुर स्टेशन हाईटेक यात्री सुविधाओं के साथ टेक्नोलॉजी, स्थानीय संस्कृति और समृद्ध विरासत का आकर्षक केंद्र बनेगा। यात्रियों की संख्या बढ़ने के साथ-साथ रोजगार बढ़ने की व्यापक संभावना विकसित होगी, जिसका लाभ स्थानीय लोगों को मिलेगा। यह स्टेशन इस क्षेत्र की आर्थिक गतिविधियों के साथ-साथ व्यापार एवं पर्यटन में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। इन स्टेशनों के अतिरिक्त दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के 46 स्टेशनों का अमृत भारत स्टेशन स्कीम के तहत उन्नयन किया जा रहा है।■


दुर्ग स्टेशन

खेलों में भारतीय रेल



भोपाल, मध्य प्रदेश में आयोजित 67वीं राष्ट्रीय शूटिंग चैंपियनशिप में भारतीय रेल के शहू माने ने 10 मीटर एयर राइफल इवेंट में स्वर्ण पदक जीता।



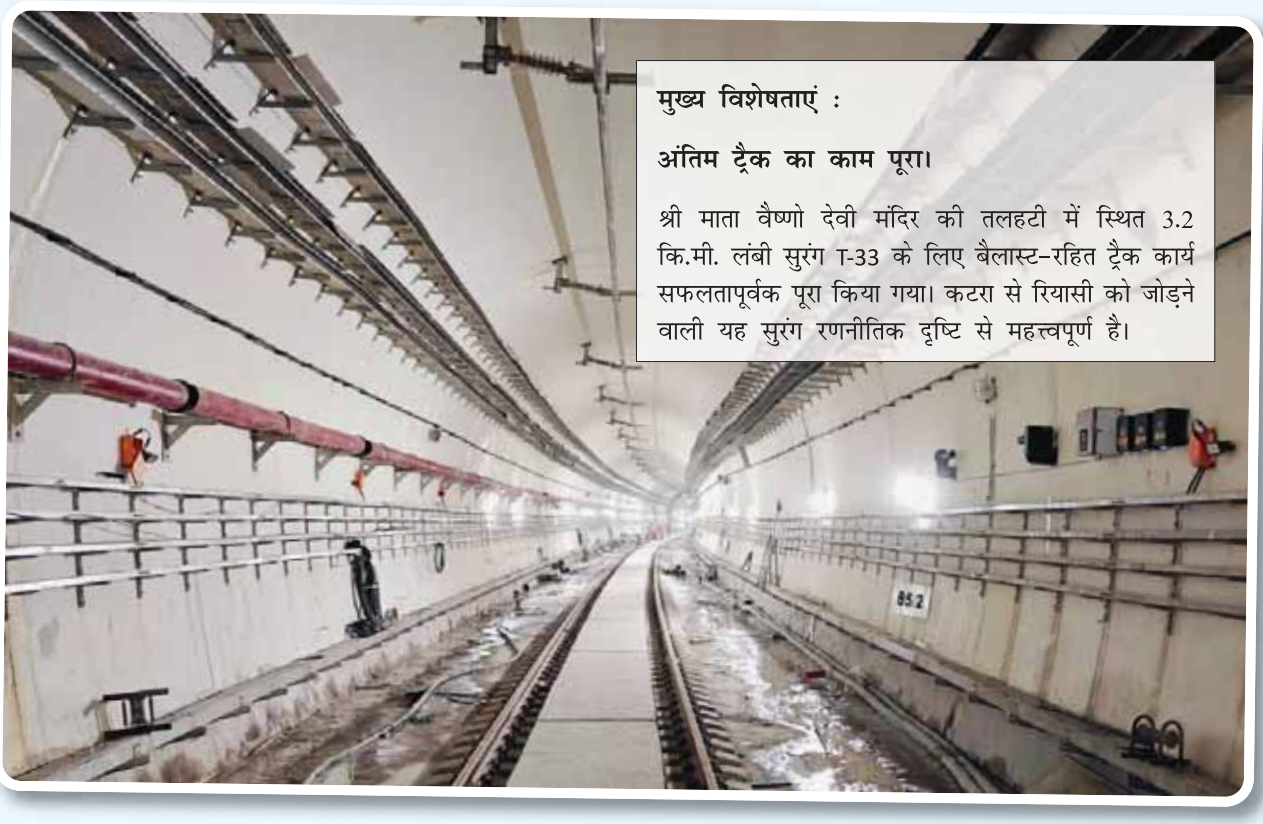
बेंगलुरु, कर्नाटक में आयोजित 77वीं इंटर स्टेट-इंटर क्षेत्रीय रेलवे और 86वीं सीनियर राष्ट्रीय बैडमिंटन चैंपियनशिप 2024 में भारतीय रेल पुरुष टीम ने दूसरा स्थान हासिल किया तथा महिला टीम ने संयुक्त रूप से तीसरा स्थान प्राप्त किया।



पुणे, महाराष्ट्र में आयोजित 66वीं विंटर राष्ट्रीय ब्रिज चैंपियनशिप 2024-25 में भारतीय रेल की ब्रिज टीम ने विजेता का खिताब जीता।



कोडागु, कर्नाटक में आयोजित 8वीं फेडरेशन कप बॉल बैडमिंटन चैंपियनशिप 2024 में भारतीय रेल पुरुष बॉल बैडमिंटन टीम ने लगातार दूसरी बार खिताब अपने नाम किया।



मुख्य विशेषताएं :

अंतिम ट्रैक का काम पूरा।

श्री माता वैष्णो देवी मंदिर की तलहटी में स्थित 3.2 कि.मी. लंबी सुरंग T-33 के लिए बैलास्ट-रहित ट्रैक कार्य सफलतापूर्वक पूरा किया गया। कटरा से रियासी को जोड़ने वाली यह सुरंग रणनीतिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

13 दिसम्बर, 2024

वरंगांव-अकोला खंड में ऑटोमेटिक ब्लॉक सिग्नलिंग (76.43 कि.मी.)





नई उपलब्धि :

बोडवाड और मलकापुर रेलवे स्टेशनों के बीच (19.81 कि.मी.) सिग्नलिंग का कार्य पूरा हुआ।

लाभ :

- अंतर-राज्यीय कनेक्टिविटी में सुधार।
- कोयले के परिवहन को सुविधाजनक बनाना।
- सामाजिक-आर्थिक विकास को बढ़ावा देना।
- ऐतिहासिक उपलब्धि : उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेल लिंक

22 दिसम्बर, 2024

सुरक्षित पटरियां और स्मार्ट ट्रेनें : भविष्य में और भी सुरक्षित यात्राएं

अनिल कुमार खंडेलवाल
(आईआरएसई-1987)
सेवानिवृत्त पदेन सचिव, भारत सरकार

बीते दशक में की गई सुविचारित पहलों के महत्त्वपूर्ण परिणाम सामने आने की बदौलत रेलगाड़ियों पर अब भारतीय पहले से कहीं अधिक सुरक्षित हैं। यह बात विशेष रूप से सराहनीय इसलिए भी है, क्योंकि कोई भी अन्य देश प्रतिवर्ष 1 लाख करोड़ यात्री कि.मी. (पीकेएम) और लगभग 685 करोड़ रिकॉर्ड यात्रियों का रेल के माध्यम से आवागमन कराने वाले भारत से ज्यादा लोगों का रेल के जरिए आवागमन नहीं कराता है। यह उपलब्धि बेमिसाल है, यहां तक कि पड़ोसी देश चीन भी अपने विशाल रेल नेटवर्क और तुलनात्मक जनसंख्या आकार के बावजूद मुश्किल से आधे यात्रियों (सालाना लगभग 300 करोड़) का ही आवागमन कराता है।

सुरक्षा में उल्लेखनीय सुधार- गंभीर घटनाओं की पहचान के प्रमुख संकेतक-महत्त्वपूर्ण रेल दुर्घटनाओं की संख्या में भारी गिरावट से जाहिर है, जिनकी संख्या वित्त वर्ष 2000-01 में 473 से घटकर वित्त वर्ष 2023-24 में केवल 40 रह गई। यह सुधार पटरियों को बेहतर बनाने, मानव रहित लेवल क्रॉसिंग को खत्म करने, पुलों की स्थिति की नियमित निगरानी करने और स्टेशनों को डिजिटल बनाने आदि की दिशा में किए गए केंद्रित प्रयासों के माध्यम से संभव हुआ है।

यात्रियों की संख्या और पटरियों की लंबाई पर गौर करने पर ये उपलब्धियाँ और भी प्रभावशाली हो जाती हैं। किसी भी औसत दिन, 2 करोड़ से ज्यादा लोग 70,000 रूट कि.मी. (आरकेएम) लंबे नेटवर्क पर यात्रा करते हैं। पीक सीजन में यह संख्या प्रतिदिन 3 करोड़ तक पहुँच जाती है, जो एक अन्य विश्व रिकॉर्ड है!

असल में इसका आशय यह है कि भारत प्रतिदिन अपनी लगभग 2 प्रतिशत आबादी का सुरक्षित तरीके से रेलवे के माध्यम से आवागमन कराता है, जबकि इसकी तुलना में चीन केवल 0.58 प्रतिशत और अमेरिका 0.09 प्रतिशत लोगों का ट्रेन के जरिए आवागमन कराता है।

लगभग त्रुटिहीन सुरक्षा रिकॉर्ड के बावजूद, रेल दुर्घटनाएं दुनिया भर में एक गंभीर वास्तविकता हैं। यद्यपि किसी भी रेल प्रणाली के लिए आदर्श स्थिति शुरुआत से ही एक भी दुर्घटना घटित नहीं होने देना है, लेकिन कोई भी प्रमुख नेटवर्क इस स्थिति को हासिल नहीं कर पाया है। भारतीय रेल (आईआर) नेटवर्क के मात्र एक चौथाई हिस्से जितने ऑस्ट्रेलियाई रेलवे में वित्त वर्ष 2022-23 में रेलगाड़ियों के पटरी से उतरने की 52 घटनाएं दर्ज की गईं। इसी तरह, भारतीय रेल से लगभग दोगुना आकार के 2,60,000 ट्रैक कि.मी. (टीकेएम) वाले अमेरीकी रेल नेटवर्क में उसी वर्ष रेलगाड़ियों के पटरी से उतरने की 1,300 घटनाएं दर्ज की गईं। 2,00,000 टीकेएम वाले यूरोपीय संघ नेटवर्क (भारतीय रेल का 1.5 गुना) में 2022 में 1,568 दुर्घटनाएं घटित हुईं।

अपने समकक्षों के समान, भारतीय रेल में भी वित्त वर्ष 2022-23 के दौरान रेलगाड़ियों के पटरी से उतरने की घटनाएं दर्ज की गईं, लेकिन ये घटनाएं काफी कम 137 के स्तर पर रहीं।



ये संख्या विकसित देशों की तुलना में भारतीय रेल के शानदार सुरक्षा प्रदर्शन का प्रमाण हैं और ऐसा उसके कई वर्षों से इष्टतम स्तर से कम पूंजीगत व्यय, लालफीताशाही, राजनीतिकरण और भ्रष्टाचार के कारण सुस्त हालत रहने के बावजूद संभव हुआ है। लेकिन पिछले कई दशकों में फैली गड़बड़ियों की गंदगी को अच्छे प्रशासन के एक या दो कार्यकालों में धोया नहीं जा सकता।

यद्यपि आईआर मिश्रित यातायात मॉडल का उपयोग करता है, विदेशों में कई रेलवे माल और सवारी रेलगाड़ियों के लिए अलग-अलग ट्रैक का उपयोग करते हैं। इसका मतलब है कि भारत में प्रत्येक दुर्घटना के लिए रेलवे यात्री सुरक्षा के गंभीर रूप से खतरे में पड़ने की संभावना बहुत अधिक है। दुर्घटनाओं के मूल कारण को तुरंत दूर करना और रेलगाड़ी के पटरी से उतरने से मुक्त रेलवे नेटवर्क प्राप्त करना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इसके लिए मानवीय इंटरफेस को कम करने और प्रणालीगत विश्वसनीयता में सुधार करने के लिए महत्त्वपूर्ण तकनीकी पहल की आवश्यकता होगी।

यात्री सुरक्षा को प्राथमिकता देने पर बल देते हुए वर्ष 2023-24 के दौरान सुरक्षा से जुड़ी परियोजनाओं में ₹1 लाख करोड़ से ज्यादा का निवेश किया गया है और चालू वित्त वर्ष में और भी ज्यादा खर्च करने की योजना है। इसका आशय ट्रेनों, पुलों, पटरियों और सिग्नलिंग सिस्टम के बेहतर रखरखाव के साथ-साथ ओवर-और अंडर-ब्रिज के निर्माण के जरिए पटरियों के पास बेहतर सड़क सुरक्षा की व्यवस्था है।

रेलवे सुरक्षा प्रदर्शन के एक सूचकांक-प्रति मिलियन ट्रेन कि.मी. दुर्घटना (एपीएमटीके) की संख्या वित्त वर्ष 2000-01 में 0.65 से घटकर वित्त वर्ष 2023-24 में 0.03 हो गई है। यह आधुनिक, अत्याधुनिक ट्रैक रखरखाव और नवीनीकरण मशीनों का उपयोग करके बेहतर ट्रैक रखरखाव किए जाने का सराहनीय परिणाम है। इसके अलावा पटरी की त्रुटि का पता लगाने में सुधार, रेल वेल्ड संबंधी खराबियों पर अंकुश और मानवीय त्रुटियों को कम करने के लिए उन्नत तकनीक सहित कई अतिरिक्त उपाय भी किए गए हैं।

इन परिणामों को बनाए रखने और बेहतर बनाने के लिए तकनीकी हस्तक्षेप और लक्षित प्रशिक्षण का मिश्रण अपनाया गया है। पटरियों के रखरखाव के लिए आधुनिक मशीनों की तैनाती वित्त वर्ष 2013-14 के दौरान 700 से बढ़कर इस साल 1,667 कर दी गई है, जिससे पटरियों के रखरखाव में सुधार हुआ है। संपत्ति की विश्वसनीयता को और बढ़ाने के लिए पूरे नेटवर्क में रेल ग्राइंडिंग भी लागू की गई है।

रेल परिचालन के लिए गंभीर सुरक्षा जोखिम उत्पन्न करने वाली शरारती गतिविधियों को रोकने और तोड़फोड़, पटरियों से छेड़छाड़, तथा पटरियों पर असंबद्ध वस्तुएं रखने जैसी समस्याओं से निपटने के लिए अब पटरियों पर निरंतर गश्त की जाती है। सुरक्षा पहल का एक मुख्य आधार लोको पायलटों को खराब दृश्यता वाले कोहरे से घिरे क्षेत्रों में नेविगेट करने में सहायता देने के लिए जीपीएस-आधारित फॉग पास डिवाइस की संख्या बढ़ाना है। वित्त



वर्ष 2014-15 में केवल 90 जीपीएस-आधारित फॉग पास डिवाइस की तुलना में अब इनकी संख्या 21,742 हो चुकी है।

पायलट की सतर्कता बढ़ाने वाले सतर्कता नियंत्रण उपकरण (वीसीडी) सभी इंजनों में लगाए गए हैं। वित्त वर्ष 2013-14 में इनकी संख्या 10,000 से भी कम थी, जो आज बढ़कर 16,021 हो गई है। ब्रॉड-गेज मार्गों पर 6,637 स्टेशनों में से 99 प्रतिशत से अधिक पर पैनल इंटरलॉकिंग, रूट रिले इंटरलॉकिंग और इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग जैसी उन्नत सिग्नलिंग प्रणालियां प्रदान की गई हैं।

इसके अलावा, ड्राइविंग कौशल और रिएक्शन टाइम को संवर्धित करने के लिए लोको-पायलट अब सिम्युलेटर-आधारित प्रशिक्षण (सिमुलेटिंग फील्ड एक्सपीरिएंस) से गुजरते हैं, जबकि फ्रंट लाइन स्टाफ को अग्निशमन का प्रशिक्षण मिलता है। कुल मिलाकर, वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान 6 लाख से अधिक रेलवे कर्मचारियों ने विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण, प्रारंभिक, प्रमोशनल, रिफ्रेशर और विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किए। मानव सुरक्षा के अलावा, भारतीय रेल द्वारा वित्त वर्ष 2024-25 में पटरियों के किनारे 6,433 कि.मी. (कि.मी.) बाड़ लगाकर वन्यजीव और पशुधन की सुरक्षा पर भी ध्यान दिया जा रहा है। अगस्त 2024 तक इनमें से 1,396 कि.मी. पर काम पूरा हो चुका है, जिससे इन मार्गों पर मवेशियों के टकराने की घटनाओं में कमी आएगी।

इन उपायों के पूरक के रूप में, अधिक सुरक्षित लिंके-हॉफमैन-बुश (एलएचबी) कोचों का भी रुख किया गया है, जिनमें दुर्घटना के समय सवार को सुरक्षित रखने की बेहतर विशेषताएं मौजूद हैं। इन्हें इस तरह डिज़ाइन किया गया है कि टक्कर होने पर ये कोच दूसरे कोचों पर नहीं चढ़ते, जिसकी बदौलत रेलगाड़ी के पटरी से उतरने और यात्रियों को चोट लगने की आशंका कम हो जाती है। एलएचबी कोच 160 कि.मी. प्रति घंटे तक की गति पर सुरक्षित परिचालन के लिए बनाए गए हैं। वित्त वर्ष 2023-24 में 4,977 एलएचबी कोचों के निर्माण के साथ उनके उत्पादन में काफी वृद्धि हुई है, जो वित्त वर्ष 2013-14 में उत्पादित 2,467 से दोगुना से भी अधिक हैं।

हालांकि ये कदम सराहनीय हैं, लेकिन सरकार को यह सुनिश्चित करना होगा कि यात्रा को सुरक्षित बनाने के उसके प्रयासों में कोई कमी न आने पाए। भारतीय रेल पहले से ही परिवहन का सबसे सुरक्षित साधन है, लेकिन भविष्य में यह और भी सुरक्षित हो जाएगी।■





भारतीय रेल के बेमिसाल 10 साल





संजय सिंह
वरिष्ठ पत्रकार

यूं तो भारतीय रेल आजादी के बाद लगातार प्रगति के पथ पर अग्रसर रही है। लेकिन जो काम पिछले 10 वर्षों में हुए हैं वे अभूतपूर्व हैं। आजादी के बाद विभिन्न प्रधानमंत्रियों ने रेलवे को आगे बढ़ाने के लिए अपने-अपने स्तर पर प्रयास किए। इससे इन्फ्रास्ट्रक्चर के साथ-साथ रेलवे के यात्री और मॉल वहन में तो बढ़ोतरी में हुई ही, उनकी सुविधाओं, सुरक्षा और संरक्षा (सेफ्टी) का स्तर भी बेहतर हुआ। लेकिन दुर्भाग्यवश ये उपलब्धियाँ वक्त की जरूरत और मांग को पूरा करने में असमर्थ साबित हुईं। एक ऐसा वक्त भी आया कि रेलवे हर मोर्चे पर पिछड़ने लगी थी। मॉल ढुलाई में सड़क क्षेत्र रेलवे से कोसों आगे निकल गया था।

और यात्रियों को भी ट्रेनों के बजाय कारों और विमानो का सफर आकर्षित करने लगा था। यह वह दौर था जब सड़क और विमानन क्षेत्र तो सुधारों की बदौलत फल-फूल रहे थे। लेकिन रेलवे में सुधारों को लेकर ऊहापोह की स्थिति थी। ऐसे में रेलवे को एक राजनीतिक मार्गदर्शक की जरूरत थी। ऐसा, जो साहसिक फैसलों के साथ उन्हें लागू कराने का माद्दा रखता हो एवं जोखिम उठाने को भी तैयार हो। सौभाग्य से वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के देश की सत्ता संभालते ही रेलवे को वह मार्गदर्शक मिल गया। प्रधानमंत्री मोदी के दृढ़ संकल्प, दूरदर्शिता और मार्गदर्शन की बदौलत मात्र एक दशक में रेलवे का कायाकल्प हो गया है। अब वह किसी से पीछे नहीं है और नए जमाने के साथ कदमताल करना उसकी पहचान बन गई है।

विकेंद्रीकरण का कमाल

पिछले दस वर्षों में रेलवे का बड़े पैमाने पर विकेंद्रीकरण हुआ है। इसकी शुरुआत अलग से पेश किए जाने वाले रेल बजट को आम बजट का हिस्सा बनाने से हुई। अनेक दिक्कतें दूर हो गईं। एक तो अलग ढर्रे पर चल रही रेलवे को लेकर नीतिगत निर्णय लेना सरकार के लिए आसान हो गया। दूसरे, रेलवे में निवेश बढ़ाने और निजी क्षेत्र के लिए दरवाजे खोलने की मुश्किलें समाप्त हो गईं। 2014 से पहले रेलवे का बजट ₹25,000 करोड़ के आसपास होता था। लेकिन पिछले दस सालों में इसे बढ़ाकर ₹2,52,000 करोड़ तक पहुँचा दिया गया है। इससे हर राज्य को रिकॉर्ड आबंटन प्राप्त हुआ है। सरकारी खर्च बढ़ने और शक्तियों का विकेंद्रीकरण होने से निजी कंपनियों को रेलवे के साथ काम करने में आसानी हो गई है। पहले स्थानीय स्तर के कार्यों के लिए महाप्रबंधक को रेलवे बोर्ड और डीआरएम को क्षेत्रीय रेलवे मुख्यालयों का मुंह ताकना पड़ता था। लेकिन अब ज्यादातर

कार्यकारी अधिकार जीएम और डीआरएम के हाथों में हैं। रेलवे बोर्ड की भूमिका नीतियां बनाने और उनकी मॉनिटरिंग करने तक सीमित रह गई हैं। इसका असर राज्यों और जिला स्तरीय परियोजनाओं में आई तेजी में दिखाई देता है। जो परियोजनाएँ बरसों से अटकी हुई थीं, उन पर फटाफट काम होने लगा है और वे तेजी से पूरी हो रही हैं। इस बदलाव का नतीजा है कि रेलवे इन्फ्रास्ट्रक्चर में जबरदस्त सुधार हुआ है और स्टेशनों एवं ट्रेनों में साफ-सफाई के साथ-साथ सेवाओं और सुविधाओं की गुणवत्ता बेहतर हुई है। रेलवे में हर तरफ आधुनिकीकरण की बयार चल रही है।



स्वच्छता का अहसास

रेलवे के प्रति प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के स्पष्ट दृष्टिकोण और दूरदर्शिता के कारण गत दस वर्षों में अनेक अभिनव कार्य हुए हैं। मसलन, साफ-सफाई व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन होने से रेल परिसंपत्तियां एकदम साफसुथरी रहने लगी हैं। किसी स्टेशन अथवा ट्रेन में प्रवेश करते ही हर किसी को इसकी अनुभूति होती है। दस वर्ष पहले आम जनता की सबसे बड़ी शिकायत रेलवे में गंदगी को लेकर रहती थी। लेकिन अब स्वच्छता मानो रेलवे की पहचान बन गई है। यह उपलब्धि सफाई, निगरानी और जवाबदेही के पुराने तौरतरीकों को छोड़ने और नए आधुनिक तरीके अपनाने तथा रैंकिंग प्रणाली लागू करने से हासिल हुई है। अब मैकेनाइज्ड क्लीनिंग के जरिए स्टेशनों और ट्रेनों की नियमित रूप से सफाई होती है। अधिकांश कोच में बायो टॉयलेट और बायो वैक्यूम टॉयलेट लगा दिए गए हैं। इससे रेलवे में गंदगी का बहुत बड़ा स्रोत बंद हो गया है। 'स्वच्छ रेल, स्वच्छ भारत' के तहत गत दस वर्षों में 80 हजार से ज्यादा कोच में तीन लाख से ज्यादा बायो टायलेट/वैक्यूम बायो टायलेट लगाए जा चुके हैं।



उन्नत स्टेशन

पहली बार देश में रानी कमलापति और गांधीनगर जैसे वर्ल्ड क्लास स्टेशन विकसित किए गए हैं। जबकि भुवनेश्वर स्टेशन को इसी तर्ज पर बनाने का काम तेजी से चल रहा है। इसके अलावा कुल मिलाकर 25 राज्यों में 1,337 स्टेशनों के आधुनिकीकरण एवं विकास के काम जारी हैं। इनमें सबसे ज्यादा 157 स्टेशन उत्तर प्रदेश, 132 महाराष्ट्र और 101 पश्चिम बंगाल में हैं। स्टेशन विकास के क्रम में सभी राज्यों का ध्यान रखा गया है। राजधानियों के अलावा अन्य प्रमुख नगरों के व्यस्त स्टेशनों को भी विकसित करने की मुहिम चल रही है।



नई तकनीक की तीव्र, आरामदायक ट्रेनें

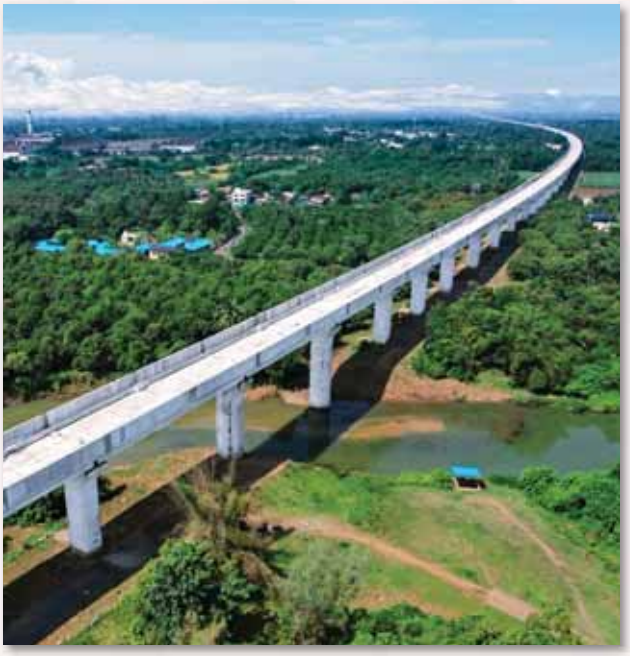
दस सालों में ट्रेनों की तकनीक, रफ्तार और सुख-सुविधाओं में बहुत बड़ा अंतर आया है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण सेमी-हाई स्पीड ट्रेन वंदे भारत ट्रेन है। जिसे देश के ही इंजीनियरों और तकनीशियनों ने विकसित किया है और आत्मनिर्भर भारत की एक नई तस्वीर पेश की है। आज विश्व भर में इस ट्रेन की चर्चा है। कई पैरामीटर्स पर यह यूरोप और जापान की ट्रेनों से भी बेहतर पाई गई है। जबकि इसके उत्पादन का खर्च अपेक्षाकृत काफी कम है। अब तक 68 रूटों पर कुल 136 वंदे भारत सेवाएं चलाई जा चुकी हैं।

वंदे भारत की सफलता के अलावा भारतीय इंजीनियरों ने 'अमृत भारत' और 'नमो भारत' जैसी दो और ट्रेनें विकसित की हैं। अमृत भारत सामान्य दर्जे की ट्रेन है और फिलहाल चार ट्रेनें चल रही हैं। जबकि नमो भारत को कम दूरी की यात्रा के लिहाज से बनाया गया है। पहली नमो भारत रेपिड रेल भुज से अहमदाबाद के बीच चलाई जा चुकी है। यही नहीं, इनसे पहले हमसफर, तेजस, गतिमान, महामना, अंत्योदय, उदय, सुविधा, डबल डेकर और विस्टाडोम जैसी एक्सप्रेस तथा टूरिस्ट ट्रेनें भी पिछले दस वर्षों में लॉन्च की गई हैं। इन सभी ट्रेनों को यात्री बहुत पसंद कर रहे हैं। नि:संदेह इन ट्रेनों के विकास एवं आधुनिकीकरण में निजी क्षेत्र का सहयोग भी लिया गया है। लेकिन इसके बावजूद ये सरकार की ही संपत्ति हैं।



बुलेट ट्रेन

दस सालों में रेलवे के विकास में की एक अन्य महत्त्वपूर्ण गाथा भी लिखी गई है। वह है हाई-स्पीड बुलेट ट्रेन परियोजना का आगाज। इसके तहत जापान के सहयोग से मुंबई और अहमदाबाद के बीच 508 कि.मी. लंबा हाई-स्पीड ट्रैक बिछाने का काम तेजी से चल रहा है। अब तक 340 कि.मी. से ज्यादा एलिवेटेड ट्रैक तैयार हो चुका है। चूंकि सारा भूमि अधिग्रहण हो चुका है। लिहाजा अब इस प्रोजेक्ट के पूरा होने के लिए बहुत ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ेगा।



ट्रैक विस्तार एवं नवीकरण

वर्ष 2014 से पहले के दस सालों में कुल मिलाकर 14,985 हजार कि.मी. नया रेलवे ट्रैक बिछाया गया था। लेकिन 2014-24 के बीच 31,180 कि.मी. नया ट्रैक बिछाया जा चुका है। अकेले पिछले एक वर्ष के दौरान 5,300 कि.मी. नई लाइनें बिछाई गई हैं, जोकि पूरे स्विट्जरलैंड के रेलवे नेटवर्क से भी ज्यादा है। इसे मिलाकर भारत में रेलवे लाइनों की कुल लंबाई बढ़कर 1,33,000 कि.मी. से भी ज्यादा हो गई है।



विद्युतीकरण

देश में खुद के तेल भंडार सीमित हैं। इसे देखते हुए बहुत पहले रेलवे का पूर्ण विद्युतीकरण हो जाना चाहिए था। लेकिन दुर्भाग्य

से इसे लेकर उदासीनता बरती गई। जिससे 60 वर्षों में महज 21,000 कि.मी. ट्रैक का विद्युतीकरण किया जा सका था। सुस्ती का आलम यह था कि 2004-14 के दरम्यान केवल 5,188 कि.मी. ट्रैक का इलेक्ट्रिफिकेशन हुआ। लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आने के बाद महज दस वर्षों में 44,199 कि.मी. ट्रैक का इलेक्ट्रिफिकेशन किया जा चुका है। रेलवे के पूर्ण विद्युतीकरण का लक्ष्य अब दूर नहीं है। इससे डीजल के खर्च में अब तक ₹5,000 करोड़ की बचत हो चुकी है। इलेक्ट्रिफिकेशन में भी निजी क्षेत्र का सहयोग लिया गया है।

पूर्वोत्तर राज्यों में रेलवे का विकास

पूर्वोत्तर भारत के प्रति केंद्र सरकार के कामचलाऊ रवैए के चलते पहले केवल 'लुक ईस्ट' की नीति रहती थी। लेकिन आज 'एक्ट ईस्ट' पॉलिसी के तहत नॉर्थ ईस्ट के करीब-करीब हर राज्य में रेलवे का विकास हो रहा है। असम में रंगिया-मूरकॉन्गसलक लाइन 2015 में ही चालू हो गई थी। दूसरी ओर मिजोरम में कटखल-भैरबी लाइन को 2016 में चालू कर दिया गया था। जबकि भैरबी-सैरांग लाइन का काम तेजी से चल रहा है। सैरांग से राजधानी आईजवाल महज 21 कि.मी. है। उधर मणिपुर में खांगसंग तक और अरुणाचल प्रदेश में नाहरलगुन तक रेलवे लाइन पहुँच चुकी है। जबकि सिक्किम में सिवोक-रांगपो नई लाइन पर तेजी से काम चल रहा है। त्रिपुरा की राजधानी अगरतला को ब्रॉड गेज लाइन से 2016 में ही कनेक्ट कर दिया गया था। जबकि लामडिंग-बदरपुर-सिलचर तथा बदरपुर-कुमारघाट लाइनें भी चालू हो चुकी हैं। नगालैंड में 100 साल बाद सुखोवी में दूसरा ब्रॉड गेज रेलवे स्टेशन बीते दस सालों में ही बना। वहां धनसिरी-सुखोवी लाइन चालू हो चुकी है। जबकि धनसिरी से जुब्जा (कोहिमा) नई लाइन का काम प्रगति पर है। दूधनोई-मेंदीपाथर नई ब्रॉडगेज लाइन के साथ मेघालय को अगस्त 2014 में ही रेलवे से कनेक्ट कर दिया गया था। जबकि लेतलिया-बिरनीहाट एवं बिरनीहाट-शिलांग नई लाइन का काम चल रहा है।



कश्मीर तक रेल कनेक्टिविटी

कश्मीर से कन्याकुमारी तक रेल कनेक्टिविटी सुनिश्चित करने वाली बहु प्रतीक्षित उधमपुर-श्रीनगर-बारामुला रेल लिंक परियोजना पूरी हो चुकी है। अब टेस्टिंग का काम चल रहा है। अगले चार महीने के भीतर इस पर ट्रेन चलाने की तैयारी है। चेनाब नदी पर बना विश्व का सबसे ऊंचा रेलवे पुल इसी परियोजना का हिस्सा है। जिसकी ऊंचाई 359 मीटर है, जो एफिल टावर से भी 35 मीटर ज्यादा है।

उत्तर भारत के अन्य पर्वतीय राज्यों में भी रेलवे का विस्तार हो रहा है। हिमाचल प्रदेश में दौलतपुर तक रेलवे लाइन पहुँच चुकी है। जबकि मुकेरियां तक का काम तेज गति से चल रहा है। उत्तराखंड में ऋषिकेश-कर्णप्रयाग लाइन को भी शीघ्रातिशीघ्र पूरा करने का प्रयास है।



फ्रेट कॉरिडोर

फ्रेट कारीडोर पर वर्ष 2014 तक घोषणा के अलावा कोई काम नहीं हुआ था। लेकिन आज पूर्वी और पश्चिमी गलियारों को मिलाकर 2,700 कि.मी. से ज्यादा फ्रेट कॉरिडोर तैयार हो चुका है। उन पर रोजाना 350 मालगाड़ियां दौड़ रही हैं। बचा-खुचा हिस्सा भी शीघ्र चालू हो जाएगा।



सेफ्टी एवं रखरखाव

रेलवे की सेफ्टी को लेकर अक्सर बहुत बातें होती हैं। कोई हादसा हो तो आरोपों की बौछार शुरू हो जाती है। तथ्यों पर कोई बात नहीं करता। जबकि हकीकत यह है कि पिछले दस सालों में रेलवे जितनी निरापद और सुरक्षित हुई है उतनी पहले कभी नहीं थी। परिणामी दुर्घटना के आंकड़ों से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि वर्ष 2014 से पहले जितने रेल हादसे और मौतें होती थीं, उसके मुकाबले अब इनकी संख्या नगण्य है। और यह सब यूं ही नहीं हो गया है। इसके इन्फ्रास्ट्रक्चर सुधार, नवीकरण और सेफ्टी के अन्य मोर्चों पर युद्धस्तर पर कार्य किए गए हैं। उदाहरण के लिए ब्रॉड गेज रूटों पर चौकीदार रहित क्रॉसिंगें पूरी तरह समाप्त की जा चुकी हैं। वर्ष 2014 तक ऐसी लगभग 9,000 लेवल क्रासिंग हुआ करती थीं। और सेफ्टी को लेकर यह बड़ा मुद्दा हुआ करता था। अब अधिकांश क्रॉसिंगों पर ओवरब्रिज या अंडरपास बनाए जा चुके हैं। पिछले दस सालों में 11,945 ओवरब्रिज और अंडरपास बनाए गए हैं। जबकि उससे पहले इसी अवधि में केवल 4,148 आरओबी/आरयूबी ही बने थे। इसके अलावा ट्रैक नवीकरण को तेज किया गया है। पिछले दस सालों में 43,000 कि.मी. ट्रैक को बदला गया है। जबकि वर्ष 2014 से पहले दस सालों में केवल 32,000 किमी ट्रैक रिन्युवल हुआ है। 260 मीटर की लंबी रेल के उपयोग से वेल्डिंग फेल्योर 87 फीसदी घट गया है और डिरेलमेंट में 481 फीसद की कमी आई है।

ट्रेनों में कम्पन घटाने और स्थिरता बढ़ाने करने के लिए पुरानी तकनीक वाले आईसीएफ डिब्बों को हटाकर उनकी जगह एलएचबी कोच लगाए गए हैं। इससे ट्रेन हादसों के साथ होने वाली मौतों में भारी कमी आई है। दस सालों में 37,000 एलएचबी कोच का उत्पादन किया जा चुका है। पांच साल में सभी आईसीएफ कोच हटा दिए जाएंगे।



ट्रेन संचालन को निरापद और आसान बनाने के लिए डिजिटल कंट्रोल (इलेक्ट्रानिक इंटरलॉकिंग) और ऑटोमैटिक ब्लॉक सिग्नलिंग की दिशा में बड़ा काम हुआ है। 2004-14 के बीच केवल 800 स्टेशन डिजिटल कंट्रोल पर आए थे। जबकि 2014 के बाद 3,000 से ज्यादा स्टेशनों को डिजिटल कंट्रोल पर लाया जा चुका है। दूसरी ओर 2,497 रूट कि.मी. ट्रैक पर ऑटोमैटिक ब्लॉक सिग्नलिंग लागू की गई है। पहले केवल 1,486 कि.मी. ट्रैक पर ब्लॉक सिग्नलिंग हुई थी। कोहरे में सुरक्षित ट्रेन संचालन के लिए लगभग 20,000 फाग सेफ्टी डिवाइस लगाई गई हैं जो पहले नगण्य थीं।



मेंटिनेंस के तौरतरीके भी काफी हद तक बदले जा चुके हैं। ट्रैकमैन को नए हल्के उपकरण, वर्दियां तथा पेट्रोल वाहन उपलब्ध कराए गए हैं। लेकिन सेफ्टी की दिशा में जो सबसे बड़ी उपलब्धि हासिल हुई है वह है ट्रेनों को टक्कर से बचाने वाली नई 'कवच प्रणाली का विकास। फिलहाल इसे दक्षिण-मध्य था उत्तर-मध्य रेलवे में 1,548 रूट कि.मी. लाइनों पर लगाया जा चुका है। जबकि दिल्ली-हावड़ा और दिल्ली-मुंबई कॉरिडोर्स में 3,000 रूट कि.मी. लाइनों पर ट्रैक साइड उपकरण लगाने का कार्य प्रगति पर



है। इसी के साथ 10,000 लोकोमोटिव को भी कवच उपकरणों से लैस करने की योजना को अंतिम रूप दिया गया है। जबकि अन्य 15,000 रूट कि.मी. लाइनों पर ट्रैक साइड कवच लगाने के लिए निविदाएं आमंत्रित की गई हैं जिनमें से 9,000 रूट कि.मी. की निविदाएं खोली जा चुकी हैं। इससे अंतत: रेलवे के सभी प्रमुख एवं महत्त्वपूर्ण रूट कवच से लैस हो जाएंगे। कवच के कार्यान्वयन पर अब तक ₹1,547 करोड़ की राशि खर्च की जा चुकी है। रेलमंत्री अश्वनी वैष्णव का कहना है कि कवच के लिए फंड की उपलब्धता सुनिश्चित की जाएगी।

सेफ्टी को लेकर किए गए अनवरत प्रयासों और उपायों का ही परिणाम है कि आज रेल दुर्घटनाएं प्राय: नगण्य रह गई हैं। पहले जहाँ हर साल औसतन 171 ट्रेन दुर्घटनाएं होती थीं। वहीं अब यह संख्या घटकर 40 रह गई है। यानी 77 फीसद कमी। सेफ्टी पर भारी इन्वेस्टमेंट से यह संभव हुआ है। पहले जहाँ रेलवे सेफ्टी पर बमुश्किल 8-10 हजार करोड़ का इन्वेस्टमेंट होता था। वहीं अब एक लाख करोड़ से ज्यादा का इन्वेस्टमेंट हो रहा है।



यात्री सुविधाएं

पिछले दस सालों में रेलवे की यात्री सुविधाओं में अभूतपूर्व सुधार हुआ है। फिर चाहे बात स्टेशनों की हो अथवा कि ट्रेनों और डिजिटल सुविधाओं की। इनमें कुछ की बात हम ऊपर कर चुके हैं। लेकिन वह तो बानगी भर है। असल काम बहुत ज्यादा हुआ है, जिसका पूरा वर्णन कर पाना इस छोटे से लेख में संभव नहीं है। फिर भी अन्य कुछ सुविधाओं की चर्चा जरूरी है। जैसे कि स्टेशनों में फूट ओवरब्रिज पर लोगों को चढ़ने-उतरने में दिक्कत को दूर करने के लिए लिफ्ट और एस्केलेटर लगाने का अभियान छेड़ा गया। परिणामस्वरूप दस सालों में 2,656 लिफ्ट और एस्केलेटर लगाए गए हैं। जबकि 2014 तक इनकी संख्या मात्र 240 थी। दूसरी ओर हर वर्ग के यात्रियों को यात्रा का बेहतर अनुभव कराने के लिए अलग-अलग तरह की नई ट्रेनें लॉन्च की

गईं। जबकि साधारण दर्जे को गरिमा प्रदान करने के लिए दीनदयालु कोच पेश किए गए।



यही नहीं, जनता की मांग पर नॉन एसी कोच का उत्पादन बढ़ाने का विशेष प्रोग्राम भी प्रारंभ किया गया है। जिसके तहत लगभग 12,000 नॉन एसी कोच बनाए जा रहे हैं। अब तक 900 नए नॉन एसी कोच विभिन्न ट्रेनों में लगाए जा चुके हैं। इसी के साथ चालू वित्तीय वर्ष में 2,605 साधारण दर्जे, 1,470 नॉन एसी स्लीपर, 323 एसएलआर, 32 हाई कैपेसिटी पार्सल वैन तथा 55 पैंटी कार के उत्पादन का लक्ष्य है। जबकि 2025-26 में 2,710 साधारण दर्जे, 1,910 नॉन एसी स्लीपर, 514 एसएलआर कोच, 200 हाई कैपेसिटी पार्सल वैन तथा 110 पैंटी कार के निर्माण की योजना है। मेमू ट्रेनो की लोकप्रियता और मांग को देखते हुए इस वर्ष 600 मेमू कोच का भी उत्पादन किया गया है। इनसे 60 मेमू ट्रेनें चलाई जा सकती हैं।

रेलवे भर्ती

रेलवे में खाली पदों और भर्ती को लेकर अनेक तरह की बातें की जाती हैं। लेकिन हकीकत यह है कि पिछले दस सालों में रेलवे में जितनी भर्तियां हुईं उतनी पहले कभी नहीं हुईं। इस दौरान 5,02,000 लोगों को रेलवे में नौकरी दी गई। जबकि 2004-2014 के दौरान केवल 4,11,000 लोगों को ही नौकरी मिली थी। रेलवे भर्ती परीक्षाओं के पैटर्न और मॉडल में बदलाव के कारण बीच में कुछ दिक्कतें सामने आई थीं। लेकिन उन्हें शीघ्र ही दूर कर वार्षिक कैलेंडर के अनुसार परीक्षाओं का आयोजन सुनिश्चित किया गया। इससे अब रेलवे भर्ती परीक्षाओं को लेकर कहीं कोई घटना या शिकायत सुनने में नहीं आती।

मालवहन के नए रिकॉर्ड

रेलवे को सारी आमदनी माल ढुलाई से होती है। यात्री परिवहन में होने वाले घाटे की पूर्ति इसी से की जाती है। यही वजह है कि पिछले दस सालों में माल ढुलाई पर विशेष फोकस किया गया। और इसी का नतीजा है कि आज सबसे ज्यादा माल ढुलाई हो रही है। 2004-14 में जहाँ रेलवे ने कुल मिलाकर 8,473 मिलियन मीट्रिक टन माल ढोया था। वहीं 2014-24 के दौरान 12,660 मिलियन मीट्रिक टन माल की ढुलाई की गई जो कि लगभग डेढ़ गुना ज्यादा है।■



भारतीय रेल
Indian Railways

पत्रिका की सदस्यता तथा पत्रिका न मिलने की शिकायत हेतु
संपर्क करें
011-47845089

सोमवार से शुक्रवार (सुबह 10 से 1 एवं दोपहर 2 से 5 बजे तक)
bmpr310rb@gmail.com, irbrhelp@gmail.com



महाकुम्भ

परंपरा और ज्योतिष

अजय सिंह
उप महाप्रबंधक एवं सचिव/महाप्रबंधक

कुम्भ : शब्द,अर्थ और पर्याय

ज्योतिष शास्त्र में 'कुम्भ' शब्द दो अर्थों में प्रयुक्त हुआ है- पहला तो ग्यारहवीं राशि को 'कुम्भ' नाम से जाना जाता है और दूसरा चंद्रमा को, सूर्य के साथ एक ही राशि में स्थित होने पर 'कुंभ' या 'घट' कहा गया है। 'सिद्धांत शिरोमणि' नामक ग्रंथ में भास्कराचार्य ने चंद्रमा को 'घट' रूप में संबोधित किया है -

तरणि किरण संगादेव पीयूषपिण्डो दिनकर दिशि
चन्द्रश्चन्द्रिकाभिश्चकास्ति।
तदितरदिशि बालाकुन्तलश्यामलश्री-घट इव निज
मूर्तिच्छाययेवातपस्थः॥

इसमें 'चंद्रमा' को 'अमृत पिंड' के रूप में अभिहित किया गया है, जब चंद्रमा रूपी अमृत पिंड के सामने की दिशा अर्थात् सूर्य से सातवें घर में स्थित होता है, तब वह ज्योतिष्मान होता हुआ किरणों से उद्भासित होता है, किंतु जब वह सूर्य के साथ स्थित हो जाता है तो ज्योति रहित काले घट के रूप में दृष्टिगत होता है। अमृतपिंड की यह घटवत् स्थिति ही बृहस्पति के शुभ प्रभावों से प्रभावित होकर 'कुंभ' पर्व का योग उपस्थित करती है। स्मृति गंथों में भी कहा गया है-

सूर्योन्दुगुरु संयोगस्तद्राशौ यत्र वत्सरे।
सुधाकुम्भप्लवे भूमौ कुम्भौ अतिनान्यथा॥

ज्योतिष के अन्तर्गत बारह राशियों में से ग्यारहवीं राशि को कुम्भ कहा जाता है। धनिष्ठा नक्षत्र का उत्तरार्द्ध और शतभिषा तथा पूर्व भाद्रपद के तीन चरण मिलाकर यह राशि बनती है। राशि चक्र के 300 अंश के बाद इसके 30 अंश आते हैं। यह स्थिर राशि और शनि का क्षेत्र कहा गया है। इसका मान 3 दण्ड 58 पल है।

प्राचीनकाल में तोलने के एक मान को भी कुम्भ कहा जाता था। यह दो द्रोण अथवा 64 सेर के बराबर होता था। कहीं-कहीं बीस द्रोण का कुम्भ भी बताया गया है।

वैसे कुम्भ सामान्यतया घट, भाण्ड, घड़ा या कलश का पर्याय माना जाता है। भारत के लोक-जीवन में प्रत्येक कार्य में कुम्भ-कलश की स्थापना होती है। प्रसंगवश यह भी उल्लेखनीय है कि महर्षि अगस्त्य को 'कुम्भज' और 'घटयोनि' कहा गया है। इससे कुम्भ का एक अर्थ कृत्रिम गर्भ भी माना जा सकता है। पौराणिक कथाओं में 'कलशोदधि' शब्द का प्रयोग हुआ है, जिसमें कलश में ही समुद्र की कल्पना की गयी है। 'मनुस्मृति' में जल से भरे हुए घड़े के लिए 'उद्कुम्भ' शब्द का प्रयोग किया गया है। सन्त

कबीरदास अपने पदों में मानव-शरीर को बहुधा कुम्भ की उपमा देते हैं। वे कहते हैं-

जल में कुम्भ कुम्भ में जल है बाहर भीतर पानी।
फूटा कुम्भ जल जलहि समाना यह तथ कह्यो ग्यानी॥

यह शरीर मिट्टी का घड़ा है, जिसके बाहर-भीतर पानी है। यह संसार क्षणभंगुर भी है। कबीर कहते हैं कि- 'यह संसार कागद की पुरिया, बूँद परै घुल जाना है।'

पूजन सम्बन्धी एक श्लोक में कहा गया है कि कलश के मुख में विष्णु का, कण्ठ में रुद्र का और मूल में ब्रह्मा का निवास है; जबकि उसके मध्य भाग में मातृकाएँ निवास करती हैं। उसकी कोख में (यानी उसके भीतर) तीनों देवों, सागरों, सातों द्वीपों, अंगों सहित चारों वेदों और पूरी पृथ्वी का वास है।

कलश्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्थिताः॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अक्त्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः॥
(कल्कि पुराण)

कुम्भ कालीन प्रार्थना के निम्नांकित मन्त्र में भी सब तीर्थों, सब देवों एवं समस्त भूतों का उल्लेख किया गया है।

देव-दानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः॥
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्य वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः॥

अर्थात- हे कुम्भ! देव-दानव के विवाद रूप में समुद्र के मथे जाने पर तुम्हारी उत्पत्ति हुई, जिसे साक्षात् भगवान् विष्णु ने धारण किया। उस तुम्हारे जल में समस्त तीर्थ, समस्त देवता, समस्त प्राणी, प्राण आदि स्थित रहते हैं। तुम साक्षात् शिव, विष्णु और ब्रह्मा हो। आदित्य, वसु, रुद्र, सपैतृक विश्वेदेव आदि समस्त कार्यों में फल प्रदान करने वाले देवता तुममें सदा स्थित रहते हैं। उपर्युक्त दोनों श्लोक कुम्भ के स्वरूप के उद्घाटन की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।

कुम्भ : कथा ,मान्यता और ग्रह योग

कुंभ पर्व की मान्यता के संदर्भ में तीन कथाएं उल्लेखनीय हैं - (1) महर्षि दुर्वासा की कथा (2) कद्रू-विनता की कथा, और (3) समुद्र-मंथन की कथा। पहली कथा इंद्र से सम्बन्धित है। दूसरी कथा के अनुसार महर्षि कश्यप की पत्नियाँ कद्रू और विनता के मध्य सूर्य के अश्वों को काले हैं या सफेद, इस विवाद को लेकर यह शर्त्त रखी गई कि जो हारेगी, वह दासी बनकर रहेगी। इसके परिणामस्वरूप विनता के हार जाने के कारण दासी बनकर रहना पड़ा। उस दासीत्व से तभी मुक्ति मिल सकती थी, जब नागलोक में छिपाए गए कुंभ को कश्यप मुनि की पत्नी कद्रू के पास लाया जाए। उस अमृत-कलश को लाने हेतु गरुड़ ने अपनी माँ को दासीत्व से मुक्त कराने के लिए कश्यप मुनि के पास तक पहुँचाने का पूर्ण पर्यत्न किया और सफल हुए।

तीसरी कथा देवासुर- संग्राम में चौदह रत्नों में अमृत-कलश निकलने पर धन्वंतरि द्वारा देवताओं को देने, विष्णु द्वारा मोहिनी रूप धारण करके देवताओं को अमृतपान कराने, राहु द्वारा अमृतपान करनले, इंद्र-पुत्र जयंत द्वारा अमृत कुंभ छीनकर भागने जैसी कथाओं से संबद्ध है। उसकी रक्षा का भार सूर्य, चंद्र, बृहस्पति और शनि को सौंपा गया था। जयंत द्वारा ले जाए जाते हुए उस अमृत-कुंभ को चार स्थलों रखने और उन-उन स्थलों पर अमृत की बूँदे गिरने के कारण कुंभ पर्व मनाए जाने की परंपरा प्रारंभ हुई। अमृत-कुंभ की उक्त कथाओं में यही तीसरी कथा सबसे प्रमुख मानी गई है।

अमृत-कुंभ की रक्षा में संलग्न चंद्रमा ने अमृत को गिरने से बचाया, सूर्य ने घड़े को टूटने से, बृहस्पति ने दैत्यों द्वारा छीनने से और शनि ने कहीं जयंत अकेले ही संपूर्ण अमृत पान न कर ले- इस तरह से उस कुंभ की रक्षा की। राक्षसों से कलश की रक्षा करने के लिए ही जयन्त को नासिक, उज्जैन, हरिद्वार और प्रयाग में चतुर्दिक भागकर जाना पड़ा। प्रयाग इन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ। जहाँ-जहाँ अमृत-कलश छलका वहीं-वहीं अमृत-तत्व की कामना करने वाले सुधी तत्त्वज्ञ एकत्र होने लगे और उसी धार्मिक उत्सव ने कालान्तर में मेले का रूप ग्रहण कर लिया। उक्त स्थानों पर कुम्भ सूर्य, चन्द्र और बृहस्पति की सिंह, कुम्भ और मेष राशियों की स्थिति के आधार पर निर्धारित होता है। यह मान्यता हजारों वर्षों से चली आ रही है। उस समय राहु-केतु विभाजित नहीं थे। मंगल और बुध को कनिष्ठ मानकर अलग ही रखा गया था। दैत्यों के पुरोहित होने के नाते शुक्र को भी अमृत की रक्षा का भार नहीं दिया गया।नव-ग्रहों की यह प्रतीक-कथा ही कुम्भ की कथा बन गयी। शुभ-अशुभ ग्रह अमृत और विष के प्रभाव के द्योतक हो गए। जिन्हें रक्षा का भार दिया गया उनमें भी दोनों प्रकार के ग्रह थे। शनि की दृष्ठि कठोर थी। सम्भवतः उसी ने अमृत-कलश को स्थिर नहीं रहने दिया। चन्द्रमा को सुधाकर भी कहा जाता है, मानो वही अमृत-कुम्भ हो। उल्लेखनीय है कि अमावस को ही प्रयाग में कुम्भपर्व का आरम्भ होता है। सोमवती होने से उसका महत्त्व बढ़ जाता है क्योंकि चन्द्रमा स्वयं सोम का पर्याय है। प्रतिपदा या प्रथमा को 'अमृतांश-काल' माना जाता है।

'स्कन्दपुराण' में कहा गया है कि गंगाद्वार (हरिद्वार), प्रयाग, धारानगरी (उज्जैन) और गोदावरी तट (नासिक) में अमृत-कुम्भ छलका था, इसलिए वहाँ कुम्भ का योग बनता है।

गक्त्गाद्वारे प्रयागे च धारा गोदावरी तटे।
कुम्भाख्येयस्तु योगोऽयं प्रोच्यते शक्त्करादिभिः॥
(स्कन्दपुराण)

इन्हीं ग्रहों के परस्पर संयोग होने पर कुंभ पर्व का योग भिन्न-भिन्न स्थलों पर हुआ करता है।

'ब्रह्म पुराण' में भी ऐसा उल्लेख प्राप्त होती है

पृथिव्यां यानि तीर्थानि पुर्यः सप्त याः पुनः।
येऽस्यां स्नातुं समायान्ति माघे मासि नरोत्तम॥

इस संदर्भ में कहा जाता है कि देवताओं के बारह दिन और मनुष्यों के बारह वर्ष के पश्चात् कुंभ-पर्व का आगमन होता है।

'पदम पुराण' में कहा गया है -

स्नाताश्च ये मकरभास्करोदये तीर्थे प्रयागे सुरसिन्धु संगमे।
तेषां गृहद्वारमलङ्करोति किं भृंगावलि कुञ्जरकर्मताडिता॥
यो राजसूयाद्धयमेधयज्ञतः स्नानात्फलं संप्रददाति चाधिकम्।
पापानि सर्वाणि विलोप्य लीलया नूनं प्रयागः स कथं न सेव्यते॥

गोस्वामी तुलसीदास ने भी माघ-स्नान के पवित्र माहात्म्य को 'रामचरितमानस' में उद्धृत करते हैं -

माघ मकर गत रवि जब होई।
तीरथ पतिहि आव सब कोई॥
देव दनुज किन्नर नर श्रेनी।
सादर मज्जहिं सकल त्रिवेनी॥

सूर्य जब मकर राशि में प्रवेश करते हैं तो माघ मास में तीर्थराज प्रयाग में संगम तट पर देवतागण भी स्नान करने के लिए आते हैं।

माघ मासे गमिष्यन्ति, गंगा-यमुना संगमे।
ब्रह्मा-विष्णु-महादेवा, रुद्रादित्य मरुद्गणाः॥

माघ के इस पवित्र महीने में स्नान के प्रमुख पाँच पर्व हैं- मकर संक्रांति, पौष पूर्णिमा, अमावस्या, वसंत पंचमी और माघी पूर्णिमा। मेष राशि में जब शनि, सिहं राशि में चंद्रमा और बृहस्पति हों और श्रवण नक्षत्र में सूर्य हो तो माघ की पूर्णिमा महामाघी कही जाती है। 'महामाघी' प्रयाग में बड़ी उत्तम मानी गई है। इसकी प्रसिद्धि संपूर्ण भूमंडल में है।

सम्राट् हर्षवर्द्धन : महादान महोत्सव

ह्वेनत्सांग के अनुसार सम्राट् हर्षवर्द्धन प्रत्येक पाँच वर्ष बाद प्रयाग में जिस दान-महोत्सव का आयोजन करते थे, वह कुम्भ या अर्द्धकुम्भ के अवसर पर ही होता रहा होगा। लोक-आस्था की एक दीर्घ परम्परा तो पहले से ही चली आ रही थी, सम्राट् हर्षवर्द्धन ने राजकीय आश्रय प्रदान करके इस परम्परा को सुदृढ़ किया। हर्ष एक दानशील सम्राट् थे। वे हर छठे वर्ष प्रयाग की पावन भूमि पर सर्वस्व दान महोत्सव का आयोजन करते थे। इस दान महोत्सव के दौरन 75 दिनों तक सम्राट हर्ष अपने कोष में संचित धन, सम्पत्ति, स्वर्ण आदि श्रमणों और दीन-हीनों को दान कर दिया करते थे। ह्वेनत्सांग ने इस दान को चीनी भाषा में 'वू-चे - ताई-हुइ' कहता है। इस महोत्सव को 'महामोक्ष परिषद' कहा जाता था। कन्नौज के धर्म परिषद के बाद 643 ई. में ह्वेनत्सांग की उपस्थिति में हर्ष के छठे दान उत्सव का आयोजन किया गया था। ह्वेनत्सांग सम्राट् शीलादित्य (हर्ष) द्वारा माघ मास में आयोजित छठे दान महोत्सव का प्रत्यक्ष वर्णन करता है।

द्वादश वर्षीय स्नानपर्व : ज्योतिषीय विश्लेषण

कुम्भ का पवित्र स्नान-पर्व सूर्य, चन्द्रमा और बृहस्पति की विशेष राशि-चक्रीय स्थितियों पर आधारित होता है। कुम्भ-स्नान का सबसे पावन मुहूर्त वह क्षण होता है, जब ये राशि-चक्रीय स्थितियाँ परिपूर्ण होती हैं। उस मुहूर्त-विशेष में नदी के जल में स्नान करना सर्वाधिक पुण्यदायी माना जाता है। खगोलीय गणनाओं के अनुसार यह मेला मकर संक्रान्ति के दिन प्रारम्भ होता है। मकर संक्रान्ति को होने वाले इस योग को 'कुम्भ-स्नान योग' कहते हैं। कुम्भ मेला मकर संक्रान्ति या पौष पूर्णिमा से शुरू होकर माघ पूर्णिमा तक यानी एक महीने की अवधि तक होता है। इसका समापन शिवरात्रि को होता है। चार मुख्य तीर्थ-स्थानों प्रयाग, नासिक, उज्जैन और हरिद्वार में क्रमशः प्रत्येक छह वर्ष पर अर्द्धकुम्भ, प्रत्येक बारह वर्ष पर पूर्णकुम्भ और प्रत्येक 144 वर्ष पर महाकुम्भ का ग्रहयोग बनता है।

कुम्भ पर्व के द्वादशवर्षीय आयोजन को लेकर कई बार शास्त्रज्ञ पंडितों में मतभेद भी हुए हैं। एक बार यह प्रश्न उठ खड़ा हुआ था कि प्रयाग में कुम्भ वर्ष 1965 ई. में हो या वर्ष 1966 ई. में। उस विवाद में हस्तक्षेप करते हुए स्वामी करपात्रीजी महाराज ने कहा था कि बारहवें वर्ष में कुम्भ पर्व होता है, यह प्रमाणिक वचन से सिद्ध है और सदाचार-सम्मत भी है -

देवानां द्वादशाहोभिर्मर्त्यैर्द्वादशवत्सरैः।
जायन्ते कुम्भपर्वाणि तथा द्वादशसंख्यया॥

दूसरी ओर प्रथम पक्ष का कहना है कि प्रति चौरासीवें वर्ष में बृहस्पति का एक राशि आगे बढ़ना गणितसिद्ध है। अतः प्रति सात कुम्भों में 6 कुम्भ या 12 वर्ष पर और सातवाँ कुम्भ 11 वर्ष पर आता जाएगा। इसी (विक्रम) शताब्दी के भीतर हरिद्वार का कुम्भ संवत् 1901 के बाद संवत् 1912 में ग्यारहवें वर्ष में हुआ है और दूसरा सम्वत् 1984 के बाद सम्वत् 1995 में ग्यारहवें वर्ष हुआ था। सन् 1954 के कुम्भपर्व-निर्णय के लिए साधु-पंडितों की सभा में यह निर्णय किया गया कि कुम्भ प्रति बारहवें वर्ष मनाया जाता है, किन्तु गुरु के स्थितिवश 11वें वर्ष में भी मनाया जा सकता है। इस सम्बन्ध में एक और प्राचीन श्लोक प्राप्त हुआ है -

यदा स्यातां नक्रे दिनकरनिशेषौ खगरवौ, सुमन्त्री देवानां
रविसुतयुतोऽमी खलु यदा।
श्रुतिर्विश्वं माघे शमयति च विश्वाघमखिलं त्रिवेणी
कुम्भोऽस्मिन् ननु नरकपातश्च न भवेत्।

इसके अनुसार प्रयाग-कुम्भपर्व के पूर्ण योग के लिए अमावश्या, मेष अथवा वृष के गुरु और श्रवण अथवा धनिष्ठा नक्षत्र के पूर्वार्द्धजन्य मकरस्थ चन्द्र-भास्कर का होना अत्यावश्यक है। अतः

कुम्भपर्व सम्वत् 2021 (सन् 1965) में ही मनाना चाहिए। इसी योग में सम्वत् 1926, 1938, 1950, 1962, 1974, 1985, 1997 और सम्वत् 2010में 11वें वर्ष में कुम्भ पड़ा था।

मकर संक्रान्ति को भारत कालगणना के अनुसार सूर्य अपना अक्षांश बदलकर उत्तरायण में चन्द्रमा के साथ मकर राशि में प्रवेश करते हैं और माघ अमावस्या के दिन सूर्य और चन्द्र पृथ्वी से एक ही अंश पर मकर राशि पर रहते हैं। हर वर्ष यह योग बनता है, लेकिन जब सूर्य और चन्द्रमा के मकर राशि में रहते हुए, बृहस्पति मेष राशि में ही रहें, तो ऐसा योग प्राय: हर बारह वर्षों में बनता है; और इसी आधार पर प्रत्येक बारह वर्ष पर माघ मास में संगम क्षेत्र में दुनिया के सबसे बड़े मेले-कुम्भ पर्व का आयोजन किया जाता है।

लेकिन यह सम्भव नहीं है कि ठीक बारह वर्षों के अन्तराल पर बृहस्पति माघ मास में मेष राशि मे ही रहें, क्योंकि बृहस्पति को सूर्य की परिक्रमा पूरी करने में पूरे बारह वर्ष नहीं, बल्कि 11 वर्ष 315 दिन लगते हैं। अत: बृहस्पति मेष राशि में हर बारह वर्ष में नहीं बल्कि 11 वर्ष 315 दिन में पहुँचते हैं। बृहस्पति को सूर्य का पूरा चक्कर करने में 11.78 वर्ष लगता है, जिसके कारण 12 सौर्य वर्ष चक्र में 50 दिनों का क्षय हो जाता है।जो को छठे सातवें कुम्भ में लगभग एक वर्ष के आसपास हो जाता है। यहाँ पुन: उल्लेख करना है कि बृहस्पति एक नक्षत्रीय सीमा से दूसरे में जाने में 84 वर्ष लेता है। बृहस्पति के पश्चमगामी गति से प्रभावित होने और सूर्य कि परिक्रमा के इस अंतराल के कारण ऐसे स्थिति उत्पन्न हुई है । यही कारण है कि कुम्भ की तिथियों पर अनेक बार विवाद हुआ था। विगत कुम्भ 1954 ई. में हुआ था। 12 वर्ष बाद 1966 ई. में बृहस्पति वृष राशि में थे, लेकिन 1965 ई. बृहस्पति मेष राशि में थे। यही वजह है कि शंकराचार्यों ने वर्ष 1966 ई. में और साधु-समाज तथा अखाड़ों ने 1965 ई. में कुम्भ मनाया। वर्ष 1977 में कुम्भ निर्विवाद था, क्योंकि तब बृहस्पति मेष राशि में थे, जबकि वर्ष 1978 में बृहस्पति मिथुन राशि में जा रहे थे।

वर्ष 1989 का पूर्ण कुम्भ भी निर्विवाद था। ज्योतिष-शास्त्रियों के अनुसार उस कुम्भ मेले में जैसा शुभ नक्षत्र योग बना था, वैसा अवसर 150 वर्षों बाद ही उपस्थित होता है। उस बार कुम्भ पर्व के मेले का प्रारम्भ पौष पूर्णिमा से न होकर मकर संक्रान्ति से हुआ था, जबकि पूर्व के कुम्भों और अर्द्धकुम्भों में पौष पूर्णिमा मकर संक्रान्ति (14 जनवरी) से पहले पड़ी थी। वर्ष 1966 में पौष पूर्णिमा 7 जनवरी और वर्ष 1977 में 5 जनवरी को थी, लेकिन वर्ष 1989 में पौष पूर्णिमा 21 जनवरी थी।

विशेष : कुम्भ राशि पर बृहस्पति के होने से केवल हरिद्वार में कुम्भ का आयोजन होता है। अन्यत्र मेष, सिंह आदि राशियों का विचार किया जाता है और ग्रह भी बदल जाते हैं। विष्णुयोग में गंगाद्वार (हरिद्वार) के कुम्भ का निरूपण स्कन्दपुराण में करते हुए कहा गया है कि मेष में सूर्य और कुम्भ में बृहस्पति हो तो कुम्भ नाम का उत्तम योग वहीं बनता है। इसके आधार पर कुछ विद्वान यह मानते हैं कि कुम्भ परम्परा हरिद्वार से ही आरम्भ हुई होगी ।

कुम्भ का विशिस्ठ ग्रह योग -

प्रयाग : प्रयाग के सम्बन्ध में स्कन्दपुराण के अनुसार -

मकरे च दिनानाथे वृष राशि स्थिते गुरौ।
प्रयागे कुम्भ योगौ वै माघ मासे विधुक्षये॥

अर्थात- गुरु मेष राशि तथा सूर्य व चन्द्र मकर राशि में हो तो, प्रयाग में कुम्भ पर्व का योग माघ मास की अमावस्या (कृष्ण) को होता है।

एक अन्य पुराण में -

मेषराशि गते जीवे मकरे चन्द्रभास्करौ।
अमावस्या तदा योग: कुम्भाख्यस्तीर्थनायके॥

अर्थात -जब बृहस्पति मेष राशि पर स्थित हो तथा सूर्य एवं चन्द्र मकर राशि पर स्थित हों; और माघ अमावस्या का दिन हो, तब इस विशिष्ट ग्रहयोग में प्रयाग के त्रिवेणी संगम पर कुम्भ स्नान पर्व का ग्रहयोग बनता है।

हरिद्वार : हरिद्वार में कुंभ राशि का बृहस्पति हो और मेष राशि में सूर्य संक्रांति हो तो यह कुंभ का महापर्व हुआ करता है। स्कन्दपुराण के अनुसार हरिद्वार के संबंध में कहा गया है -

पद्मिनी नायके मेषे कुम्भराशि गते गुरौ:।
गंगा द्वारे भवेद्योग: कुम्भनामा तथोत्तम: ॥

अर्थात- जब सूर्य मेष राशि पर तथा बृहस्पति कुम्भ राशि पर हो, तब गंगाद्वार (हरिद्वार) में कुम्भ नाम का उत्तम योग होता है।

उज्जैन : बृहस्पति सिंह राशि में, सूर्य मेष राशि में और चंद्र तुला राशि में।

मेषराशिंगते सूर्ये सिंह राश्यां बृहस्पतो।
अवन्तिकायां भवेत्कुम्भ: सदामुक्ति प्रदायक:॥

अर्थात-सिंह राशि पर गुरु व मेष राशि पर सूर्य के आने पर उज्जैन तीर्थ (अवन्तिका) में क्षिप्रा तट पर कुम्भ का योग सदैव मुक्ति प्रदान करने वाला है।

मेषराशिं गते सूर्ये सिंहराशौ बृहस्पतौ।
उज्जयिन्यां भवेत् कुम्भ: सदा मुक्तिप्रदायक:॥

अर्थात- जब सूर्य मेष राशि पर हो और बृहस्पति सिंह राशि पर हो, तब इस विशिष्ट ग्रहयोग में उज्जैन में क्षिप्रा नदी के तट पर कुम्भ स्नान पर्व का योग बनता है।

अन्य ज्योतिष विकल्प के अनुसार -

घटे सुरि : शशी सूर्य कुहवां दामोदरे यदा ।
धराया च तदा कुंभो जायते खलु मुक्तिद: ।।

जब बृहस्पति तुला राशि में चंद्रमा तथा सूर्य कार्तिक अमावस्या के दिन साथ साथ रहते हैं तब भी मोक्षदायक कुम्भ उज्जयनी में लगता है ।

नासिक : नासिक के संदर्भ में पुराण के अनुसार –

सिंह राशि गते सूर्ये सिंहराशौ बृहस्पतौ।
गोदावर्या भवेत्कुम्भो जायाते खलु मुक्तिद :॥

अर्थात– सूर्य और बृहस्पति के सिंह राशि पर प्रवेश होने पर नासिक में गोदावरी के तट पर कुम्भ स्नान पर्व का योग बनता है।

अन्य ज्योतिष विकल्प के अनुसार –

कर्के गुरुस्तथा भानु चन्द्रश्चचन्दर्क्षगस्तथा।
गोदावर्या तदा कुम्भो जायतेऽवनि मंडले॥

अर्थात– कर्क राशि पर गुरु, सूर्य व चन्द्रमा हो तो गोदावरी के तट नासिक में कुम्भ स्नान फलदायी होता है।

उक्त चार तीर्थस्थलों में कुंभपर्व मनाए जाने की मूल प्रेरणा अथर्ववेद की 'चतुरः कुम्भाश्चतुर्णा ददामि'– (4/37/7) इस प्रकार के उल्लेख से मिलती है। इसके अतिरिक्त 'कुंभ' का उल्लेख ऋग्वेद में भी प्राप्त होता है। उल्लेखनीय है कि उज्जैन और नासिक में भी प्रयाग की तरह अन्य ज्योतिष विकल्प उपलब्ध हैं।

दक्षिण भारत में कुम्भ की परम्परा

दक्षिण भारत में चोल साम्राज्य कि राजधानी तंजौर के पास कावेरी नदी के डेल्टा में स्थित कुम्भकोणम में भी मनाया जाता है। "कुम्भकोणम में प्रत्येक वर्ष साधारण मखम् उत्सव मनाया जाता है लेकिन बारह वर्षों में एक बार महामखम उत्सव मनाया जाता है। उस समय पूरे भारतवर्ष से लाखों लोग यहाँ आकर महामखम



तालाब में स्नान करते हैं। इसी महामखम् उत्सव को दक्षिण भारत का कुम्भ मेला कहते हैं।''

'कुम्भकोणम' कावेरी नदी के डेल्टा में स्थित है। यहाँ कई वैष्णव एवं शैव मन्दिर हैं और एक दुर्लभ ब्रह्मा मन्दिर भी है। यहाँ कुम्भ की एक जीवन्त-परम्परा चली आ रही है। 'कुम्भकोणम' का संस्कृत नाम 'कुम्भघोणम' है। कहते हैं ब्रह्मा जी ने एक अमृत से भर एक कुम्भ रखा था। उस कुम्भ की नासिका (घोण) अर्थात् मुख के समीप एक छिद्र चू कर अमृत बह निकला और उससे वहाँ की पाँच कोस तक की भूमि भीग गयी। इसी से उस स्थान का नाम कुम्भघोण (कुम्भकोण) पड़ गया।

तत्रापि सर्वतीर्थानि तीर्थराजाज्ञा बिना।
कामदाने मोक्षदाने समर्थानि भवन्ति ना॥ ॥श्री विष्णु पुराण॥



आपको यह **अंक कैसा लगा**
हमें जरूर बताएं

ई–मेल : editorbhartiyarailrb@gmail.com

पत्र लिखें ▶ **संपादक,** भारतीय रेल, कमरा नं. 411, रेल भवन, नई दिल्ली–110 001

अपना ज्ञान टटोलें

1 अभी हाल ही में माननीय राष्ट्रपति ने किस राज्य में तीन रेल लाइनों की आधारशिला रखी है ?

(क) ओडिशा | (ख) झारखंड | (ग) बिहार | (घ) पश्चिम बंगाल

2 महाकुंभ-2025 में भारतीय रेल द्वारा कितनी ट्रेनों के परिचालन करने की योजना है ?

(क) 10,000 | (ख) 11,000 | (ग) 12,000 | (घ) 13,000

3 अब तक कितनी वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनें सेवा में हैं ?

(क) 150 | (ख) 145 | (ग) 136 | (घ) 140

4 सबसे लंबी दूरी की वंदे भारत ट्रेन सेवा कहाँ से कहाँ तक चल रही है ?

(क) मेरठ-लखनऊ | (ख) दिल्ली-बनारस | (ग) मदुरै-बेंगलुरु | (घ) चेन्नई-नागरकोइल

5 भारतीय रेल ने कितने सामान्य कोच बनाने का लक्ष्य रखा है ?

(क) 12,000 | (ख) 11,000 | (ग) 13,000 | (घ) 10,000

6 भारतीय रेल का सबसे बड़ा सोलर प्लांट किस क्षेत्रीय रेलवे में स्थापित है ?

(क) पश्चिम रेलवे | (ख) दक्षिण रेलवे | (ग) दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे | (घ) उत्तर रेलवे

7 भारत का सबसे बड़ा क्षेत्रीय रेलवे कौन-सा है ?

(क) मध्य रेल | (ख) पश्चिम रेलवे | (ग) पूर्व रेलवे | (घ) उत्तर रेलवे

8 रेल बजट का केंद्रीय बजट में विलय किस वर्ष से हुआ ?

(क) 2017 | (ख) 2019 | (ग) 2018 | (घ) 2016

9 भारत को बांग्लादेश से जोड़ने वाली पहली रेल सेवा का क्या नाम है ?

(क) समझौता एक्सप्रेस | (ख) मैत्री एक्सप्रेस | (ग) बंधन एक्सप्रेस | (घ) थार लिंक एक्सप्रेस

10 हाल ही में किस क्षेत्रीय रेलवे ने 'नमस्ते हेल्थ' ऐप लॉन्च किया है ?

(क) पूर्व रेलवे | (ख) दक्षिण रेलवे | (ग) उत्तर रेलवे | (घ) पश्चिम रेलवे

1. (क) 2. (ख) 3. (ग) 4. (घ) 5. (क) 6. (ग) 7. (ख) 8. (क) 9. (घ) 10. (ख)

सही उत्तर

प्रिय विज्ञापनदाता

रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एकमात्र मासिक हिंदी पत्रिका

भारतीय रेल

में अपने विज्ञापन देकर लाखों उपभोक्ताओं तक अपने उत्पादों की पहुँच बनाएं

विज्ञापन दरें

(विज्ञापन चार कलर में)

नीचे दी गई दरों के साथ 5 प्रतिशत की जीएसटी, आइजीएसटी प्राप्य होगी

विवरण	विशेष दर (वार्षिक अंक) (₹)	सामान्य अंक (मासिक दरें)	
		सामान्य दरें (₹)	अनुबंधित दरें (₹)
बैक कवर	13,300	11,400	10,450
सेकेण्ड कवर	12,350	10,450	9,500
थर्ड कवर	11,400	9,500	8,550
पूरा पृष्ठ (विशेष स्थिति, जैसे टेक्स्ट के बाद में)	9,500	8,550	7,600
पूरा पृष्ठ	8,550	7,600	6,650
आधा पृष्ठ	6,650	5,130	4,180
सेंटर स्प्रेड	17,000	15,000	13,300
सेंटर स्प्रेड (दो पेज इकट्ठे) (स्पेशल पोजीशन)	18,500	16,500	14,700

* तीन महीने या ज्यादा समय के लिए लगातार अथवा बारी-बारी देने पर अनुबंधित दरें लागू।

तकनीकी विवरण

पत्रिका का आकार

28 X 20.5 सेमी

छपाई क्षेत्र

23 X 16.5 सेमी

भुगतान का माध्यम

'व्यापार प्रबंधक, भारतीय रेल, नई दिल्ली' के पक्ष में डिमाण्ड ड्राफ्ट अथवा नकद राशि रूम नं. 310, रेल भवन, नई दिल्ली-110 001 में जमा की जा सकती है

विज्ञापन सामग्री

ई-मेल, आर्टपुल, सीडी

पत्रिका का प्रसार

समग्र देश में

संपर्क करें:

व्यापार प्रबंधक

310, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001,

टेलीफोन : 011- 47845378, 23382531

रेल, पर्यटन व साहित्य को एक साथ संजोए
रेल मंत्रालय द्वारा प्रकाशित एकमात्र हिंदी मासिक पत्रिका



भारतीय रेल

की सदस्यता अब ऑनलाइन भी उपलब्ध

अब ई-पत्रिका भी उपलब्ध

www.irctctourism.com/IRBRmag/#/home/hn

क्यू आर कोड स्कैन करें

सदस्यता शुल्क

मद		ऑफलाइन सदस्यता शुल्क (₹)	ऑनलाइन सदस्यता शुल्क (₹)	ई-मैग्ज़ीन सदस्यता शुल्क (₹)
एक प्रति (मासिक अंक)		20	-	10
एक प्रति (विशेषांक)		70	-	40
वार्षिक सदस्यता (सर्व साधारण)	एक वर्ष	250	263	130
	दो वर्ष	460	483	230
	तीन वर्ष	675	709	340
वार्षिक सदस्यता (रेलकर्मी)	एक वर्ष	200	210	100
	दो वर्ष	370	389	190
	तीन वर्ष	540	567	270
वार्षिक सदस्यता (विदेशी) सी-मेल द्वारा		1,250	1,313	---
वार्षिक सदस्यता (विदेशी) एयर-मेल द्वारा		2,500	2,625	---

(सदस्यता शुल्क में वार्षिक विशेषांक भी शामिल है।)

सदस्यता फॉर्म

नाम .....

पता .....

..... पिन कोड .....

मोबाइल ..... ई-मेल .....

पहचान पत्र संख्या (यदि रेल कर्मचारी है तो): ..... वैधता की तारीख .....

ऑफलाइन भुगतान का माध्यम

I) एम.ओ./आई.पी.ओ/डी.डी. व्यापार प्रबंधक के पक्ष में कमरा नं0 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001
II) नगद जमा कराने हेतू : कमरा नं0 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: व्यापार प्रबंधक, कमरा नं. 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110 001,
टेलीफोन: 011-47845089, 45089 (रेल) **bmpr310rb@gmail.com**

Spend less time on lengthy and challenging relay testing

Test your Relays 70% faster than usual with Megger SMRT1



Railway specific applications:

- Panto flashover
- Wrong phase coupling
- Automated distance relay testing with parallelogram characteristics
- Regenerative braking current visualization and stability of distance protection
- Graphical view of RX plan with automated testing of all traction system protection application

Scan the QR code to inquire
or call us at +91 91671 90558
or email us at india.marketing@megger.com

Megger

IRIS Certification
AAR M-1003
Daulat Ram ENGINEERING

PRIME MOVERS FOR RAIL, MINING & URBAN MOBILITY

- Traction Motors / Alternators
- Air Conditioners
- Cooling Fans / Blowers
- Dynamic Brake Resistors
- Pantographs
- E- Buses
- Auxiliary Generators



10/2, NH-12, Simrai, Post Obedullahganj, Distt. Raisen, Near Bhopal, 464993, India
+91 7480 350001 to 350030 +91 8889983336 info@daulatram.org www.daulatram.com

FLUID CONTROLS®

ENGINEERING CONNECTIONS EVERYDAY



HIGH PERFORMANCE PRODUCTS. ON TIME. EVERY TIME.

Fluid Controls Private Limited has 50 years of experience in Engineering Connections for Rail & Metro brake piping assemblies. Certified for the International Railway Industry Standard (IRIS-ISO/TS 22163:2017), and ISO/IEC 17025:2017 for our laboratory, Fluid Controls offers comprehensive solutions – from design, engineering, testing, and on-site installation services to the supply of high-performance connectors, isolating cocks, cleats and tube & hose assemblies.

- 50 YEARS OF HERITAGE
- IRIS & NABL CERTIFIED
- IN-HOUSE R&D
- OVER 30 MILLION CONNECTORS INSTALLED
- APPROVED BY MAJOR ROLLING STOCK MANUFACTURERS



+91-22-68238000 | railways@fluidcontrols.com | fluidcontrols.com

पंजीयन संख्या : दिल्ली पोस्टल नं. डी.एल. (एन.डी.)-11/6031/2024-25-2026
आर.एन.आई रजिस्टर्ड नं. 14427/1960
ISSN 2457-0001
दिनांक 08 को प्रकाशित तथा दिनांक 10-11 को प्रेषित

Across Borders, Beyond Limits
Our CNC Wheel Lathes, a Symbol of Railway Excellence Worldwide


CNC Portal Wheel Lathe


CNC Underfloor Wheel Lathe


CNC Vertical Turning & Boring Lathe

Malaysia Sri Lanka Turkey Gabon India
France Thailand Ghana Senegal South Africa

hyt

HYT ENGINEERING COMPANY PVT. LTD.

Sales Office: 17-18, Ground Floor, Hans Bhawan, Bahadur Shah Zafar Marg, I.T.O., New Delhi - 110 002, India. Phone: + 91 11 4320 2200/01

Work: 29/10, 29/10/1, 29/10/2, D-II Block, MIDC, Chinchwad, Pune - 411 019, India. Phone: + 91 20 6634 3900

www.hytengineering.com I info@hytengineering.com

मुद्रक व प्रकाशक : **ललित कुमार धनकड़** द्वारा रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) के लिए मैसर्स विबा प्रेस प्रा. लि., सी-66/3, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-2, नई दिल्ली-110020 में मुद्रित व 310, रेल भवन, रायसीना रोड, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। संपादक : **योगेश अवस्थी**